✤ यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ✤ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ✤ श्रीगणेशाय नमः ✤ लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः ✤ गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ✤
✤ अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ✤ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ✤ मकरन्दानुसारि ✤ सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् ✤ राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ✤

✤ तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् ✤ ✤ विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये ✤ ✤ अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यत्र नृणां यदिष्टम् ✤
✤ योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् ✤ ✤ गिरोनिकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विबृद्धिं लभतां सदेदम् ✤ ✤ ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु ✤

✿ श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ✿



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्

✿ शकाब्दः १९३६-३७ ✿



संवत् २०७१-७२

जगल्लग्नम् २।५

ल.बृ. १ · १२ · बु. १० · ११ सू.के. · ९ शु. · २ · ८ · ३ · ५ श.रा. · ७ · ४ चं.मं. · ६

विक्रमसंवत्	२०७१-७२
लक्ष्मणसंवत्	९०५-९०६
कलिसंवत्सरः	५११६

राजा-शुक्रः मन्त्री-चन्द्रः
वर्षा १५ धान्यम् १

सन् १४२२ साल

कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्

वर्षलग्नम् ८।१०

६ · चं.सू.४ · ७ वृ. · ५ के. · ३ बु. · ८ · २ शु. · ९ · ११ श.रा. · ल. १ · १० मं. · १२

शालिवाहनशकाब्दः	१९३६-३७
भारतीयस्वतन्त्राब्दः	६७-६८
खृष्टाब्दः	२०१४-१५

✤ प्रवर्त्तकः- डॉ. रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः ✤ संरक्षकः- डॉ. देवनारायण झा, कुलपतिः ✤ निदेशकः- डॉ. चित्रधर झा
प्रधानसम्पादकः- पं. श्रीरामचन्द्र झा ✤ गणितकर्त्ता सम्पादकश्चः- पं. श्रीभारतेन्दुनाथ ठाकुरः, पं. श्रीराकेश कुमार झा

✤ प्राप्तिस्थानम्- बालाजी ऑफसेट प्रेस, बड़ा बाजार, दरभंगा (बिहार) । मो० : 9386825701, 9934655300, 06272-230535 ✤ सूचना- ११३७-३८ शकाब्दस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्गं ११३७ शकाब्दस्य ज्येष्ठमासे प्रकाशमेष्यति ✤ मूल्यम् ₹ ४०.०० रूप्यकाणि ✤ विदेशे मूल्यम् $ 10 डॉलर ✤ मुद्रकः- बालाजी ऑफसेट प्रेस, बड़ा बाजार, दरभंगा (बिहार)

आनन्दादियोगचक्रम्

योगनाम	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	फलम्
आनन्दः	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	शत.	सिद्धिः
कालदण्डः	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	मृत्युः
धूम्रः	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	दुखम्
धाता	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	ध.	रे.	शुभः
सौम्यः	मृ.	आश्ले	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	सुखम्
ध्वांक्षः	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	हानिः
केतुः	पुन	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	कृ.	दुःखम्
श्रीवत्सः	पु.	उफ	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	सम्पत्तिः
वज्रः	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा	श.	अ.	मृ.	हानिः
मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	नाशः
क्षत्रम्	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	कृ.	पुन.	सम्मानः
मित्रम्	उफ	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	पुष्टिः
मानसम्	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	सुखम्
पद्मः	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	लाभः
लुम्बः	स्वा.	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ	हानिः
उत्पातः	[illegible]	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	नाशः
मृत्युः	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	मृत्युः
काणः	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेशः
सिद्धिः	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	सिद्धिः
शुभः	पूषा	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	शुभः
अमृतम्	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	सम्मानं
मुशलम्	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	लाभ
गदः	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	हानिः
मातंगः	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	वृद्धिः
राक्षसः	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	कष्टम्
चरः	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	सिद्धिः
सुस्थिरः	उभा	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	शुभः
प्रवर्द्धमानः	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	ध.	सुखम्

पञ्चाङ्ग देखेने की तिथि

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट, उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशः योग एवं करण के दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एवं घंटामिनटात्मक समय, उसके आगे क्रमशः सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रिकालिक) स्पष्टराश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घण्टामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रीय, सौर (गते) एवं अंग्रेजी तिथियाँ है। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त एवं पर्वादि दिए गए है। यथा- श्रावणकृष्ण १ रवि को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मान २३।५६ (दिन घंटा २ मिनट ४८) तक, उत्तराषाढ का दण्डपल ३०।४८ (सायं घंटा ५ मिनट ३३) तक आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा- श्रावणकृष्णप्रतिपदा रवि को मिश्रमानकालिक स्पष्टमंगल राश्यादि ५।२९।३१।४५ तथा स्पष्ट बुधराश्यादि २।९।५७।४२ आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा-श्रावणकृष्ण द्वितीया सोम एवं तृतीया मंगल को स्पष्ट मंगल का अन्तर ३०।१९ कलादि दैनिक गति मंगल की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक लग्नों के मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये है। अर्थात् १३, १४ आदि घण्टे से दिन के १, २ आदि घण्टे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा-श्रावणकृष्णप्रतिपदा रवि को रात्रि २३।४७ बजे से १।२३ तक मेष, १।२४ बजे से ३।१९ तक वृष, ३।२० से ५।३२ तक मिथुन, ५।३३ से ७।५० दिन तक कर्क, ७।५१ से १०।०६ तक सिंह, १०।०७ से १२।२१ दिन तक कन्या, १२।२२ बजे दिन से १४।३८ तक तुला, १४।३९ से १६।५५ तक वृश्चिक, १६।५६ दिन से १९।०० सायं तक धनु, १९।०१ से २०।४६ रात तक मकर, २०।४७ से २२।१७ रात्रि तक कुम्भ एवं २२।१८ से २३।४६ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिये। पाक्षिक विषयों के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषय 'विविधविषयाः' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिए प्रत्येक पक्ष में पञ्चाङ्ग के ऊपरी भाग दाईं ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं ताकि सामान्य जानकारी रखनेवालों को भी सुविधा हो। यात्रादिमुहूर्त्त अर्द्धप्रहररहित नहीं है। अतः अर्द्धप्रहर एवं आनन्दादियोग का विचार कर लेना चाहिए। शमिति।

मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रहस्पष्टीकरण- यथा- श्रावणकृष्ण ०३ मंगल को ३०।२३ दण्डादि पर स्पष्ट मंगल बनाना है तो मिश्रमानवारादि ३।४६।५३ एवं इष्टकालवारादि ३।३०।२३ का अन्तर १६।३० मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (६।०।३२।२३) - (६।०।२।४) = ३०।१९ मंगल की गति कलादि। अतः (१६।३०) X (३०।१९) = ८।२० कलादि फल। अब (६।०।३२।२३)-(०।०।८।२०) = ६।०।२४।३ इष्टकालिक मंगल। इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहिये।

समर्थका विद्वांसः

पं. श्री पारसनाथ मिश्रः, वेद – विभागाध्यक्षः
पं. श्री मीना कुमारी, साहित्य – विभागाध्यक्षः
पं. श्री शशिकान्त झा, दर्शन – विभागाध्यक्षः
पं. श्री चित्रधर झा, ज्यौतिष – विभागाध्यक्षः
पं. श्री विद्याधर मिश्रः, व्याकरण – विभागाध्यक्षः
पं. श्री दिलीप कुमार झा, धर्मशास्त्र – विभागाध्यक्षः

पं. श्री कृपाकान्त ठाकुर
पं. श्री कालीकान्त मिश्र
पं. श्री हृषीकेश झा
पं. श्री श्यामनन्दन मिश्र
पं. श्री उपेन्द्र झा
पं. श्री महाकान्त पाठक
पं. श्री किशोरनाथ झा
पं. श्री उमारमण झा
पं. श्री चन्द्रकिशोर झा
पं. श्री अच्युतानन्द झा
पं. श्री हरिहर झा
पं. श्री गणेशकान्त झा
पं. श्री त्रिलोकनाथ झा
पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र
पं. श्री उमानन्द मिश्र
पं. श्री शचीन्द्रनाथ मिश्र

पं. श्री श्यामानन्द झा
पं. श्री कृष्णानन्द झा
पं. श्री सुरेश्वर झा
पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा
पं. श्री शिवकान्त झा
पं. श्री रवीन्द्रना. मिश्र
पं. श्री इन्द्रमणि दास
पं. श्री भगीरथ मिश्र
पं. श्री रामजी ठाकुर
पं. श्री सुप्रसन्न मिश्र
पं. श्री राधाकान्त ठाकुर
पं. श्री कालिकादत्त झा
पं. श्री सच्चिदानन्द मिश्र
पं. श्री काशीनाथ मिश्र
पं. श्री श्रीपति त्रिपाठी
पं. श्री चण्डेश्वर झा

पं. श्री कीर्त्यानन्द झा
पं. श्री शशिनाथ झा
पं. श्री गोविन्द चौधरी
पं. श्री श्रुतिधर झा
पं. श्री बौआनन्द झा
पं. श्री शुकदेव पाठक
पं. श्री उद्दिष्ट ना. झा
पं. श्री कमलेश झा
पं. श्री विकाऊ झा
पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री शिवाकान्त झा
पं. श्री वाचस्पति त्रिपाठी
पं. श्री दामोदर झा
पं. श्री सर्वनारायण झा
पं. श्री शोभाकान्त झा

पं. श्री महेश झा
पं. श्री हेमनारायण चतुर्वेदी
पं. श्री सत्यनारायण झा
पं. श्री ताराकान्त झा
पं. श्री विन्ध्याचल ठाकुर
पं. श्री शोभाकान्त मिश्र
पं. श्री विद्यानाथ मिश्र
पं. श्री रामगुलाम मिश्र
पं. श्री वीरचन्द्र राय
पं. श्री अमरनाथ झा
पं. श्री चन्द्रमोहन झा
पं. श्री धनेश्वर झा
पं. श्री शिवकुमार शर्मा
पं. श्री रामजीवन मिश्र
पं. श्री राजेन्द्र प्र. दूबे
पं. श्री रामनारायण झा
पं. श्री स्वतन्त्रेश्वर झा
पं. श्री हरिनारायण झा
पं. श्री सिंहेश्वर झा
पं. श्री धीरेन्द्र झा
पं. श्री देवेन्द्र झा
पं. श्री षडानन मिश्र
पं. श्री सच्चिदानन्द झा
पं. श्री रामनिहोरा राय
पं. श्री गुणानन्द झा
पं. श्री ललन झा
पं. श्री फूलेन्द्र झा
पं. श्री शिवलोचन झा
पं. श्री ब्रह्मदेव शर्मा
पं. श्री थानेश्वर झा
पं. श्री चौठी सदाय
पं. श्री गंगेश ठाकुर
पं. श्री बेचन झा
पं. श्री गौरीनाथ राय
पं. श्री जगन्नाथ झा
पं. श्री दुर्गानाथ झा
पं. श्री शंकरजी झा

पं. श्री खगेश झा
पं. श्री फणीन्द्र चौधरी
पं. श्री गंगाधर झा
पं. श्री शम्भुनाथ झा
पं. श्री सूर्यकान्त झा
पं. श्री इन्द्रनाथ झा
पं. श्री तारणीश झा
पं. श्री महेश मिश्र
पं. श्री श्रीधर त्रिपाठी
पं. श्री पुरेन्द्र वारिक
पं. श्री शशिधर झा
पं. श्री लक्ष्मीश्वर झा
पं. श्री शंकर कु. मिश्र
पं. श्री विनय कु. मिश्र
पं. श्री हरेराम शर्मा
पं. श्री रेणुका सिन्हा
पं. श्री वायुनन्दन मिश्र
पं. श्री विश्राम तिवारी
पं. श्री दयानाथ झा
पं. श्री रामलखन झा
पं. श्री राजकुमार झा
पं. श्री मनोरंजन दूबे
पं. श्री राधारमण झा
पं. श्री कुलानन्द झा
पं. श्री ओंकारनाथ मिश्र
पं. श्री रामप्रपन्न शर्मा
पं. श्री अभय कु० ठाकुर
पं. श्री ब्रह्मदेव मिश्र
पं. श्री उमेश मिश्र
पं. श्री गोविन्द झा
पं. श्री सीताचरण झा
पं. श्री उग्रानन्द प्रतिहस्त
पं. श्री रामलखन शर्मा
पं. श्री कुणाल कु. झा
पं. श्री चिरंजीव झा
पं. श्री गणेश झा
पं. श्री बटोही झा
पं. श्री देवर्षि पाण्डेय
पं. श्री राजेन्द्र प्रतिहस्त
पं. श्री शशिधर मिश्र

पं. श्री गुंजन चौधरी
पं. श्री भूपेन्द्र झा
पं. श्री हरेन्द्रकिशोर झा
पं. श्री धनेश झा
पं. श्री कुलानन्द झा
पं. श्री कामेश्वर मिश्र
पं. श्री रामविलास चौधरी
पं. श्री भोलानाथ मिश्र
पं. श्री रामकृष्ण झा
पं. श्री इन्द्रदेव झा
पं. श्री सुशीलकान्त मिश्र
पं. श्री श्रवणकुमार चौधरी
पं. श्री लक्ष्मीकान्त झा
पं. श्री अभिराम झा
पं. श्री शिवानन्द झा
पं. श्री भवनाथ झा
पं. श्री मदनमोहन पाठक
पं. श्री जगन्नाथ मिश्र
पं. श्री चन्द्रकृष्ण मिश्र
पं. श्री सदानन्द झा
पं. श्री मदन कुमार झा
पं. श्री मुनीन्द्र झा
पं. श्री शुकदेव शर्मा
पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री प्रेमकान्त झा
पं. श्री काशीनाथ झा
पं. श्री खगेन्द्रनाथ झा
पं. श्री बबुआजी झा
पं. श्री हंसधर झा
पं. श्री महानन्द ठाकुर
पं. श्री उमेश झा
पं. श्री महाकान्त ठाकुर
पं. श्री विजय कान्त झा
पं. श्री विनोदानन्द झा
पं. श्री अरुण कु. उपाध्याय
पं. श्री गंगानाथ झा
पं. श्री सत्यवान झा
पं. श्री सुरेश झा

पं. श्री कमलाकान्त मिश्र
पं. श्री श्रीरामकुमार शर्मा
पं. श्री भूपनारायण मिश्र
पं. श्री तेजनारायण झा
पं. श्री राजेन्द्र झा
पं. श्री रतीशचन्द्र झा
पं. श्री विष्णुदेव झा
पं. श्री दिनेश ओझा
पं. श्री हर्षनाथ झा
पं. श्री बाबूलाल मिश्र
पं. श्री रामदेव झा
पं. श्री वैद्यनाथ झा
पं. श्री नवीनचन्द्र ठाकुर
पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री चन्द्रनाथ झा
पं. श्री कृष्णकान्त मिश्र
पं. श्री भुवनेश्वर झा
पं. श्री फूलचन्द्र मिश्र
पं. श्री मदनानन्द झा
पं. श्री श्रीकान्त प्रतिहस्त
पं. श्री कमलाकान्त ठाकुर
पं. श्री भागवत ठाकुर
पं. श्री कलाधर झा
पं. श्री विनयनाथ झा
पं. श्री रघुवीर झा
पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री हरिनारायण ठाकुर
पं. श्री गोपालकृष्ण झा
पं. श्री इन्दुनाथ ठाकुर
पं. श्री मायानन्द झा
पं. श्री इन्द्रनारायण झा
पं. श्री भुवनेश्वर मिश्र
पं. श्री पवन कुमार मिश्र
पं. श्री विन्ध्यनाथ मिश्र
पं. श्री भगलू झा
पं. श्री इन्द्रकान्त झा
पं. श्री शक्तिनन्दन झा

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः ✡ श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत् ५११६, शकाब्दः १९३६-३७, विक्रमसंवत् २०७१-७२, सन् १४२२ साल, लक्ष्मणसंवत् ९०५-०६, खृष्टाब्दः २०१४-१५ ई.तत्र प्रभवादिवार्हस्पत्यगताब्दादयः ४१।००।१।३२।१०। भोग्याब्दादयः १८।११।२८।२७। ५०।अत्र विद्यमाने रसगुणनवेन्दुमिते शकाब्दे रूद्रविंशतिकायां सोमदैवतयुगे एकचत्वारिंशत्प्लवङ्गनामकमध्यमगुरुसंवत्सरफलम्- वर्षाधान्ये भवेत्पीडा ग्रीष्मधान्यं क्वचित्क्वचित्। प्लवंगे पीडिता सर्वाः सर्वदेशे प्रजा भृशम्।।

वर्षेश (राजा) शुक्रफलम्

गृह्णातीह धराधिपो नयवशाच्छास्त्रान्वितो धर्मवित्
मेघः कालमवाप्य मुञ्चति पयः स्फीता भवेन्मेदिनी ।
चौरोपद्रवसंयुता भृगुसुते पृथ्वी च वर्षाधिपे
राष्ट्रे सोत्सुकता प्रजा च नियतं यज्ञप्रतिष्ठारताः।।

संवाहक (मन्त्री) चन्द्रफलम्

कर्मारम्भपरिश्रमे फलवतां पृथ्वी प्रसन्ना शुभा
वृक्षाः स्फीततरा धनार्जनपरा विप्राः प्रलब्धार्थकाः।
वृष्टिः शस्यप्रवृद्धिकारकजला मेघाः सदा वर्षिणो
राजानो विजितारिशंकरभुवः संवाहके शीतगौ।।

पालक-गुरुफलम्

विप्राः सत्कर्मसंस्थाः प्रतिदिनमुदिता यज्ञकर्मप्रयुक्ताः
स्वस्था भूपालवर्गाः प्रमुदितहृदया राज्यभारं वहन्ति।
दुष्टा नाशं व्रजन्ति प्रतिदिनजलदास्तोयदा रोगनाशः
शस्यैः सम्पूर्णगात्रा भवति च धरणीपालके देवपूज्ये।।

मेघेशगुरुफलम्- बलाधिकं प्रयच्छन्ति जलं जलधरा गुरौ ।
तोयेशशुक्रफलम्- बहुतोययुता पृथ्वी भार्गवे तोयनायके ।।
शस्येशबुधफलम्- बहुवृष्टिर्महीपृष्ठे शस्यवृद्धिप्रकारिका। सर्वोपद्रवशून्या च प्रजा सोमसुते भवेत् ।।
लोकेशगुरुफलम्- अनेकधनसंपन्ना निरातंकाः सुरोपमाः। मुदिता दानसंयुक्ता गुरौ लोकाधिपे जनाः ।।
पुष्करमेघफलम्- पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा। चित्रिता तु भवेद् वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता ।।
तटगतरोहिणीफलम्- तटगता यदि सा शुभवृष्टिदा। तटे वृष्टिस्तु शोभना ।।
चैत्रशुक्लप्रतिपच्चन्द्रफलम्- चन्द्रस्य वारो बहुवृष्टिदः स्यात् ।।
पौषामावास्याफलम्- सामान्यम्।। **वायुः**- सुवहः।। **आर्द्राप्रवेशफलम्**- मध्यमम् ।।
दीपावलीफलम्- शोभनम्।। **मेषसंक्रान्तिफलम्**- मध्यमम् ।।
शकाब्दफलम्- सुभिक्षं स्वल्पवृष्टिश्च।। **विक्रमसंवत्फलम्**- विपुलं सुखं सुभिक्षञ्च ।।
जलाढकमानम्- १००।। समुद्रे ५०।। पर्वते ३०।। भूमौ २०।।

● वर्षादिविश्वाः ●

वर्षा १५ धान्यं ६ शीतं ७ तृणं ७ ऊष्णं १७ वायुः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा ५ तृष्णा १ निद्रा ३ आलस्य ७ उद्यम १ शान्तिः ५ क्रोधः ११ दण्डः३ मैत्री १ उत्सवः १३ पापं ७ पुण्यं ११ रसादि ६ उग्रत्वं १६ रसोत्पत्तिः १६ फलोत्पत्तिः ७ रोगः ५ रोगक्षयः १६ आचारः १६ अनाचारः ७ मरणं ३ जननं ११ चौरभयं १७ चौरशान्तिः ५ अग्निभयं ११ अग्निशान्तिः ३

● मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् ●

राशिः	मेषः	वृषः	मिथुनं	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः
आयः	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
व्ययः	८	१४	११	११	५	११	१४	८	१४	८	८	१४
फलं	लाभः	हानिः	हानिः	सुखं	जयः	हानिः	हानिः	लाभः	सुखं	जयः	जयः	सुखं

● सन् १४२२ साल, १९३६-३७ शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी ●

तत्र श्रावणकृष्णप्रतिपद्रविवासरादारभ्य गुर्वस्तबाल्यदोषाभ्यां भाद्रकृष्णतृतीयायां बुधे ४०।५० यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।१।४०।५०।। ततो भाद्रकृष्णसप्तम्यां रवौ ३८।२४ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।३।५७।३४।। ततः सिंहादित्यदोषादाश्विनकृष्णनवम्यां बुधे ३८।२८ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।१।०।४।। तत आश्विनकृष्णत्रयोदश्यां चन्द्रे ३३।२२ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।४।५४।५४।। ततो भृगुक्षैण्यास्तबाल्यदोषेभ्यो मार्गकृष्णाष्टम्यां शनौ २२।५६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।२३।४६।३४।। ततः पौषकृष्णनवम्यां कुजे २५।५० यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि १।१।२।५४।। ततो धनुरादित्यदोषान्माघकृष्णनवम्यां बुधे ४५।११ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२६।१६।२१।। ततः प्रथमाषाढकृष्णामावास्यायां कुजे ३४।३६ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ५।२।४६।२८। ततो मलमासदोषाद् द्वितीयाषाढामावास्यायां गुरौ २।२१ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२६।२७।४२।। ततो द्वितीयाषाढीं यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।१५।५७।३६।। अतो वर्षेशुद्धसमयमानं मासादि ६।२८।४२।२६।। अशुद्धसमयमानं मासादि ५।२५।१७।३१।। तस्माद्वर्षपूर्तिदिनानि ३८४।।

● सन् १४२२ साल, १९३६-३७ शकाब्दीय शुद्धादि ●

कार्त्तिके कार्त्तिकाकाशर्दीपतुलसीव्रतोद्यापनानि। मार्गमाघफाल्गुनचैत्रवैशाखज्येष्ठेषु विवाहदिनानि। माघादज्येष्ठमासेषूपनयनदिनानि। गुरुस्तदानीं कर्के। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठेष्वेकादशीव्रतोद्यापनानि। मार्गे फाल्गुने वैशाखे च शुक्रोदयः पश्चिमायान्तेन तदानीं पूर्वोत्तरदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि बहूनि परञ्च पश्चिमदक्षिणदिशोः केवलं शुक्रान्ध (रे. अश्वि. रो. मृग.) नक्षत्रेष्वेव ।

● सन् १४२३ साल, १९३७-३८ शकाब्दीय संभावित संक्षिप्त शुद्धादि ●

मार्गमाघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखाषाढयोः पूर्वार्द्धे च समयशुद्धिः। तेषु विवाहादिमुहूर्त्ताः बहवः । कार्त्तिके कार्त्तिकादिव्रतोद्यापनम्। माघादिमासेषूपनयनैकादशीव्रतोद्यापनानि । गुरुस्तदानीं सिंहराशौ। मार्गादिषु पूर्वोदितःशुक्रः। अतस्तेषु पश्चिमदक्षिणदिशोस्तृतीयादि विषमवर्षीय द्विरागमनदिनानि।

● वर्षफलम् ●

इस वर्ष के राजा शुक्र, मन्त्री चन्द्रमा, पालकेश वृहस्पति, मेघपति गुरु, जलपति शुक्र, शस्यपति बुध, लोकपति वृहस्पति, पुष्करनामक मेघ तथा रोहिणीवास तट में है। वर्षारंभ मे प्लवङ्ग नामक वार्हस्पत्यवर्ष है। वर्षा १५ विश्वा, धान्य ६ विश्वा, सुवहनामक वायु तथा जलाढक २० विश्वा है। जगल्लग्न, वर्षलग्न, राजा मन्त्री मे शत्रु समभाव, जगल्लग्नेश बुध-कर्मस्थ नीचगत- शुभाशुभदृष्ट, वर्षलग्नेश वृहस्पति केन्द्र (सप्तम) स्थ- शुभाशुभदृष्ट, कर्मस्थ मंगल एवं आयस्थ उच्चगत शनि हैं। जगल्लग्न- वर्षलग्न से गुरु का सम्बन्ध सुदृढ है। सभी अधिकारी शुभग्रह हीं हैं। अतएव अधिकारियों तथा राजा प्रजा में सौमनस्य का वातावरण वनेगा। नारी-उत्थान, शिक्षा, सञ्चार, जल, कृषि, युवाभ्युदय, वैज्ञानिक अनुसन्धान एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में विकासमूलक कार्य होंगे । आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी । पड़ोसी देशों से सम्बन्ध में सुधार होगा । प्रभाववर्द्धक स्थिति रहेगी। उद्योग-व्यापार-स्वास्थ्य विद्युत, ऊर्जा एवं मार्गनिर्माण के क्षेत्रों में आंशिकरूप से अभ्युत्थान होगा । रचनात्मक एवं मौलिक कार्य होंगे। बीच बीच में आंशिकरूपेण बाधा, अशान्ति, उपद्रव, हिंसक घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप संभव रहेगा। सामान्यतया वर्षा की स्थिति अच्छी रहेगी। कहीं कहीं खण्डवृष्टि, झंझावात, बाढ़ एवं हिमपात संभव है। चैत्री, भाद्री एवं अगहनी फसल की उपज क्रमशः ९०, ८५, ९० प्रतिशत होगी।

● मासफलम् ●

श्रावण- इस मास मे ५ वृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त १५ एवं सौम्यशृंग है। अतएव खाद्यपदार्थ, फल, वस्त्र, गृहोपकरण एवं औषधि के भाव में साम्य रहेगा। तरलपदार्थ, श्वेतपदार्थ एवं वनस्पति के भाव में तेजी संभव है। चार ग्रहों का योग है । वर्षा, बाढ़ एवं प्राकृतिक उत्पात संभव है । ५ वृहस्पतिदिन कल्याणकारक है।

भादव- इस मास में ५ रविवासर, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ४५ एवं सौम्यशृंग है। अतः इस मास में खाद्यपदर्थ, धातुपदार्थ, फलादि के भाव में उतार-चढ़ाव रहेगा । तरल पदार्थ सस्ते हो सकते हैं। वानस्पतिक वस्तुओं के भाव में कमी आ सकती है। खण्डवृष्टि या अतिवृष्टि एवं बाढ की संभावना रहेगी। दुर्घटना, प्राकृतिक उत्पात, कलह एवं राजनीतिक उथल-पुथल संभव है। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

आश्विन- इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है। अतः सभी वस्तुओं के भाव में कुछ तेजी आएगी। तरलपदार्थ, वस्त्रादि तथा फलादि के भाव में उतार-चढ़ाव संभव है। चारग्रहों का योग है। खण्डवृष्टि, महामारी तथा प्राकृतिक उत्पात संभव है। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिये।

कार्तिक- इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं सौम्यशृंग है। अतः सभी वस्तुओं के भाव में तेजी आयेगी। मुख्यतया धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ तथा लाल वस्तुओं के भाव में विशेष तेजी रहेगी। चारग्रहों का योग तथा ५ शनिदिन उत्पात, कलह, रोग-भय, वैमनस्य, हड़ताल एवं दुर्घटना कारक हैं। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

अगहन- इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है। अतः खाद्यपदार्थ, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, वनस्पति, वस्त्र, तरलपदार्थ एवं फलादि के भाव में साम्य रहेगा। विशेषकर खाद्य पदार्थ के मूल्य में कमी आयेगी। चार ग्रहों का योग तथा ५ रविवार प्राकृतिक उत्पात, कलह, वैमनस्य, दुर्घटना एवं भयकारक है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

पौष- इस मास में ५ मंगलदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं, सौम्यशृंग है। अतः सभी पदार्थों के भाव में साम्य की स्थिति रहेगी। चार ग्रहों का योग एवं ५ मंगलदिन है। अतएव झंझावात, ओलावृष्टि, हड़ताल, दुर्घटना एवं प्राकृतिक उत्पात संभव है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

माघ- इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं समशृंग है। अतः खाद्य पदार्थ, खनिज पदार्थ, फलादि, वस्त्रादि, वानस्पतिक पदार्थ, तरल पदार्थ एवं व्यञ्जनादि के भाव में साम्य रहेगा। यज्ञादि सत्कार्य होंगे। झंझावात एवं शीतकोप रह सकता है। खाद्य पदार्थो के भाव में उतार-चढ़ाव का क्रम संभव है।

फाल्गुन- इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त ३०, चन्द्र दर्शनमुहूर्त ३० एवं समशृंग है। अतः इस महीने में भी पूर्ववत् सामान्य उतार-चढ़ाव के साथ विविध वस्तुओं के भाव में साम्य बना रहेगा। चार ग्रहों के योग रहने के कारण प्राकृतिक उत्पात, झंझावात, ओलावृष्टि, हड़ताल, कलह एवं रोगभय संभावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

चैत्र- इस मास में ५ रविवार, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं याम्यशृंग है। अतः इस महीने में भी पूर्ववत् सभी वस्तुओं के भाव में साम्य रहेगा। उत्तरार्द्ध में कुछ तेजी आ सकती है। ५ रविवासर होने के कारण कलह, वैमनस्य, झंझावात, रोगभय एवं राजनीतिक उथल-पुथल संभव रहेगा। यज्ञादि सत्कार्य होंगे।

वैशाख- इस मास में ५ मंगलदिन, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शन मुहूर्त ३० एवं याम्यशृंग है। अतः इस महीने में सभी पदार्थों के भाव में उतार-चढ़ाव का क्रम रहेगा। सामान्यतया धातु पदार्थ, तरल पदार्थ फलादिके भाव में तेजी रह सकती है। खाद्य पदार्थ आदि के भाव में तदपेक्षया कुछ न्यूनता रहेगी। ५ मंगलवासर उपद्रव, अग्निभय, रोग, प्राकृतिक उत्पात, झंझावात और ओलावृष्टिकारक हो सकते हैं। अतः धर्मकृत्य, कल्याणार्थ अपेक्षित है।

जेठ- इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शन मुहूर्त ४५ एवं समशृंग है। अतः खाद्यपदार्थ, खनिज पदार्थ, तरल पदार्थ, फलादि, व्यञ्जनादि, वस्त्रादि एवं धातु पदार्थ के भाव में साम्य रहेगा। चार ग्रहों का योग है। अतः उपद्रव, झंझावात, कलह, रोगभय, अग्निभय तथा राजनीतिक उथल-पुथल संभव है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

आषाढ- इस मास मे ५ सोम दिन, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं समशृंग (कर्क संक्रान्तिदिनशुक्र-मुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग) है। अतः सभी वस्तुओं के भाव में साम्य रहेगा। उत्तरार्द्ध मे धातु पदार्थ, फल, तरल पदार्थ एवं वस्त्रादि के भाव में कुछ तेजी संभव है। झंझावात, खण्डवृष्टि एवं सत्कार्य होने का योग है।

● राशिफलम् ●

मेष- (चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ)- वर्षफल मिश्रितफलद है। रक्तवात दोष, अशान्ति, घाव या उदरपीड़ा, आपरेशन संभावित रहेगा। सन्तान सुख अनुकूल तथा पारिवारिक सुख बाधायुक्त रहेगा। व्यय होंगे। भ्रमणतीर्थाटन का योग लगेगा। स्थानपरिवर्त्तन संभव है। राजनीति, शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि से आंशिक लाभ होगा। मित्र सहायता मिलेगी। केतु, तुलाराशिवत् शनि तथा २३ अगस्त तक राहु की उपासना लाभकर होगी।

वृष (इ, उ, ए, ओ, ब, वि, बु, वे, वो)- वर्षफल अनुकूलप्राय है। कफ दोष, घाव या मूत्रविकार एवं उदरपीड़ा संभावित रहेगी। परिवार, सन्तान सुख में कमी रहेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार तथा राजनीति के क्षेत्रों में पूर्वार्द्ध में लाभ होगा किन्तु उत्तरार्द्ध में बाधा उपस्थित होगी। कृषिकार्य एवं पशुपालन से लाभ होगा। २३ अगस्त तक केतु तथा तुलाराशिवत् १२ नवम्बर से शनि की उपासना लाभकर रहेगी। दुर्गापाठ करना लाभकर होगा।

मिथुन- (क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)- वर्षफल शुभद है। परिवार, सन्तान सुख अनुकूल रहेगा। कृषि, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। भ्रमण-तीर्थाटन का योग लगेगा। नवीन कार्य प्रारंभ होगा। तुला राशिवत् ११ नवम्बर तक शनि एवं २३ अगस्त से राहु की उपासना लाभकर होगी।

कर्क- (हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो)- वर्षफल शुभद रहेगा। उदरपीड़ा अथवा वात विकार साधारणरूप से संभावित रहेगा। पारिवारिक सुख अनुकूल तथा सन्तान सुख में बाधा आयेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, कृषि एवं राजनीति के क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। इष्टसिद्धि में सफलता मिलेगी। तीर्थाटन एवं मंगलकृत्य सम्पन्न होंगे। तुला राशिवत् शनि की तथा २३ अगस्त तक राहु की उपासना लाभकर होगी।

सिंह- (म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)- वर्षफल शुभद है। स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख सन्तानसुख अनुकुल रहेगा। नये कार्यारंभ में सफलता मिलेगी। उद्योग, व्यापार, शिक्षा, राजनीति एवं कृषि कार्य में सफलता मिलेगी। स्थान परिवर्तन एवं भ्रमण का योग लगेगा। प्रारंभ में सफलता का योग है किन्तु आगे स्वास्थ्य बाधा एवं कार्यबाधा उपस्थित हो सकती है। अतः १२ नवम्बर से तुलाराशिवत् शनि तथा २३ अगस्त से राहु एवं केतु की उपासना लाभकर होगी।

कन्या- (टो, प, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पो)- वर्षफल मिश्रित है। उदरपीड़ा, रक्तवातदोष, व्यय, शत्रु बाधा, नूतनकार्यारंभ में बाधा एवं विलम्ब से सफलता, शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि क्षेत्रों में आंशिक लाभ, भ्रमण तथा परिवार- सन्तान सुख अनुकूलप्राय रहेगा। १२ नवम्बर तक तुला राशिवत् शनि एवं २३ अगस्त के बाद केतु की उपासना लाभकर होगी।

तुला- (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)- शनि की साढे साती चल रही है। अतएव रक्त वात दोष से अस्वस्थता, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं शिक्षा के क्षेत्रों में पारिवारिक एवं सन्तान सुख मे यदा-कदा बाधा, चोट-चपेट की संभावना, बाधा- विलम्ब से आंशिक लाभ तथा शत्रु कोप संभावित रहेगा। अतः शान्त्यर्थ हनुमद्दर्शनपूजनस्तोत्रपाठ, कृष्णगोसेवा, मंगलव्रत, सुन्दरकाण्डपाठ अथवा दुर्गापाठ, शनिपूजनस्तोत्रपाठमन्त्रजप, शनिदिन अश्वत्थपूजन, तिलदान, तिल तैल से हनुमद्दीपदान, हनुमानचालीसापाठ तथा शिवपूजन कर्त्तव्य है। काले घोड़ानाल-वृषोत्सर्गदगनी- नाव के माङि के लोहे की अंगूठी (गंगाजल से सिक्त एवं शनिमन्त्राभिमन्त्रित) वाम हाथ की मध्यमा में शनिदिन धारण करना श्रेयस्कर होगा। २२ अगस्त से पूर्व केतु तथा तत्पश्चात् राहु की उपासना लाभकर होगी।

वृश्चिक- (तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु)- शनि की साढे साती चल रही है। अतएव रक्तवातदोष, उदर विकार, शत्रु-रोगबाधा, विरोध, व्यय एवं विलम्ब से कार्यसिद्धि में आंशिक सफलता मिलेगी। मानसिक अशान्ति रह सकती है। पारिवार, सन्तान सुख मध्यम कोटि का रहेगा। राजनीति, उद्योग, शिक्षा एवं व्यापार में बाधा-विलम्ब से थोड़ा लाभ होगा। अतः तुला, राशिवत् शनि तथा २३ अगस्त तक राहु की उपासना कर्त्तव्य है।

धनु- (ये, यो, भ, भि, भू, ध, फ, ढ, भे)- प्रारंभ में वर्षफल अनुकूल प्राय रहेगा किन्तु आगे शनि की साढे साती प्रारंभ होगी। अतएव वातकफ दोष, उदरपीड़ा एवं नवीन कार्य में बाधा संभावित रहेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्रों में आंशिक लाभ होगा। पारिवारिक एवं सन्तानमूलक सुख मध्यम कोटि का रहेगा। स्थान परिवर्त्तन एवं भ्रमण का योग संभव है। अतः १२ नवम्बर के बाद तुलाराशिवत् शनि तथा २३ अगस्त के बाद केतु की उपासना लाभकर होगी।

मकर- (भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि)- वर्षफल शुभद है। स्वास्थ्य अनुकूलवत् रहेगा। शत्रु पर विजय, नवीन कार्यारंभ में सफलता, राजनीति में लाभ, स्थान परिवर्तन एवं पदोन्नति का योग है। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। भ्रमण, तीर्थाटन एवं सद्व्यय होगा। हनुमदुपासना कर्त्तव्य है।

कुंभ- (गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द)- वर्षफल अनुकूल है। साधारण रूप से उदरपीड़ा अथवा वातदोष संभव रहेगा। पारिवारिक सुख एवं सन्तान सुख अनुकूलप्राय रहेगा। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, राजनीति, कृषि एवं नवीन कार्यारंभ में सफलता का योग है। भ्रमण, तीर्थाटन एवं अभ्युन्नति होगी। २३ अगस्त से राहु-केतु एवं १२ नवम्बर तक शनि की उपासना लाभकर होगी।

मीन- (दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो च, चि)- शनि की साढे साती चल रही है। अतः कार्य में बाधा एवं विलम्ब होगा। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, कृषि एवं राजनीतिक के क्षेत्रों में आंशिक सफलता मिलेगी। भ्रमण, स्थान परिवर्तन एवं तीर्थाटन का योग लगेगा। वातरक्त दोष एवं उदर विकार से स्वास्थ्य बाधा उपस्थित हो सकती है। पारिवारिक एवं सन्तान सुख मध्यम रहेगा। अतः तुला राशिवत् शनि तथा २३ अगस्त तक राहु-केतु की उपासना कर्त्तव्य है।

अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः

सूर्यस्य-ओम् घृणिः सूर्य आदित्य । चन्द्रस्य-ओम् सों सोमाय नमः । कुजस्य-ओम् अं अङ्गारकाय नमः । बुधस्य-ओम् बुं बुधाय नमः । गुरोः-ओम् वृं वृहस्पतये नमः । शुक्रस्य-ओम् शुं शुक्राय नमः । शनेः-ओम् शं शनैश्चराय नमः । राहोः-ओम् राँ राहवे नमः । केतोः-ओम् कें केतवे नमः ।।

ग्रहाणां समिधः-अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः क्रमात् ।।

शाकल्यनिर्माणम्-तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः । यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम् ।।

छन्दोगप्राण-प्रतिष्ठामन्त्रः-ओम् वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्म वर्म भूतिः प्रतिष्ठा ।। वाजसनेयिनां

देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः-ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञग्वं समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

शुभदिनानि-चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि । शुभतिथयः-२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ ।

शुभनक्षत्राणि-अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. ।

शुभलग्नानि राशयश्च-वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जावती, कुष्ठः (कुढ), बला (बरियार), प्रियंगु (काउनी), घनः (मोथा), सर्षपः, हरिद्रा, देवदारु, पुंखा (सहरफोका), लोध्रं एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दन- धान्यशतावरी- तीर्थोदक- सप्तमृत्तिका- तिल- यव- पञ्चगव्य- ताम्बूल- पञ्चपल्लव- पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अर्द्धप्रहरबोधकचक्रम्

दिन	सू.	चं.	म.	बु.	वृ.	शु.	श.
दिने	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः । त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ।। पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः । सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे । शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च । लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ।।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगतायोगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
रात्रौ	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.

गर्भाधानमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु । चं बु. वृ. शु. वारेषु । रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत् । शुभैः केन्दत्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम् । मृ. पुष्य श्रव.मू. पुन. ह. रो. रे.. उत्तरा ३ (जन्मभं विना) नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू. मं. वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु. चं. अपि, पूर्वाह्णे, पुभस्यांगे तदंशे शुभम् । तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम् ।

जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात् । तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि. अनु. रे. उत्तरा ३. रो. अश्वि. पुन. पु. स्वा. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. ह. पुन. उत्तरा ३. पुष्य. चि. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु वृष-सिंह-वृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभम् । अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम् । भैषज्योक्तनक्षत्रेष्वौषधिभक्षणञ्च शुभं स्यात् ।

सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. स्वा. अनु. उत्तरा ३. रे. नक्षत्रेषु, रवि, मङ्गल, वृहस्पतिवारेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेष १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्ले. पूर्वा. ३, ज्ये. ध. श. नक्षत्रेषु मध्यमम् ।

प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः

अश्वि रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अ. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु. ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः

भ. आ. आश्ले. म. वि. श. रहितनक्षत्रेषु शनिमंगलरहितदिनेषु शुभतिथिषु स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठी धारणं) शुभम् । **शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः**- जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात् ।

शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पञ्चमे मासि उत्तरा ३. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह., पुष्य अभि. नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् । तन्मन्त्रः-रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम् । आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं, सुवर्णं, रौप्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति ।

शिशुविलोकनमुहूर्त्तः

तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११, १२ क्षत्रियाणां १३ वैश्यानां १६ शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम् अथवा स्वा. पुन. श्र. ध. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. उत्तरा ३, रो. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, पूर्वाह्णे शुभम्, मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थैः, ८।१२ गृहे शुद्धे, चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते, लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा ३. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. ह. अश्वि. पुष्य नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे, २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु, एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च रहितेषु । शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः, दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम् ।

कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, चं, बु. वृ. शु. दिनेषु, जन्मतारां विहाय श्र. ध. ह. पुन. अश्वि. उत्तरा ३, पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १२।६ मासे वा विषमवर्षे, चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा, २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः ।

चूडाकरण (मुण्डनाद्यकचकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि षण्मासे, ज्येष्ठाग्रहायणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना, विषमवर्षे, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु चं. बु. वृ. शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् २।३।४।८।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने, ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीकुलग्रामदेवताः विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः । अश्वि. आर्द्रा. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन लग्नेषु तन्नवांशे चोत्तमः, कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभः ।

विद्यारंभमुहूर्त :

उत्तरायणे गणेशविष्णुलक्ष्मीसरस्वतीकुलग्रामदेवताश्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जाते सति, सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि. मृ. आर्द्रा. पुन. पुष्य, आश्ले. ह. चि. स्वा. मूल, पूर्वा ३. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारंभः शुभः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादिषण्मासेषु, सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्।२।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आ. पुष्य. आश्ले. पूर्वा ३, उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्णे, सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवः षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १। ५।८ स्थाः पापा न शुभाः। ६।८।१२ गताः शुभा न शुभप्रदाः।३।६।११ गताः पापाः शुभदाः, पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतः शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। **गुरुशुद्धिः** – जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः, १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः, ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

प्रदोषनिर्णय :- यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

विवाहमुहूर्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु सौरक्रमेण (मार्गे देवोत्थानात्परमाषाढे हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्। आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

वरवरणमुहूर्तः - शुभतिथिदिनलग्नेषु कृतिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः शुभम्।

कन्यावरणमुहूर्तः - शुभतिथिदिनलग्नेषु कृतिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः शुभम्।

विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्तः - विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादि कृत्यं (आवश्यके शुभतिथिदिननक्षत्रेषु वा) विधेयम्।

महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः - श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय संकल्पः-ॐ अद्य अमुके मासि अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वक-दीर्घायुष्ट्वबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनशाखीय ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूभुर्वः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ" इति महामृत्युंजयमन्त्रस्य एतत्सहस्त्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि। ॐ हौं ॐ जूं सः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्री महामृत्युंजयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रदेवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः- वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ हौं ॐ जूं सः भुभूर्वः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रॉं ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्रत्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडंगन्यासः। ततः-चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः**- ॐ जूं सः।

वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चमसप्तमनवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्रपौषभाद्रक्षयमासमलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा।१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। चं. वृ. शु. श. वारेषु, मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मृ. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु। २।३।५।६।७।८।९।१०।११ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुनवैशाखमासेषु शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे. अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे, शुक्लपक्षे, शुद्धसमये, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा ३. ह. अनु. पूषा. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ४।१०।११।१२ लग्नेषु राशिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयोरन्यतरस्थलग्ने, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, शुद्धे वापीकूपतडागादिचक्रे शुभम्।

जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

चैत्ररहितोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. रो. उत्तरा ३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथिदिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ३।६।११ स्थितैः। शुभैः १२।८ भिन्नस्थानगतैः देवादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहान् पुष्ये, बुद्धं श्रवणायां, गणेशादीन् रेवत्यां स्थापयेत्। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ, जानकीनवम्यां, दीपमालिकायां, शङ्करस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां) वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

कूपचक्रं रोहिणीभात्

स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्
दक्षिण	३	निर्जलम्
नैऋत्य	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम्
वायु	३	जलहानिः
उत्तर	३	मधुरजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेव गणनीयम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

स्थान	न	फलानि
पूर्व	२	जलशोषः
अग्नि	३	बहुजलम्
दक्षिण	२	जलहानिः
नैऋत्य	२	अमृतजलम्
पश्चिम	३	स्वादुजलम्
वायु	२	निर्जलम्
उत्तर	३	स्थिरजलम्
ईशान	३	नष्टजलम्
मध्य	५	पूर्णजलम्
वाह्य	३	अमृतजलम्

हवनचक्रं सूर्यभात्

न	ग्रह	फलानि
३	सू.	अशुभम्
३	बु.	शुभम्
३	शु.	शुभम्
३	श.	अशुभम्
३	च.	शुभम्
३	मं.	अशुभम्
३	वृ.	शुभम्
३	रा.	अशुभम्
३	के	अशुभम्

रोहिणी-नक्षत्राद्वापी चक्रम्

स्थान	न	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलम्
नाभौ	४	बह्निनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादयोः	८	दुःखम्

बीजवपने फणिचक्रं राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	फल
४	अशुभं
३	शुभम्
१	अशुभं
३	शुभम्
१	अशुभं
३	शुभम्
१	अशुभं
३	शुभम्
८	अशुभं

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र	फल
८	शुभम्
६	अशुभं
८	शुभम्
३	अशुभं

गृहारम्भ (वास्तु) मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ (पशुगृहं त्यक्त्वा) कार्तिक, मार्ग, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु । सम्मुखकालवर्जितसमये ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, चन्द्रबुधवृहस्पतिशुक्रशनिवासरेषु । दिवा । शुद्धसमये । शुद्धे वृषवास्तुचक्रे, २ ।३ ।५ ।६ ।८ ।९ ।११ ।१२ लग्नेषु । लग्ने शुभदृग्युते । शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, ८ ।१२ ग्रहरहिते शुभः । आवश्यके तृणकाष्ठादिगृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परज्वेष्टिकादिगृहनिर्माणं शुद्धसमये एव । देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव शुभम् ।

देवालयजलाशयगृहारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातदिक्	नैर्ऋत्यां	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्य
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.क. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात् / गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्

स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
मु.	१	अग्निदाहः	शीर्षे	३	अग्निभयम्
पू.	४	उद्वसनम्	अ. पा.	४	शून्यम्
द.	४	लाभः	पू.पा.	४	स्थैर्यम्
प.	४	धनम्	पृष्ठे	३	धनम्
उ.	४	कलहः	द.कु.	४	लाभः
म.	४	विनाशः	प.	३	नाशः
अ.	३	स्थिरता	वा.कु.	३	धननाशः
क.	३	स्थिरता	मुखे	३	कष्टम्

अथ तिथिनन्दादिसंज्ञा

संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहूः
तिथयः	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

गृहप्रवेशमुहूर्त्तः

वैशाख-आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा)-कार्तिक-मार्ग-फाल्गुन-श्रावण (सौर) मासेषु २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । चन्द्रबुधगुरुशुक्रशनिवारेषु । दिवारात्रौ, शुद्ध समये, शुद्धे कुम्भचक्रे। २।५।८।११ लग्नेषूत्तमः, ३।६।९।१२ लग्नेषु मध्यमः ।

जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय- ३ ।६ ।१० ।११ राश्यंशयोः स्थिरराशौ, लग्नात् १ ।३ ।५ ।७ ।९ ।१० ।११ स्थानेषु शुभाः, ३ ।६ ।११ स्थानेषु पापाः, ४ ।८ भवने ग्रहरहिते । सम्मुखकालरहितसमये शुभः । इष्टिकादिगृहप्रवेशः शुद्धसमये, आवश्यके तृणकाष्ठादिक गृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि । अग्निभये राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारंभो गृहप्रवेशश्च कार्यः ।

चरणिविचारः- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार-संयुतमष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते । **तत्फलम्-** पशुहानिः पशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः । पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः ।

पृथ्वीशयननक्षत्राणि- सूर्यनक्षत्रात् ५ ।७ ।९ ।१२ ।१९ ।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते । एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृतिकार्यं ट्यूब्वेल बोरिंग प्रभृतिस्थापनञ्च न कर्त्तव्यम् ।

ट्यूब्वेल, बोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापने शुभमुहूर्त्तः- कृत्तिका, आश्ले, मघा, पूर्वा ३, भरणी, विशा, मूल नक्षत्रेषु ।२ ।४ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१३ ।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्, चं. बु. वृ. शु. वारेषु. पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा, २ ।३ ।४ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ ।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितैः । पापैः ३ ।६ ।११ गतैः शुभम् ।

मासस्नानमुहूर्त्तः- विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, आर्द्रा, पु. पुष्य, आश्ले, म, पूफ. उफ. ह. चि. स्वा. नक्षत्रेषु, वृष मि. कन्या. तु. लग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकास्थापनमुहूर्त्तः- अश्वि, भ, वि, रो, मृ, उत्तरा ३, कृ, मृ, पूषा, ध, आर्द्रा नक्षत्रेषु, सू. मं. श. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकाचक्रम सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	न०	फलम्	स्थान	न०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृतिः

मन्त्रग्रहणमुहूर्त्तः- अश्वि. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे । अत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्, सू. चं., बु, वृ, शु, वारेषु । शुद्धसमये प्रातः मध्याह्णे वा ।२ ।३ ।५ ।७ ।९ ।१२ लग्नेषु, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० गतैः, पापैः ३ ।६ ।११ स्थितैः वै, श्रा, आश्वि, का, अग्र, मा, फा, मासेषु (सौरक्रमेण) । संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्त्त विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम् ।

व्रतोद्यापनमुहूर्त्तः- अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि., स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा । का, मा, फा, वै, ज्ये, आषा मासेषु । शुभलग्नेषु । कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनं च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ । एवमेव यस्य व्रतस्य मासाविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितैः, पापैः ३ ।६ ।११ स्थितैः, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यके शुभम् ।

यात्रामुहूर्त्तः- वामपृष्ठराहौ । मलमासक्षयमास-सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु । अश्वि. मृ. पुन, पुष्य, ह, ज्ये, अनु, श्र, रे, नक्षत्रेषूत्तमः । रो, पूर्वा. ३, चित्रा, स्वा, मू, पूषा, ध, नक्षत्रेषु मध्यमः । मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्तसंक्रान्तिमासादि-प्रभृतिदोषरहिते । अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु । अमावस्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु । दिक्शूलरहितदिने ।२ ।४ ।६ ।८ ।९ तारासु । पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्तिषु च । १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ चन्द्रेषु । आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि । द्विरागमनानन्तरं पितृगृहागतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ । तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्यः, दक्षिणकाले च सम्मुखचन्द्रवशेन यात्रा कार्या ।

राहु (काल) वासः- सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां । फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम् । ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायाम् । भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासः ।

सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि ।

दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमे शनिवासरे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवासरे दक्षिणस्यां, रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मंगलवासरे, बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम् । **परिहारः-** रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयोगुडतिलदधियवमाषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये परमावश्यके गच्छेत् ।

विदिक्शूलविचारः

शनै पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

लग्नचन्द्रयोर्वासः

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्रा शुभा । परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा ।

चन्द्रविचारः

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम् । तत्र १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ संख्याकश्चन्द्रः शुभप्रदः ।८ चन्द्रः मृत्युप्रदः ।४ कलहप्रदः ।१२ हानिकारकः । तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुल-शंखदधिश्वेतवस्त्रादिदानं कार्यम् ।

द्वादशचन्द्रस्य विशेषः

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

जन्मराशिनामराशिवशेनविचारणीयविषयाः

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ।। देशे ग्राम गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्त्येत् ।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ।।

जन्मनक्षत्रे त्याज्याः-जन्मक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु । क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत् । **जन्ममासे त्याज्याः-**क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णविधश्च ।

सिद्ध्यादियोगचक्र तिथिदिननक्षत्रवशेन

दिनानि	रविः	सोमः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ सिद्धियोगाः	अश्वि.पुष्य ह.मू.	रो.मृ.पुष्य अनु. श्र.	अश्वि.	रो.मृ. ह.अनु	अश्वि.पुन. पुष्य अनु.रे.	अश्वि. पुन. अनु. श्र.रे.	रो.स्वा.श्र.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	xx	xx	४।९।१४	xx	xx	xx	४।९।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	x	गुडम्	x	लवणम्	x	तिलाः	x	x

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेषं तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।९ ताराः शुभदाः । १ तारा मध्यमा ।३।७ अशुभदा । **विशेषः**- पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम् ।

कालशूलम्- उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात् ।

पञ्चक (धनवा) विचारः

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि । तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहंतृणकाष्ठादि-संग्रहशय्यावितान- निर्माणादिकं च त्येजत् । **तत्रापवादः**- वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके । पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत् ।

दग्धतिथिमासान्तादिविचारः

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति । तत्र शुभकार्यं निषिद्धम् । एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम् ।

पुराणादिश्रवणमुहूर्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मृ. श्र. नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु । शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् । शुभलग्ने । लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाढ्ये, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः उत्तरायणे, श्रा, आश्वि, कार्ति, मार्ग मासेषु शुभम् । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्त विनाऽपि शुभम् ।

इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम् ।

नवान्नपार्वणमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम्, मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम् । सू. चं. बु. वृ. वारेषु । शुक्लपक्षे । २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु । वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् । २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् । नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखास्थसूर्य-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय मघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्र-सौरक्रमेणकार्तिक-पौष-चैत्रहरिशय ननन्दात्रयोदशीरिक्तामंगलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानि । अभावे कृष्णपक्षे ५ यावद् ग्राह्यः ।

कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, शुद्धसमये, आवश्यकेऽशुद्धेऽपि, चैत्रपौषभाद्र मलमास-क्षयमासरहिते शुभम् । शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा ।

खलस्थापनमुहूर्त्तः

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम् ।

धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः

मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. पूभा. ह. कृ. ध. श्र. मृ. स्वा. म. उत्तरा ३. पूषा. भ. चि. पुष्य. नक्षत्रेषु, सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् । अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

मेधिरोपणमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनलग्नेषु मेधिरोपणं शुभम् ।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मङ्गले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बरम्, गुरौ आम्रम्, भृगुजे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम् ।

कणमर्दनमुहूर्त्तः

मघा, पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

धान्यस्थापनमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनयोः, २।३।५।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः

अ. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. स्वा. वि. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा ।

बीजस्थापनमुहूर्त्तः

रो. मृ. म. ह. स्वा. मृ. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु । चं. बु. वृ. शु. वारेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् ।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु ।२।५।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

बीजवपनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. पुष्य. रे. नक्षत्रेषु २।३।५।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, च. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रकोणगैः, पापैः त्रिषडायगैः शुभम् ।

हलप्रवहणमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. म. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, चं. मं. बु. वृ. शु. वारेषु शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, चन्द्रे जलचरराशिस्थे तन्नवांशे वा, गुरौ लग्नस्थे, शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम् ।

धान्यरोपणमुहूर्त्तः

रोहिणी, उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु, सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु च शुभम् ।

स्वामिसेवा (नौकरी) मुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु, सू. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु, लग्ने शुभयुते, सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे, सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः ।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, सू. मं. बु. शु. वारेषु शुद्धसमये, ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

ऋणप्रदानमुहूर्त्तः (द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः)

स्वा. पुन. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, ५।८।९ ग्रहरहिते, चं. वृ. शु. श. वारेषु शुभम् ।

ऋणदाने निषिद्धसमयः- बुधवासरः, भरणी, कृ., आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा ३, चि., ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च ।

ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः- रविभौमदिने । संक्रान्तिः । वृद्धियोगः । हस्तनक्षत्रम् । एषु ऋणार्पणं शुभम् ।

युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	पू३.अश्वि. पुष्य. म.मृ श्र. कृ. ज्ये. वि. चि.	४।८।१२।१४	मं. शु.	स्थायिजयदः (मुद्दालह)
अकुलः	भर. स्वा. आश्ले. ध.रे.ह. रो. अनु. पुन. उत्तरा३	१।३।५।७।९ ११।१३।१५	सू. च. वृ. श.	यायिजयदः (मुद्दई)
कुलाकुलः	आर्द्रा. मू. अभि. शत.	२।६।१०	बुधः	उभयोः सन्धिः

नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्षः	रो. पुष्य. उफ. वि. पूषा. ध. रे.	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	मृ. आश्ले. ह. अनु. उषा. श. अश्वि	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. भ.	दूरे श्रवण-मलाभश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुन. पूफ. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ.	अलाभः	उत्तरस्याम्

प्रथमलग्नसारिणी- इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च ।
यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	१०	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३३	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४५	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	००	१९	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	४२	४	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१५	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४३	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	३४	८	४२	१६	५०	२४	४८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चि	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

उदाहरण- श्रावणशुक्ल ५ शुक्र को इष्टदण्डादि ४।५ है। इस दिन सूर्य के कर्क राशि के १४ अंश के नीचे दण्डादि १९।५५।५८ में इष्टदण्डादि ४।५ जोड़ने से २४।००।५८ हुआ। यह दण्डादि सिंह राशि के ५ अंश के आगे ६ अशं के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय ६ अंश से सिंहलग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

दशमलग्नसारिणी- यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम्।
प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२८	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	८	०६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४६	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चि	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५१	०८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

नतकालसाधनम्- रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम्।
यथा- श्रावणशुक्ल ५ शुक्र को इष्टघट्यादि ४।५ के समय दिनार्द्ध-इष्टकाल = १६।३५ - (४।५) = १२।३० = पूर्वनतघटी ॥

दशमलग्नोदाहरणम्- श्रावणशुक्ल ५ शुक्र को इष्टघट्यादि ४।५ है। नतकालानयनविधि से इस काल का पूर्वनत १२।३० हुआ। इसे सूर्य के कर्कराशि के १४ अंश के नीचे दण्डादि २१।३२।४६ में घटाया तो (२१।३२।४६)- (१२।३०) = ९।२।४६ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में वृषराशि के ३ अंश के आगे और ४ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय ४ अंश से वृष दशमलग्न हुआ।

● **अग्निवासचक्रम्** ●

शुक्लपक्षे				कृष्णपक्षे				र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भू.	भू.	दि.	भू.	भू.	भू.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भू.	दि.	भू.	भू.	भू.	भू.	भू.
३	७	११	१५	X	४	८	१२	दि.	भू.	भू.	भू.	दि.	भू.	भू.
X	४	८	१२	१	५	९	१३	भू.	भू.	भू.	दि.	भू.	भू.	भू.

फलम्- भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः भूतले च धननाश इति ज्ञेयम्।
विधिः- (शुक्लादितिथिसं + सूर्यादिदिनसं + १) ÷ ४ = ३, ० शेषे शुभः। १, २ अशुभः।
पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः-
शुक्लपक्षे-२।५।६।९।१२।१३ कृष्णपक्षे- १।४।५।८।११।१२।३०।
विधिः- (शुक्लादितिथिसं X २ + ५) ÷ ७ = १।२।३ शेषे शुभम्। अन्यदशुभम्।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरीसन्निधौ, ३ शेषे वृषारूढः शिवः अभीष्टदः स्यात्।

इष्टिकारम्भमुहूर्तः- अश्वि. रो. मृग. पुष्य उत्तरा ३, ह. ज्ये. श्र. रे. नक्षत्रेषु, वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्रभाद्रपौषमलमासक्षयमासभिन्नसमये शुभः।

वृक्षादिरोपणमुहूर्तः- अश्वि. रो. मू. पुष्य उत्तरा ३. चि.वि.अनु.मू. अभि श. रे. नक्षत्रेषु, चं.वृ. शु. दिनेषु शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्- पञ्चक (ध.श.पूभा.उभा.रे) रहित नक्षत्रेषु १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

त्रिविधप्रवेशः- दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभः ।

विपणिमुहूर्त्तः- अश्वि. रे. पुष्य. ह. उत्तरा ३, अनु. अभि. नक्षत्रेषु १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु। सू. च. बु. वृ. शु. श. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत् । १ ।२ ।३ ।४ ।५ ।६ ।७ ।८ ।९ ।१० ।१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८ ।२ रहितैः, शुभैः २ ।१० ।११ स्थितैः शुभा।

मीलचालनमुहूर्त्तः- भर, कृति, आश्ले, वि, पूर्वा ३, नक्षत्रेषु २ ।३ ।५ ।७।१० ।११ ।१३ ।१५ तिथिषु, चं, बु. वृ, शु. दिनेषु, शुभैः १ ।२ ।४ ।५ ।७ ।१० स्थितैः, पापैः ३ ।६ ।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः ।

वस्तूनां क्रयमुहूर्त्तः- शुभतिथिदिनलग्नेषु, अश्वि. चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभः ।

भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः- अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रो. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, सू. च. बु. वृ. शु. दिनेषु, ३ ।६ ।९ ।१२ लग्नेषु, शुभैः ३ ।६ ।९ ।१२ राशिगतैः, लग्नात् ७ ।८ ।१२ ग्रहरहितेषु, औषधिभक्षणं शुभम् । जन्मनक्षत्रे भैषज्यभक्षणमशुभम् ।

रक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त्तः- अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. मं. वृ. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभम् ।

चिकित्सामुहूर्त्तः- अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. बृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभा ।

उग्रकर्ममुहूर्त्तः- पूर्वा ३, भ. मघा, मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु, १ ।८ ।१० ।११ लग्नेषु, १ ।३ ।४ ।५ ।९ ।१० ।११ ।१४ तिथिषु शुभम् ।

मोटरबससाइकिलयानादिचालनमुहूर्त्तः- अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु, च. मं. वृ. शु. श. दिनेषु १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।८ ।१० ।११ ।१३ ।१५ तिथिषु, चतुर्थेशे बलयुक्ते १। ४। ।५ ।७ ।९ ।१० स्थिते, लग्नेशदशमेश-नवमेशैरपि १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० गतैर्बलयुक्तैः, पापैः ३ ।६ ।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम् ।

राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ.	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह्र	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आषा	पौ	ज्ये..	भा.	मा.	आ.	श्रा.	वै.	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दि	र.	श.	चं.	बु.	श	श	बृ.	शु	शु	मं	वृ.	शु
नक्ष.	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र	श.	रे.	म.	रो.	आ.	श्ले
योग	वि	सु	प	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
कर	बव	श	च	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श	वणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.च.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीच	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	२२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व.
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु.
आकृति	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

होराचक्रम्

राशि	मे	वृ.	मि	क	सि	कं.	तु	वृ.	ध	म	कुं	मी
१५अं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
३०अं	च	सू	च	सू.	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

द्रेष्काणचक्रम्

राशिः	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१०अं	मं	शु.	बु	च	सु	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
२०अं	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च
३०अं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्

शनिः	रवि	भौम	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्र	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ.	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	संज्ञा

होरालग्नानयनम्- द्विघ्नेष्ट-नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ।

त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम्

ग्रहाणां धारणाय मणयः

सूर्यः	माणिक्य	गारनेट	विद्रुम
चन्द्रः	मुक्ता	मूनस्टोन	चांदी
कुजः	विद्रुम	मूंगा	मूंगा
बुधः	पन्ना	लीली	सोना
गुरु	पोखराज	सुनहला	मोती
शुक्रः	हीरा	स्फटिक	चांदी
शनिः	नीलमणि	यमुनियां	लौह
राहुः	गोमेद	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
केतुः	लहसुनिया	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त

नवमांशचक्रम्

राशि	मे.सि ध.	वृष कं.म	मि.तु कु.	क.वृ मी.
३/२०	म.	श.	शु.	च.
६/४०	शु.	श.	मं.	सू.
१०/०	बु.	वृ.	वृ.	बु.
१३/२०	च	म.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	म.
२०/०	बु.	बु.	वृ.	वृ.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	म.	सू.	शु.	श.
३०/०	वृ.	बु.	बु.	वृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम्	
अंशाः	मे.तु.मि. ध.सिं.कु.	अंशाः	वृ.कं.क. वृ.म.मी.
५अं.	म	५अं	शु
१०अं.	श	१२अं	बु
१८अं	वृ.	२०अं	वृ.
२५अं	बु.	२५अं	श
३०अं	शु.	३०अं	मं.

आयुर्विचारः

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम्। प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम् । विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्, विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुः । इत्थमेवात्मकारकवशेनापि । १, ८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव । विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः । यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः । पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः । एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमश ८०, ७२, ६४, वर्षाण्यायुः । अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति ।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च- अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् । द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते । क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः । मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा । लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या । व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च । अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति ॥

द्वादशांशज्ञानम्- प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २ ।३० अंशात्मकं भवति । द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति ।

कारकग्रहाः- ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य-भ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः । अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम् । **स्थिरकारकाः-** तन्वादिभावानां क्रमेणसूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रगुरु-गुरु-भौम-शुक्र-शनि-गुरु-बुध-शुक्र-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति ।

स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्- जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १ ।६ ।११ स्थिते स्वर्णपादे, २ ।५ ।९ स्थिते रजतपादे, ३ ।७ ।१० स्थिते ताम्रपादे, ४ ।८ ।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम् ।

आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति ।

तेषां फलम्- स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति ।

श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. १३।७।२०१७ ई. तः दि. २६।७।२०१४ ई. या., पश्चिमेकालः। मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, ६ तो याम्यायनं वर्षर्तुश्च।

तिथयः दिनानि	तिथयः दं. पं.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. पं.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.
१ र.	२३।५६	दि. २।४८	उषा. ३०।४८	सा. ५।३३	वै. ०४।५६	कौ. २३।५६	मकर	अहो.	२।२६।४६।४९	३३।५०	५।१४	६।४६	२२	२९	१३
२ च.	१७।४७	दि. १२।२१	श्र. २६।४०	दि. ३।५४	प्री. ४६।४३	ग. १७।४७	म.५४।३५	रा. ३।०४	२।२७।४३।४५	३३।४९	५।१४	६।४६	२३	३०	१४
३ म.	११।३१	दि. ६।५०	ध. २२।३०	दि. २।१४	आ. ४१।००	वि. ११।३१	कुम्भ	अहो.	२।२८।४०।४१	३३।४८	५।१४	६।४६	२४	३१	१५
४ बु.	५।२८	दि. ७।२६	श. १८।२९	दि. १२।३६	सौ. ३४।४७	बा. ५।२८	कुम्भ	अहो.	२।२९।३७।३७	३३।४७	५।१५	६।४५	२५	३२	१६
६ वृ.	५४।३५	रा. ३।५	पूभा. १४।५६	दि. ११।१३	शो. २७।३२	ग. २७।११	कु. ०१।५०	प्रा. ५।३५	३।०।३४।३२	३३।४६	५।१५	६।४५	२६	१	१७
७ शु.	५०।०८	रा. १।१८	उभा. ११।५६	दि. १०।०१	अति.२०।४७	वि. २२।२२	मीन	अहो.	३।१।३१।२७	३३।४५	५।१५	६।४५	२७	२	१८
८ श.	४६।३४	रा. ११।५३	रे. ०६।४६	दि. ६।११	सु. १५।३३	बा. १८।२१	मी ६।४६	दि. ६।११	३।२।२८।२२	३३।४४	५।१५	६।४५	२८	३	१९
९ र.	४४।०३	रा. १०।५३	अ. ८।३१	दि. ८।४०	धृ. १०।३२	तै. १५।१६	मेष	अहो.	३।३।२५।१७	३३।४२	५।१६	६।४४	२९	४	२०
१० चं.	४२।४४	रा. १०।२२	भ. ८।१६	दि. ८।३६	शू. ६।२३	व. १३।२४	मे २३।३४	दि. २।४२	३।४।२२।१८	३३।३९	५।१६	६।४४	३०	५	२१
११ मं.	४२।३९	रा. १०।२१	कृ. ६।१६	दि. ६।०१	ग. ०३।१४	ब. १२।४१	वृष	अहो.	३।५।१९।१९	३३।३६	५।१७	६।४३	३१	६	२२
१२ बु.	४३।५४	रा. १०।५१	रो. ११।३५	दि. ६।५५	वृ. ०१।०५	कौ. १३।१७	वृ ४३।२१	रा. १०।३७	३।६।१६।२०	३३।३४	५।१७	६।४३	१	७	२३
१३ वृ.	४६।१९	रा. ११।५०	मृ. १५।०६	दि. ११।२०	व्या.५६।४४	ग. १५।०७	मिथुन	अहो.	३।७।१३।२१	३३।३२	५।१८	६।४२	२	८	२४
१४ शु.	४६।५२	रा. १।१५	आ. १९।४६	दि. १।१२	ह. ६०।००	वि. १८।०६	मिथुन	अहो.	३।८।१०।२२	३३।३०	५।१८	६।४२	३	९	२५
३० श.	५४।१५	रा. ३।००	पुन. २५।२१	दि. ३।२६	ह. ००।१९	च. २२।०४	मि. ८।५८	दि. ८।५२	३।९।०७।२३	३३।२८	५।१८	६।४२	४	१०	२६

विष्कंभमानं ५२।२७, अशून्यशयनव्रतं, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, **श्रावणे वर्जयेच्छाकम्।**

पञ्चकारंभो दिवा घं. ३ मि. ५४ उ., **सोमवासरव्रतं,** भ. ४।३६ उ., **तुलायां कुजः ४२।४६,** पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां तृतीयायां, (२-३ एको.)।

श्रीगणाधिप ४ व्रतं, भ. ११।३१ या., पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।

पञ्चमीमानं ५४।१८, **मासान्तः, मौना** ५ नाग ५ मनसादेवीपूजनमुत्थापनञ्च, **मधुश्रावणीपूजारंभः।**

कर्के रविः १०।२८ मु. ३० फलं साम्यं, याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घ. ६. मि. २६ यावद्दिने, **पुण्याहः,** याम्यायनारंभः १०।२८ उपरि, द. ति. १०।२८ उ. ५४।३५ या., भ. ५४।३५ उ.।

मासादिः, गं. ५७।४९ उ., भ. २२।२२ या.।

इन्द्रसावर्णिमन्वादिः, पञ्चकान्तो दिवा घं. ६ मि. ११ उ., गं. १२।४९ या., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।

पुष्ये रविः ४१।१७ पुंस्त्रीचचयोगः कुम्भलग्नं छागवाहनं चण्डानाड़ीपतिश्शनिस्तेन वाततापवृष्टियोगः।

सोमवासरव्रतं, भ. १३।२४ उ. ४२।४४ या.।

कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वादश्याम्।

ध्रुवयोगमानं ५८।५४, **दूर्वादलेन पारणं,** पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम्।

प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि, भ. ४६।१९ उ., **मार्गी शनिः ६।१३।**

प्रदोष १४ व्रतं, भ. १८।६ या., दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ चतुर्दश्याम्।

श्रावणी ३० स्नानदानादिः, **देवसावर्णिमन्वादिः, कर्के बुधः** १४।१४, पूर्वास्तो बुधः ४५।५३, पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च।

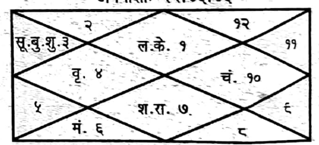
ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ र.	५।२६।३१।४५	२।६।५७।४२	३।५।५७।५७	२।०।१२७।४१	६।२१।१५।१७	०।०२।६।४२
२ चं.	६।००।२।०४	२।११।२६।४६	३।६।११।३४	२।२।३६।५२	६।२१।१४।५२	०।०२।६।३१
३ मं.	६।००।३२।२३	२।१३।०१।५०	३।६।२५।११	२।३।५२।०३	६।२१।१४।२७	०।२।०३।२०
४ बु.	६।०१।०२।४२	२।१४।३३।५४	३।६।३८।४८	२।५।४।१४	६।२१।१४।०२	०।२।००।०९
६ वृ.	६।१।३३।०१	२।१६।५।५८	३।६।५२।२४	२।०६।१९।२५	६।२१।१३।३७	०।१।५९।५८
७ शु.	६।२।३।२०	२।१७।३७।०२	३।७।०६।००	२।०७।२८।३५	६।२१।१३।१३	०।१।५३।४७
८ श.	६।२।३३।३८	२।१९।०९।०५	३।७।१९।३६	२।८।४०।४५	६।२१।१२।४९	०।१।५०।३७
९ र.	६।३।०३।५६	२।२०।४२।०८	३।७।३३।१२	२।९।५२।५५	६।२१।१२।२५	०।१।४७।२७
१० चं.	६।३।३५।४०	२।२२।२४।२१	३।७।४६।४७	२।११।५।३७	६।२१।१२।२१	०।१।४४।१६
११ मं.	६।४।०७।२४	२।२४।०६।३४	३।८।००।२२	२।१२।१८।१८	६।२१।१२।१७	०।१।४१।०५
१२ बु.	६।४।३९।०८	२।२५।४८।४७	३।८।१३।५६	२।१३।३०।५९	६।२१।१२।१३	०।१।३७।५४
१३ वृ.	६।५।१०।५२	२।२७।३१।००	३।८।२७।३०	२।१४।४३।४०	६।२१।१२।११	०।१।३४।४३
१४ शु.	६।५।४२।३६	२।२९।१३।१२	३।८।४१।०४	२।१५।५६।२१	६।२१।१२।२१	०।१।३१।३२
३० श.	६।६।१४।२०	३।००।५५।२४	३।८।५४।३८	२।१७।९।०२	६।२१।१२।४५	०।१।२८।२२

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	४६।५५	१।२३	३।१९	५।३२	७।५०	१०।०६	१२।२१	१४।३८	१६।५५	१९।००	२०।४६	२२।१७	२३।४६
२ चं.	४६।५४	१।१९	३।१५	५।२८	७।४६	१०।०२	१२।१७	१४।३४	१६।५१	१८।५६	२०।४२	२२।१३	२३।४२
३ मं.	४६।५३	१।१५	३।११	५।२४	७।४२	९।५८	१२।१३	१४।३०	१६।४७	१८।५२	२०।३८	२२।०९	२३।३८
४ बु.	४६।५२	१।११	३।०७	५।२०	७।३८	९।५४	१२।०९	१४।२६	१५।४३	१८।४८	२०।३४	२२।०५	२३।३४
६ वृ.	४६।५१	१।०७	३।०३	५।१६	७।३४	९।५०	१२।०५	१४।२२	१६।३९	१८।४४	२०।३०	२२।०१	२३।३०
७ शु.	४६।५१	१।०३	२।५९	५।१२	७।३०	९।४६	१२।०१	१४।१८	१६।३५	१८।४०	२०।२६	२१।५७	२३।२६
८ श.	४६।५१	१।००	२।५६	५।०९	७।२७	९।४३	११।५८	१४।१५	१६।३२	१८।३७	२०।२३	२१।५४	२३।२३
९ र.	४६।५१	०।५६	२।५२	५।०५	७।२३	९।३९	११।५४	१४।११	१६।२८	१८।३३	२०।१९	२१।५०	२३।१९
१० चं.	४६।५०	०।५२	२।४८	५।०१	७।१९	९।३५	११।५०	१४।०७	१६।२४	१८।२९	२०।१५	२१।४६	२३।१५
११ मं.	४६।४९	०।४८	२।४४	४।५७	७।१५	९।३१	११।४६	१४।०३	१६।२०	१८।२५	२०।११	२१।४२	२३।११
१२ बु.	४६।४८	०।४५	२।४१	४।५४	७।१२	९।२८	११।४३	१४।००	१६।१७	१८।२२	२०।०८	२१।३९	२३।०८
१३ वृ.	४६।४७	०।४१	२।३७	४।५०	७।०८	९।२४	११।३९	१३।५६	१६।१३	१८।१८	२०।०४	२१।३५	२३।०४
१४ शु.	४६।४६	०।३७	२।३३	४।४६	७।०४	९।२०	११।३५	१३।५२	१६।०९	१८।१४	२०।००	२१।३१	२३।००
३० श.	४६।४५	०।३३	२।२९	४।४२	७।००	९।१६	११।३१	१३।४८	१६।०५	१८।१०	१९।५६	२१।२७	२२।५६

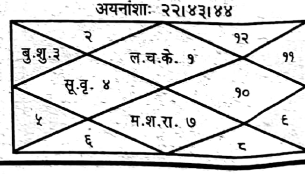
१ रवौ वल्ली ८।३८।५९।४७

अयनांशाः २२।४३।४३



९ रवौ वल्ली ८।३८।५९।५४

अयनांशाः २२।४३।४४



विविधविषयाः- श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थापनं पूजनञ्च कार्यं। **सोमवारव्रतं-** सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्। **प्रदक्षिणविधिः-** एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्। **मांसाभक्षणफलं महाभारते-** मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दिपुराणे- कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तदव्रतं निष्फलं भवेत्। **श्रेष्ठव्रतानि-** ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः। **वृक्षारोपणमन्त्राः-** वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ३० तः पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शनिः १३ तो मार्गी।

वातावरणम् - पक्षादितः सप्तमीं यावद्वायुमेघचारतापखण्डवृष्टयस्ततस्त्रयोदशीं यावत्तापवातमेघचारादयस्ततः पक्षान्तं यावत्तापवातवृष्टयः।

श्रावणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २७।७।२०१४ ई. तः दि. १०।८।१४ ई. या., पश्चिमेकालः। मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः १५ तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घ. प.	रा.घ.प.	घं. मि.	राश्यादिः	घ. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	५९।१२	रा. ५।००	पु. ३१।३५	सं. ५।५७	व. ११२८	कि. २६।४२	कर्क	अहो.	३।१०।०४।२३	३३।२६	५।१९	६।४१	५	११	२७
२ च.	६०।००	अहो	अश्ले.३८।०७	रा. ८।३४	सि. २।५९	ब. ३०।४३	क. ३८।०७	रा. ८।३४	३।११।११३२	३३।२३	५।१९	६।४१	६	१२	२८
२ मं.	०४।१४	दि. ७।२	म. ४४।३०	रा. ११।०८	व्य. ४।३५	कौ. ४।१४	सिंह	अहो.	३।११।५८।४१	३३।२०	५।२०	६।४०	७	१३	२९
३ बु.	०८।५७	दि. ८।५५	पूफ. ५०।२१	रा. ११२८	व. ५।५९	ग. ८।५७	सिंह	अहो.	३।१२।५५।५०	३३।१७	५।२०	६।४०	८	१४	३०
४ बृ.	१३।०१	दि. १०।३३	उफ. ५५।२५	रा. ३।३१	प. ६।५१	वि. १३।१	सि. ६।३७	दि. ८।००	३।१३।५२।५८	३३।१४	५।२१	६।३९	९	१५	३१
५. शु.	१६।०३	दि. ११।४७	ह. ५९।१८	रा. ५।०५	शि. ६।५९	बा. १६।०३	कन्या	अहो.	३।१४।५०।६	३३।११	५।२२	६।३८	१०	१६	१
६ श.	१८।०३	दि. १२।३५	चि. ६०।००	अहो	सि. ६।१४	तै. १८।३	कं. ३०।४१	सं. ५।३८	३।१५।४७।१४	३३।०८	५।२२	६।३८	११	१७	२
७ र.	१८।४२	दि. १२।५२	चि. २।०३	दि. ६।१२	सा. ४।३१	व. १८।४२	तुला	अहो.	३।१६।४४।२२	३३।०६	५।२३	६।३७	१२	१८	३
८ चं.	१८।०२	दि. १२।३६	स्वा. ३।३१	दि. ६।४७	शु. १।४६	ब. १८।२	तु. ४८।४२	रा. १२।५२	३।१७।४१।३१	३३।०३	५।२३	६।३७	१३	१९	४
९ मं.	१६।११	दि. ११।५२	वि. ३।४५	दि. ६।५४	ब्र. ५३।२०	कौ. १६।११	वृश्चिक	अहो.	३।१८।३९।५४	३३।००	५।२४	६।३६	१४	२०	५
१० बु.	१३।१२	दि. १०।४१	अनु २।५०	दि. ६।३२	ऐ. ४७।४९	ग. १३।१२	वृश्चिक	अहो.	३।१९।३६।१०	३२।५७	५।२४	६।३६	१५	२१	६
११ बृ.	९।१५	दि. ९।४३	ज्ये. ०।५६	दि. ५।४७	वै. ४१।३८	वि. ९।१५	वृ. ०।५६	प्रा. ५।४७	३।२०।२६।३३	३२।५४	५।२५	६।३५	१६	२२	७
१२ शु.	४।२८	दि. ७।१३	पूषा ५४।४९	रा. ३।२२	वि. ३४।५१	बा. ४।२८	धनु	अहो.	३।२१।३०।४२	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२३	८
१४ श.	५३।०९	रा. २।४२	उषा. ५०।५८	रा. ११४९	प्री. २७।३५	ग. २६।०७	ध. ८।५१	दि. ८।५८	३।२२।२७।५८	३२।४८	५।२६	६।३४	१८	२४	९
१५ र.	४७।०१	रा. १२।१५	श्र. ४६।५२	रा. १२।१२	आ. २०।०३	वि. २०।५	मकर	अहो.	३।२३।२५।१४	३२।४४	५।२७	६।३३	१९	२५	१०

दोलोत्सवारम्भः। ● शीतला ७ श्रीशीतलापूजनं, गोस्वामी तुलसीदासजयन्ती, म. १८।४२ उ. ४८।२२ या., दक्षिणयात्रा, (८ एको.) ।
सोमवासरव्रतं, गं २७।७ उ. ४२।७ या., त्र्यहोजन्मदिनकृत्यं, चन्द्रदर्शनं मु. १५ सौम्यशृंगं फलं महार्घम् ।
पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
मधुश्रावणीव्रतं पूजनञ्च, श्रीगणेश ४ व्रतं, म. ४०।५९ उ. ।
म. १३।१ या., पूर्वयात्रा हस्ते । ✦ पञ्चकारंभो रात्रौ घं. १२ मि. १२ उ., पूर्वोदितो गुरुः ४०।५०, म. २०।५ या. पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा पूर्णिमायाम्।
अगस्त ८, नाग ५, नागपूजनमनन्तनामा नागराजः पीतवर्णो द्वारमुभयतो गोमयनिर्मितानागाः सिन्दूरदूर्वादुग्धलाजादिभिः पूज्याः, द. ति. १६।३ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा पंचम्याम्।
द. ति. १८।३ या., दक्षिणयात्रा सप्तम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, (७ एको.) ।
आश्लेषायां रविः ४१।५८ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगो मीनलग्नं महिषवाहनं वातानाड़ीपतिः सूर्यस्तेन वायुतापवृष्टियोगः, ●
शुक्लयोगमानं ५६।१४, सोमवासरव्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्, (९ एको.) ।
पश्चिमयात्रानुराधायाम् ।
म. ४१।१३ उ., कर्के शुक्रः २२।२३, गं. ५४।५६ उ., पश्चिमयात्रा। ☆ पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा।
मूलमानं ५७।१७, पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, पञ्चदिनात्मकदोलोत्सवारंभः, म. ९।१५ या., गं. ९।५६ या., ☆
त्रयोदशीमानं ५४।३७, श्रीधर १२ दूर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढ़े त्रयोदश्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, म. ५३। ६ उ. ।
श्रावणी १५ स्नानदानादिः, उपाकर्म, संस्कृतदिवसः, दोलोत्सवान्तः, हयग्रीवावतारः, रक्षाबन्धनं दिवा घं. १ मि. २६ उ., ✦

१ रवौ वल्ली ८।३६।०।०१
अयनांशाः २२।४३।४५

- २
- शु. ३
- ल.के. १
- १२
- ११
- सू.चं.बु.वृ. ४
- १०
- ५
- मं.श.रा. ७
- ९
- ६
- ८

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।						दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्													
	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	६।६।४६।०३	३।२।३७।३६	३।६।०८।१२	२।१८।२१।४३	६।२१।१३।२५	०।११२५।१२	४६।४३	०।२९	२।२५	४।३८	६।५६	९।१२	११।२७	१३।४४	१६।०१	१८।०६	१९।५२	२१।२३	२२।५२
२ चं.	६।७।१९।१७	३।४।२५।२०	३।६।२१।५१	२।१९।३४।२५	६।२१।१४।३४	०।११२२।०९	४६।४१	०।२५	२।२१	४।३४	६।५२	९।०८	११।२३	१३।४०	१५।५७	१८।०२	१९।४८	२१।१९	२२।४८
२ मं.	६।७।५२।३१	३।६।१३।०४	३।६।३५।३०	२।२०।४७।०७	६।२१।१५।४३	०।१।१८।५०	४६।३९	०।२१	२।१७	४।३०	६।४८	९।०४	११।१९	१३।३६	१५।५३	१७।५८	१९।४४	२१।१५	२२।४४
३ बु.	६।८।२५।४५	३।८।००।४८	३।६।४९।०९	२।२१।५९।४९	६।२१।१६।५२	०।१।१५।३९	४६।३७	०।१७	२।१३	४।२६	६।४४	९।००	११।१५	१३।३२	१५।४९	१७।५४	१९।४०	२१।११	२२।४०
४ बृ.	६।८।५८।५८	३।९।४८।३२	३।१०।२।४८	२।२३।१२।३०	६।२१।१८।०१	०।१।१२।२८	४६।३६	०।१४	२।१०	४।२३	६।४१	८।५७	११।१२	१३।२९	१५।४६	१७।५१	१९।३७	२१।०८	२२।३७
५ शु.	६।९।३२।११	३।११।३६।१६	३।१०।१६।२७	२।२४।२५।११	६।२१।१९।१०	०।१।९।१७	४६।३५	०।१०	२।०६	४।१९	६।३७	८।५३	११।०८	१३।२५	१५।४२	१७।४७	१९।३३	२१।०४	२२।३३
६ श.	६।१०।५।२४	३।१३।२३।५९	३।१०।३०।०५	२।२५।३७।५२	६।२१।२०।१९	०।१।६।०७	४६।३४	०।०६	२।०२	४।१५	६।३३	८।४९	११।०४	१३।२१	१५।३८	१७।४३	१९।२९	२१।००	२२।२९
७ र.	६।१०।३८।३७	३।१५।११।४२	३।१०।४३।४३	२।२६।५०।३३	६।२१।२१।२९	०।१।२।५७	४६।३३	०।०२	१।५८	४।११	६।२९	८।४५	११।००	१३।१७	१५।३४	१७।३९	१९।२५	२०।५६	२२।२५
८ चं.	६।११।११।०३	३।१७।०१।४२	३।१०।५७।१८	२।२८।०३।२७	६।२१।२३।०९	०।०।५९।४६	४६।३१	२३।५८	१।५४	४।०७	६।२५	८।४१	१०।५६	१३।१३	१५।३०	१७।३५	१९।२१	२०।५२	२२।२१
९ मं.	६।११।४७।२९	३।१८।५१।४१	३।११।१०।५२	२।२९।१६।२१	६।२१।२४।४९	०।०।५६।३५	४६।२९	२३।५४	१।५०	४।०३	६।२१	८।३७	१०।५२	१३।०९	१५।२६	१७।३१	१९।१७	२०।४८	२२।१७
१० बु.	६।१२।२१।५५	३।२०।४१।४०	३।११।२४।२६	३।००।२९।१४	६।२१।२६।२९	०।०।५३।२४	४६।२७	२३।५१	१।४७	४।००	६।१८	८।३४	१०।४९	१३।०६	१५।२३	१७।२८	१९।१४	२०।४५	२२।१४
११ बृ.	६।१२।५६।२०	३।२२।३१।३९	३।११।३८।००	३।१।४२।०७	६।२१।२८।०९	०।०।५०।१३	४६।२५	२३।४७	१।४३	३।५६	६।१४	८।३०	१०।४५	१३।०२	१५।१९	१७।२४	१९।१०	२०।४१	२२।१०
१२ शु.	६।१३।३०।४५	३।२४।२१।३८	३।११।५१।३४	३।२।५५।००	६।२१।२९।४९	०।०।४७।०२	४६।२४	२३।४३	१।३९	३।५२	६।१०	८।२६	१०।४१	१२।५८	१५।१५	१७।२०	१९।०६	२०।३७	२२।०६
१४ श.	६।१४।५।१०	३।२६।११।३७	३।१२।५।०८	३।४।०७।५३	६।२१।३१।२८	०।०।४३।५१	४६।२३	२३।३९	१।३५	३।४८	६।०६	८।२२	१०।३७	१२।५४	१५।११	१७।१६	१९।०२	२०।३३	२२।०२
१५ र.	६।१४।३९।३५	३।२८।०१।३६	३।१२।१८।४२	३।५।२०।४६	६।२१।३३।०७	०।०।४०।४१	४६।२२	२३।३५	१।३१	३।४४	६।०२	८।१८	१०।३३	१२।५०	१५।०७	१७।१२	१८।५८	२०।२९	२१।५८

७ रवौ वल्ली ८।३६।०।०८
अयनांशाः २२।४३।४६

- २
- शु. ३
- ल.के. १
- १२
- ११
- सू.बु.वृ. ४
- १०
- ५
- च.म.श.रा. ७
- ९
- ६
- ८

१५ रवौ वल्ली ८।३६।०।१५
अयनांशाः २२।४३।४७´

- ल. १
- २
- के. १२
- ११
- १०
- सू.वृ.बु.शु. ३
- च. ९
- ४
- मं.श.रा. ६
- ८
- ५
- ७

विविधविषयाः– पञ्चम्यां नागपूजनं- श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः।। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्। **पञ्चम्यां** तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम्। **शकुनम्**– श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्लदलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः। **रक्षासूत्रबन्धनमन्त्रः**– येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल। ग्रहयोगेन **वृष्टिविचारः** – बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

ग्रहस्थितिः – मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः १५ तः पूर्वोदितः ।

वातावरणम् – पक्षाद्यन्तभागयोर्मेघचारवातवृष्टयस्तन्मध्यभागे तापवातखण्डवृष्टयः ।

भाद्रकृष्णपक्षः

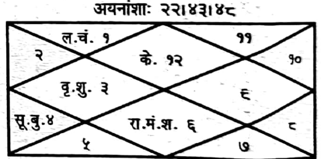
शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ११।८।१४ ई. तः दि. २५।८।१४ ई. या. पश्चिमेकालः, ७ तः उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ३ तः शुद्धः पुनः ७ तोऽशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	दं पं.	घं. मि.	द. पं.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ चं.	४०।५०	रा. ६।४८	घ. ४२।३९	रा. १०।३२	सौ. १२।२२	बा. १४।२६	म. १४।४६	दि. ११।२२	३।२४।२२।४२	३२।४०	५।२८	६।३२	२०	२६	११
२ मं.	३४।४७	सं. ७।२४	श. ३८।१४	रा. ८।४७	शो. ४।४५	तै. ७।४६	कुम्भ	अहो.	३।२५।२०।१०	३२।३७	५।२९	६।३१	२१	२७	१२
३ बु.	२९।०२	स. ५।०६	पूभा. ३४।५३	रा. ७।२६	सु. ५।०९	ब.१।५५	कु २०।४४	दि. १।४६	३।२६।१७।३८	३२।३४	५।२९	६।३१	२२	२८	१३
४ बृ.	२३।५१	दि. ३।०२	उभा. ३१।४२	सं. ६।११	धृ. ४३।३३	बा. २३।५१	मीन	अहो.	३।२७।१५।०६	३२।३१	५।३०	६।३०	२३	२९	१४
५ शु.	१९।२५	दि. १।१६	रे. २६।२३	दि. ५।१५	शू. ३७।३७	तै. १९।२५	मी.२९।२३	सं. ५।१५	३।२८।१२।३३	३२।२८	५।३०	६।३०	२४	३०	१५
६ श.	१५।४८	दि. ११।५०	अ. २७।५०	दि. ४।३९	गं. ३२।२३	व. १५।४८	मेष	अहो.	३।२९।१०।००	३२।२५	५।३१	६।२९	२५	३१	१६
७ र.	१३।१२	दि. १०।४९	भ. २७।२०	दि. ४।२८	वृ. ३८।००	ब. १३।१२	मे. ४२।३०	रा. १०।३२	४।००।७।२७	३२।२२	५।३२	६।२८	२६	१	१७
८ चं.	११।५०	दि. १०।१६	कृ. २८।०२	दि. ४।४५	ध्रु. २४।३६	कौ. ११।५०	वृष	अहो.	४।१।५।०६	३२।१८	५।३२	६।२८	२७	२	१८
९ मं.	११।४२	दि. १०।१४	रो. २९।५९	दि. ५।३३	व्या. २२।१२	ग. ११।४२	वृष	अहो.	४।२।२।४५	३२।१५	५।३३	६।२७	२८	३	१९
१० बु.	१२।५३	दि. १०।४३	मृ. ३३।१३	सं. ६।५१	ह. २०।४६	वि. १२।५३	वृ. १।३६	प्रा. ६।१२	४।३।००।२४	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	४	२०
११ बृ.	१५।१५	दि. ११।४०	आ. ३७।३४	रा. ८।३६	व. २०।१२	बा. १५।१५	मिथुन	अहो.	४।३।५८।०२	३२।०९	५।३४	६।२६	३०	५	२१
१२ शु.	१८।४६	दि. १।०५	पुन. ४२।५६	रा. १०।४५	सि. २०।३२	तै. १८।४६	मि.२९।३६	दि. ४।१३	४।४।५५।४०	३२।०६	५।३५	६।२५	३१	६	२२
१३ श.	२३।०८	दि. २।५०	पु. ४९।०१	रा. १।११	व्य. २१।३१	व. २३।०८	कर्क	अहो.	४।५।५३।१८	३२।०३	५।३५	६।२५	१	७	२३
१४ र.	२८।०७	दि. ४।५१	अश्ले.५५।३०	रा. ३।४८	व. २२।५८	श. २८।०७	क. ५५।३०	रा. ३।४८	४।६।५०।५६	३२।००	५।३६	६।२४	२	८	२४
३० चं.	३३।१४	सं. ६।५४	म. ६०।००	अहो	प. २४।३२	च. ००।४१	सिंह	अहो.	४।७।४८।४९	३१।५६	५।३७	६।२३	३	९	२५

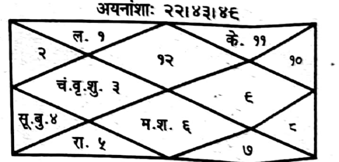
मघायां सिंहे बुधः ५०।५७, पश्चिमायात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे प्रतिपदि।
अतिगण्डयोगमानं ५२।३४, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे । ❋ वातखण्डवृष्टियोगः, मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं जन्मोत्सवश्च, **जयन्तीव्रतम्,** अशुद्धारंभः ३८।२४ उ. ।
कज्जली ३, विशालाक्षीपूजनं, श्रीविनायक ४ व्रतं, बहुलापूजा, भ. १।५५ उ. २९।२ या., पुष्टो गुरुः **शुद्धारंभश्च** ४०।५० उ. ।
गृहारंभः पञ्चम्यामुत्तरभाद्रे, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्।
पञ्चकान्तो दिवा घं. ५ मि. १५ उ., अष्टषष्टिस्वातन्त्र्यदिवसः, **राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं,** द. ति. १९।२५ उ., गं. १७।२३ उ. ३२।२३ या., उत्तरयात्रा पंचम्याम्।
मासान्तः, **हलधर** ६ व्रतं, द. ति. १५।४८ या., भ. १५।४८ उ. ४४।३० या., (६–७ एको.)।
मघायां सिंहे रविः ३८।२४ मु. ३० फलं साम्यं विष्णुपदीसंक्रांतिपुण्यकालो घं. १२ मि.० उपरिदिने, **पुण्याहः,** पुंस्त्रीचंचंयोगो मीनलग्नं मण्डूकवाहनं चण्डानाड़ीपतिश्शनिस्तेन ❋
मासादिः, **कृष्णाष्टमीव्रतं,** श्रीकृष्णपूजनोत्सवः।
कृष्णाष्टमीव्रतपारणं, द. ति. ११।४२ उ., भ. ४२।१७ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा नवम्याम्।
द. ति. १२। ५३ या., भ. १२।५३ या., उत्तरां विना यात्रैकादश्यां मृगशिरसि।
जया ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ, (१२ एको.)।
प्रदोष १३ व्रतं, कुष्माण्डेन पारणं, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
प्रदोष १४ व्रतं, बाबागणिनाथजयन्त्युत्सवः, दुर्भर १४, श्रीभैरवपूजनं, द्वापरयुगादिः, भ. २३।८ उ. ५५।३८ या., **कन्यायां राहुर्मीनेकेतुश्च** ३३।४४, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, (१३ एको.)।
रविव्रतं, गं. ४४।३० उ. ५९।३० या. ।
भाद्री ३० कुशी ३० स्नानदानादिः, **कुशोत्पाटनं,** सोमवारीव्रतम् ।

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।						दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्												
	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ चं.	६।१५।१५।२२	३।२९।५१।३२	३।१२।३२।१४	३।०६।३३।५७	६।२१।३५।४०	०।००।३७।३०	४६।२०	२३।३१	१।२७	३।४०	५।५८	८।१४	१०।२९	१२।४६	१५।०३	१७।०८	१८।५४	२०।२५	२१।५४
२ मं.	६।१५।५१।०८	४।०१।४१।२८	३।१२।४५।४६	३।०७।४७।०८	६।२१।३८।१३	०।००।३४।१९	४६।१८	२३।२८	१।२४	३।३७	५।५५	८।११	१०।२६	१२।४३	१५।००	१७।०५	१८।५१	२०।२२	२१।५१
३ बु.	६।१६।२६।५४	४।३।३१।२४	३।१२।५९।१८	३।९।००।१८	६।२१।४०।४६	०।०।३१।०८	४६।१६	२३।२४	१।२०	३।३३	५।५१	८।०७	१०।२२	१२।३९	१४।५६	१७।०१	१८।४७	२०।१८	२१।४७
४ बृ.	६।१७।०२।४०	४।५।२१।२०	३।१३।१२।५०	३।१०।१३।२८	६।२१।४३।१९	०।०।२७।५७	४६।१४	२३।२०	१।१६	३।२९	५।४७	८।०३	१०।१८	१२।३५	१४।५२	१६।५७	१८।४३	२०।१४	२१।४३
५ शु.	६।१७।३८।२६	४।७।११।१६	३।१३।२६।२२	३।११।२६।३८	६।२१।४५।५२	०।०।२४।४६	४६।१३	२३।१६	१।१२	३।२५	५।४३	७।५९	१०।१४	१२।३१	१४।४८	१६।५३	१८।३९	२०।१०	२१।३९
६ श.	६।१८।१४।१२	४।९।०१।१२	३।१३।३९।५३	३।१२।३९।४८	६।२१।४८।२४	०।००।२१।३६	४६।१२	२३।१२	१।०८	३।२१	५।३९	७।५५	१०।१०	१२।२७	१४।४४	१६।४९	१८।३५	२०।०६	२१।३५
७ र.	६।१८।४९।५८	४।१०।५१।०७	३।१३।५३।२४	३।१३।५२।५८	६।२१।५०।५६	०।०।१८।२६	४६।११	२३।०८	१।०४	३।१७	५।३५	७।५१	१०।०६	१२।२३	१४।४०	१६।४५	१८।३१	२०।०२	२१।३१
८ च.	६।१९।२६।२९	४।१२।३७।४८	३।१४।०६।३७	३।१५।६।२६	६।२१।५४।०४	०।०।१५।१५	४६।०९	२३।०५	१।०१	३।१४	५।३२	७।४८	१०।०३	१२।२०	१४।३७	१६।४२	१८।२८	१९।५९	२१।२८
९ मं.	६।२०।०३।००	४।१४।२४।२९	३।१४।१९।५०	३।१६।१९।५४	६।२१।५७।१२	०।०।१२।०४	४६।०७	२३।०१	०।५७	३।१०	५।२८	७।४४	६।५९	१२।१६	१४।३३	१६।३८	१८।२४	१९।५५	२१।२४
१० बु.	६।२०।३९।३१	४।१६।११।१०	३।१४।३३।०३	३।१७।३३।२२	६।२२।००।२०	०।०।८।५३	४६।०५	२२।५७	०।५३	३।०६	५।२४	७।४०	६।५५	१२।१२	१४।२९	१६।३४	१८।२०	१९।५१	२१।२०
११ बृ.	६।२१।१६।२१	४।१७।५७।५१	३।१४।४६।१६	३।१८।४९।५०	६।२२।०३।२८	०।०।५।४२	४६।०३	२२।५४	०।५०	३।०३	५।२१	७।३७	६।५२	१२।०९	१४।२६	१६।३१	१८।१७	१९।४८	२१।१७
१२ शु.	६।२१।५२।३१	४।१९।४४।३१	३।१४।५९।२९	३।२०।००।१७	६।२२।०६।३५	०।०।२।३१	४६।०२	२२।५०	०।४६	२।५९	५।१७	७।३३	६।४८	१२।०५	१४।२२	१६।२७	१८।१३	१९।४४	२१।१३
१३ श.	६।२२।२९।०१	४।२१।३१।११	३।१५।१२।४१	३।२१।१३।४४	६।२२।९।४२	११।२९।५९।२१	४६।०१	२२।४६	०।४२	२।५५	५।१३	७।२९	६।४४	१२।०१	१४।१८	१६।२३	१८।०९	१९।४०	२१।०९
१४ र.	६।२३।०५।३१	४।२३।१७।५१	३।१५।२५।५३	३।२२।२७।११	६।२२।१२।४९	११।२९।५६।११	४६।००	२२।४३	०।३९	२।५२	५।१०	७।२६	६।४१	११।५८	१४।१५	१६।२०	१८।०६	१९।३७	२१।०६
३० च.	६।२३।४३।१४	४।२४।५८।४५	३।१५।३८।५७	३।२३।४०।४९	६।२२।१६।४२	११।२९।५३।००	४५।५८	२२।३९	०।३५	२।४८	५।०६	७।२२	६।३७	११।५४	१४।११	१६।१६	१८।०२	१९।३३	२१।०२

७ रवौ वल्ली ८।३९।०।२२
अयनांशाः २२।४३।४८



१४ रवौ वल्ली ८।३९।०।२९
अयनांशाः २२।४३।४९



विविधविषयाः– भाद्रकृष्णाष्टम्यां **श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्।** तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां **कुशोत्पाटनमन्त्रः–** कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा । देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।। **वर्ज्यकुशाः–** चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।। **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि** मात्स्ये- कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः। **श्राद्धे प्रशस्तानि–** उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्त पवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः।। **महिष्यादिप्रसवदोषः–** माघे बुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति।

ग्रहस्थितिः – मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ।

वातावरणम् – पक्षाद्यन्तभागयोः वायुमेघचारवृष्टयस्तन्मध्यभागे तापवातखण्डवृष्टयः ।

भाद्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २६।८।१४ ई. तः दि. ९।९।१४ ई. या., उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

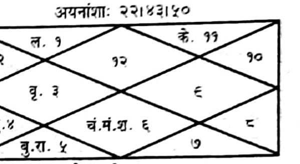
तिथयः दिनानि	तिथयः द. पं.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. पं.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ मं.	३८।०१	रा. ८।४६	म. ०१।५८	दि. ६।२४	शि. २५।५५	कि. ५।३८	सिंह	अहो	४।८।४६।४२	३१।५२	५।३८	६।२२	४	१०	२६
२ बु.	४२।१३	रा. १०।३१	पूफ. ७।५७	दि. ८।४६	सि. २६।५०	वा.१०।०७	सिं २४।१६	दि. ३।२०	४।९।४४।३५	३१।४८	५।३८	६।२२	५	११	२७
३ बृ.	४५।२४	रा. ११।४६	उफ. १३।१३	दि. १०।५६	सा. २७।०५	तै. १३।४६	कन्या	अहो	४।१०।४२।२८	३१।४४	५।३६	६।२१	६	१२	२८
४ शु.	४७।२८	रा. १२।३६	ह. १७।२१	दि. १२।३६	शु. २६।२५	व. १६।२६	कं.४८।५२	रा. ११३	४।११।४०।२१	३१।४०	५।४०	६।२०	७	१३	२६
५ श.	४८।१६	रा. १२।५८	चि. २०।२३	दि. १।४६	शु. २४।५२	ब. १७।५२	तुला	अहो	४।१२।३८।१४	३१।३७	५।४१	६।१६	८	१४	३०
६ र.	४७।४३	रा. १२।४६	स्वा. २२।०८	दि. २।३२	ब्र. २२।१८	कौ. १८।००	तुला	अहो	४।१३।३६।०६	३१।३४	५।४१	६।१६	६	१५	३१
७ च.	४५।५६	रा. १२।०६	वि. २२।३६	दि. २।४६	ऐ. १८।४२	ग. १६।५१	तु. ७।३२	कि. ८।४३	४।१४।३४।११	३१।३०	५।४२	६।१८	१०	१६	१
८ मं.	४३।०७	रा. १०।५८	अनु. २१।५८	दि. २।३०	वै. १४।०६	वि. १४।३३	वृश्चिक	अहो	४।१५।३२।१६	३१।२६	५।४३	६।१७	११	१७	२
६ बु.	३६।१५	रा. ६।२६	ज्ये. २०।१६	दि. १।५०	वि. ८।४५	बा. ११।११	वृ. २०।१६	कि. १।५०	४।१६।३०।२१	३१।२२	५।४४	६।१६	१२	१८	३
१० बृ	३४।३३	सं. ७।३३	मू. १७।४४	दि. १२।५०	प्री. ०२।४२	तै. ६।५४	धनु	अहो	४।१७।२८।२६	३१।१८	५।४४	६।१६	१३	१६	४
११ शु.	२६।१६	सं. ५।२७	पूषा. १४।२८	दि. ११।३२	सौ. ४८।४५	व. १।५५	ध.२८।३२	स. ५।१०	४।१८।२६।३१	३१।१४	५।४५	६।१५	१४	२०	५
१२ श.	२३।२५	दि. ३।०८	उषा. १०।४३	दि. १०।०३	शो. ४१।१५	वा. २३।२५	मकर	अहो	४।१६।२४।३५	३१।११	५।४६	६।१४	१५	२१	६
१३ र.	१७।१६	दि. १२।४२	श्र. ६।३५	दि. ८।२४	अति. ३३।३१	तै. १७।१६	म. ३४।२८	रा. ७।३३	४।२०।२२।३६	३१।०८	५।४६	६।१४	१६	२२	७
१४ च.	११।११	दि. १०।१५	ध. ०२।२१	दि. ६।४३	सु. २५।४६	व. ११।११	कुम्भ	अहो	४।२१।२०।५६	३१।०४	५।४७	६।१३	१७	२३	८
१५ मं.	०५।१०	दि. ७।५२	पूभा. ५४।२५	रा. ३।३४	धृ. १८।१६	ब. ५।१०	कु. ४०।२३	रा. ६।५७	४।२२।१६।१६	३१।००	५।४८	६।१२	१८	२४	६

- पूर्वयात्रा द्वितीयायाम्।
- पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगं फलं समर्घम्।
- **हरितालिका** (तीज) व्रतं, रुद्रसावर्णिमन्वादिः, वराहावतारः, पश्चिमोदितो बुधः ६।१, कन्यायां बुधः ४५।१, पूर्वयात्रा तृतीयायां हस्ते।
- **चतुर्थीचन्द्रपूजनं** (चौठचन्द्र), गणेशपूजारंभः, **श्रीगणेश ४ व्रतं,** म. १६।२६ उ. ४७।२८ या., पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा।
- ऋषिपंचमी, सप्तर्षिपूजनं पंचगव्यप्राशनञ्च, **मघायां सिंहे शुक्रः** ५४।५२, पश्चिमदक्षिणयात्रा षष्ठ्याम्।
- **पूर्वफल्गुन्यां रविः** २६।५ स्त्रीसूसूयोगो मेषलग्नं मूषकवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन तापवातखण्डवृष्टियोगः, **रविव्रतं, लोलार्क** ६, सूर्यपूजनम्।
- सितम्बर ६, म. ४५।५६ उ., पश्चिमोत्तरयात्राष्टम्याम्।
- **राधाष्टमी,** दूर्वाष्टमी, महालक्ष्मीव्रतारंभः, म. १४।३३ या., पश्चिमयात्रा।
- **याम्यामगस्त्योदयः,** द.ति. ३६।१५ उ., गं. १४।१६ उ. २६।१६ या.।
- आयुष्यमानयोगमानं ५३।१६, द. ति. ३४।३३ या., वृश्चिके कुजः ३६।३१, पूर्वोत्तरयात्रैकादश्याम्।
- **कर्माधर्मा** ११ व्रतं सर्वेषां, हरेः पार्श्वपरिवर्त्तनं, म. १।५५ उ. २६।१६ या., पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
- वामन १२, वामनावतारः, कुष्माण्डेन पारणं, **इन्द्रपूजारंभः, प्रदोष** १३ व्रतं, पूर्वा विना यात्रा श्रवणायाम्।
- **प्रदोष** १४ व्रतं, रविव्रतं, **पञ्चकारंभो** दिवा घं. ८ मि. २४ उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा त्रयोदश्याम्, (१३-१४ एको.)।
- शतभिषामानं ५५।५३, **गणेशविसर्जनं, अनन्त १४** व्रतमनन्तपूजनं तड्डोरकधारणञ्च, म. ११।११ उ. ३८।११ या.।
- **प्रतिपन्मानं** ५४।१७, भाद्री १५ स्नानदानादिः, **अगस्त्यार्घदानं,** श्रीशिवपूजनं, महालयारंभः, पितृपक्षीयपार्वणतर्पणारम्भः, पश्चिमयात्रा पूर्णिमायाम्।

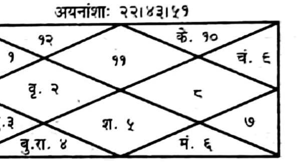
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	६।२४।२०।५७	४।२६।३६।३६	३।१५।५२।०१	३।२४।५४।२६	६।२२।२०।३५	११।२६।४६।४६	४५।५६	२२।३५	०।३१	२।४४	५।०२	७।१८	६।३३	११।५०	१४।०७	१६।१२	१७।५८	१९।२६	२०।५८
२ बु.	६।२४।५८।४०	४।२८।२०।३३	३।१६।५।०५	३।२६।८।०३	६।२२।२४।२८	११।२६।४६।३६	४५।५४	२२।३२	०।२८	२।४१	४।५६	७।१५	६।३०	११।४७	१४।०४	१६।०६	१७।५५	१९।२६	२०।५५
३ बृ.	६।२५।३६।२२	५।००।०१।२७	३।१६।१८।०८	३।२७।२१।४०	६।२२।२८।२१	११।२६।४३।२७	४५।५२	२२।२८	०।२४	२।३७	४।५५	७।११	६।२६	११।४३	१४।००	१६।०५	१७।५१	१९।२२	२०।५१
४ शु.	६।२६।१४।०४	५।१।४२।२१	३।१६।३१।११	३।२८।३५।१७	६।२२।३२।१३	११।२६।४०।१६	४५।५०	२२।२४	०।२०	२।३३	४।५१	७।०७	६।२२	११।३६	१३।५६	१६।०१	१७।४७	१९।१८	२०।४७
५ श.	६।२६।५१।४६	५।३।२३।१४	३।१६।४४।१४	३।२६।४८।५४	६।२२।३६।०५	११।२६।३७।०६	४५।४८	२२।२१	०।१७	२।३०	४।४८	७।०४	६।१६	११।३६	१३।५३	१५।५८	१७।४४	१९।१५	२०।४४
६ र.	६।२७।२६।२८	५।५।४।०७	३।१६।५७।१७	४।१।२।३१	६।२२।३६।५७	११।२६।३३।५६	४५।४७	२२।१७	०।१३	२।२६	४।४७	७।००	६।१५	११।३२	१३।४६	१५।५४	१७।४०	१९।११	२०।४०
७ च.	६।२८।८।०६	५।६।३५।०६	३।१७।१।५८	४।२।१६।१२	६।२२।४४।११	११।२६।३०।४५	४५।४५	२२।१३	०।०६	२।२२	४।४०	६।५६	६।११	११।२८	१३।४५	१५।५०	१७।३६	१९।०७	२०।३६
८ मं.	६।२८।४६।४३	५।८।६।०५	३।१७।२२।३६	४।३।२६।५३	६।२२।४८।२५	११।२६।२७।३४	४५।४३	२२।१०	०।०६	२।१६	४।३७	६।५३	६।०८	११।२५	१३।४२	१५।४७	१७।३३	१९।०४	२०।३३
६ बु.	६।२६।२५।२०	५।६।३७।०४	३।१७।३५।२०	४।४।४३।३४	६।२२।५२।३६	११।२६।२४।२३	४५।४१	२२।०६	०।०२	२।१५	४।३३	६।४६	६।०४	११।२१	१३।३८	१५।४३	१७।२६	१९।००	२०।२६
१० बृ.	७।००।०३।५७	५।११।८।०३	३।१७।४८।०१	४।५।५७।१४	६।२२।५६।५३	११।२६।२१।१२	४५।३६	२२।०२	२३।५८	२।११	४।२६	६।४५	६।००	११।१७	१३।३४	१५।३६	१७।२५	१८।५६	२०।२५
११ शु.	७।००।४२।३४	५।१२।३८।०२	३।१८।०।४२	४।७।१०।५४	६।२३।०१।०७	११।२६।१८।०१	४५।३७	२१।५६	२३।५५	२।०८	४।२६	६।४२	८।५७	११।१४	१३।३१	१५।३६	१७।२२	१८।५३	२०।२२
१२ श.	७।१।२१।११	५।१४।१०।०१	३।१८।१३।२३	४।८।२४।३४	६।२३।५।२१	११।२६।१४।५०	४५।३५	२१।५५	२३।५१	२।०४	४।२२	६।३८	८।५३	११।१०	१३।२७	१५।३२	१७।१८	१८।४६	२०।१८
१३ र.	७।१।५६।४८	५।१५।४१।००	३।१८।२६।०४	४।६।३८।१४	६।२३।६।३६	११।२६।११।४०	४५।३४	२१।५१	२३।४७	२।००	४।१८	६।३४	८।४६	११।०६	१३।२३	१५।२८	१७।१४	१८।४५	२०।१४
१४ चं.	७।२।३६।०५	५।१६।५६।३२	३।१८।३८।२८	४।१०।५२।१८	६।२३।१४।२५	११।२६।८।२६	४५।३२	२१।४८	२३।४४	१।५७	४।१५	६।३१	८।४६	११।०३	१३।२०	१५।२५	१७।११	१८।४२	२०।११
१५ मं.	७।३।१८।२२	५।१८।१२।०४	३।१८।५०।५१	४।१२।६।२२	६।२३।१६।१४	११।२६।५।१८	४५।३०	२१।४४	२३।४०	१।५३	४।११	६।२७	८।४२	१०।५६	१३।१६	१५।२१	१७।०७	१८।३८	२०।०७

६ रवौ वल्ली ८।३६।०।३६
अयनांशाः २२।४३।५०



१३ रवौ वल्ली ८।३६।०।४३
अयनांशाः २२।४३।५१



विविधविषयाः- चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रं च **पश्येत्तन्मन्त्रः-** सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः। **प्रार्थनामन्त्रस्च-** दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्। एकादश्यां विष्णोः **पार्श्वपरिवर्तनमन्त्रः-** प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सिते ह्यनि। कटिदानं मर्वोद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।। **अनन्तधारणमन्त्रः-** अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते। **अगस्त्यार्घदानमन्त्रः-** कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। **प्रार्थनामन्त्रः-** आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ।।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ३ तः पश्चिमोदितः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोः मेघच्छायावातवृष्टयस्तन्मध्यभागे मेघचारतापखण्डवृष्टयः ।

आश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. १०।९।१४ ई. तः दि. २४/९/१४ ई. या., उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ९ तः शुद्धः, १३ तोऽशुद्धः, वर्षर्तुः, ९ तः शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम् ।

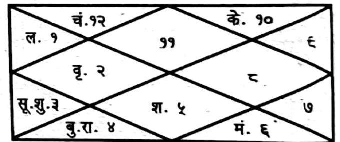
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	दं पं.	घं. मि.	द. पं.	घं मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
२ बु.	५४।१९	रा. ०३।३३	उभा. ५१।०७	रा. २।१६	शू. ११।००	तै. २६।५३	मीन	अहो.	४।२३।१७।३९	३०।५६	५।४९	६।११	१९	२५	१०
३ बृ	४६।५३	रा. ११४७	रे. ४८।३१	रा. ११।१४	गं. ४।१३	व. २२।६	मी. ४८।३१	रा. ११।१४	४।२४।१५।५९	३०।५२	५।५०	६।१०	२०	२६	११
४ शु.	४६।४३	रा. १२।३१	अ. ४६।४३	रा. १२।१९	ध्रु. ५२।३५	ब. १८।१८	मेष	अहो.	४।२५।१४।१८	३०।४८	५।५०	६।१०	२१	२७	१२
५ श.	४३।४२	रा. ११।२०	भ. ४५।५८	रा. १२।१४	व्या. ४७।५७	कौ. १५।१३	मेष	अहो.	४।२६।१२।३७	३०।४४	५।५१	६।९	२२	२८	१३
६ र.	४२।२०	रा. १०।४८	कृ. ४६।२४	रा. १२।२६	ह. ४४।१०	ग. १३।०१	मे. ११०४	प्रा. ६।१८	४।२७।१०।५६	३०।४०	५।५२	६।८	२३	२९	१४
७ च.	४२।१३	रा. १०।४६	रो. ४८।०३	रा. ११०६	व. ४१।२४	वि. १२।१६	वृष	अहो.	४।२८।९।३२	३०।३६	५।५३	६।०७	२४	३०	१५
८ मं.	४३।२५	रा. ११।१६	मृ. ५०।५८	रा. २।१७	सि. ३९।३७	बा. १२।४९	वृ. १९।३१	दि. ११४२	४।२९।०८।०७	३०।३२	५।५४	६।०६	२५	३१	१६
९ बु.	४५।४७	रा. १२।१३	आ. ५५।००	रा. ३।५४	व्य. ३८।४८	तै. १४।३४	मिथुन	अहो.	५।००।६।४२	३०।२८	५।५४	६।०६	२६	१	१७
१० बृ.	४९।२१	रा. ११३९	पुन. ६०।००	अहो.	व. ३८।५२	व. १७।३४	मि.२७।३५	स. ४।५७	५।१।५।१७	३०।२४	५।५५	६।०५	२७	२	१८
११ शु.	५३।४५	रा. ३।२६	पुन. ००।१०	प्रा. ६।००	प. ३९।३९	ब. २१।३३	कर्क	अहो.	५।२।३।५२	३०।२०	५।५६	६।०४	२८	३	१९
१२ श.	५८।४७	रा. ५।२८	पु. ०९।०५	दि. ८।२३	शि. ४०।५५	कौ. २९।१६	कर्क	अहो.	५।३।२।२७	३०।१६	५।५७	६।३	२९	४	२०
१३ र.	६०।००	अहो.	अश्ले.१२।३०	दि. १०।५८	सि. ४२।२५	ग. ३१।२२	क. १२।३०	दि. १०।५८	५।४।१।२	३०।१२	५।५८	६।०२	३०	५	२१
१३ चं.	०३।५७	दि. ७।३३	म. १८।५९	दि. ११३४	सा. ४३।४८	व. ३।५७	सिंह	अहो.	५।४।५९।५३	३०।०८	५।५८	६।०२	३१	६	२२
१४ मं.	०८।५३	दि. ९।३२	पूफ. २५।०५	दि. ४।०१	शु. ४४।४७	श. ८।५३	सिं.४१।२६	रा. १०।३३	५।५।५८।४४	३०।०४	५।५९	६।०१	१	७	२३
३० बु.	१३।०९	दि. ११।१६	उफ. ३०।३१	सं. ६।१२	शु. ४५।०९	ना. १३।९	कन्या	अहो.	५।६।५७।३५	३०।००	६।००	६।०	२	८	२४

(अं. १०) पश्चिमयात्रा रेवत्यां द्वितीयायाम्। ❋ पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा तृतीयायाम्।
(अं. ११) वृद्धियोगमानं ५३।५१, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १ मि. १४ उ., **इन्द्रविसर्जनं**, गं. ३६।३१ उ. ५१।३१ या., भ. २२।६ उ. ४६।५३ या., ❋
(अं. १२) **एकदन्त** ४ व्रतं, पश्चिमां विनायात्राश्विन्याम्।
(अं. १३) ।।००।।
(अं. १४) **उत्तरफल्गुन्यां रविः** १३।३२ पुंस्त्रीसूचंयोगो वृश्चिकलग्नमश्ववाहनञ्चण्डानाडीपतिशशनिस्तेन वायुतापखण्डवृष्टियोगः, रविव्रतं, भ. ४२।२० उ., **पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।**
(अं. १५) स्त्रीणां विशिष्टभोजनं सप्तम्यामेव, भ. १२।१६ या., दक्षिणयात्राष्टम्यां रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।
(अं. १६) मासान्तः, महालक्ष्मीव्रतं, **जीमूतवाहनव्रतं** (जितिया)। ❁ **विश्वकर्मार्चा**, अन्वष्टकाश्राद्धं, **शुद्धारंभः** ३८।२८ उपरि।
(अं. १७) **कन्यायां रविः** ३८।२८ मु. १५ फलं महार्घं, षडशीतिसंक्रान्ति पुण्यकालो घं. १२ मि.० उपरिदिने, पुण्याहः, **मातृनवमी**, महालक्ष्मीव्रत- जीमूतवाहनव्रतपारणं, ❁
(अं. १८) मासादिः, भ. १७।३४ उ. ४६।२१ या.।
(अं. १९) **इन्दिरा** ११ व्रतं सर्वेषां, उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रैकादश्याम्।
(अं. २०) गुडेन पारणं, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
(अं. २१) **प्रदोष** १३ व्रतं, गं. ११३० उ. १६।३० या., त्र्यहोजन्मदिनकृत्यं, तुलायां बुधः २३।३२।
(अं. २२) **प्रदोष** १४ व्रतं, शस्त्रादिहतानां श्राद्धं, भ. ३।५७ उ. ३६।२५ या., क्षीणः **शुक्रः अशुद्धारंभश्च** ३३।२२ उपरि।
(अं. २३) पूर्वयात्रा चतुर्दश्याम्।
(अं. २४) **महालया** ३०, पितृपक्षीयतर्पणान्तः, आश्विनी ३० स्नानदानादिः, **कन्यायां शुक्रः** १३।२५, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।

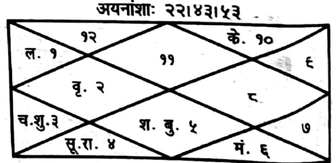
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
२ बु.	७।३।५७।३९	५।१९।२७।३६	३।१९।३।१४	४।१३।२०।२६	६।२३।२४।०३	११।२६।२।०७	४५।२८	२१।४१	२३।३७	११५०	४।०८	६।२४	८।३६	१०।५६	१३।१३	१५।१८	१७।०४	१८।३५	२०।०४
३ बृ.	७।४।३६।५६	५।२०।४३।०८	३।१९।१५।३७	४।१४।३४।३०	६।२३।२८।५१	११।२८।५८।५६	४५।२६	२१।३७	२३।३३	११४६	४।०४	६।२०	८।३५	१०।५२	१३।०९	१५।१४	१७।००	१८।३१	२०।००
४ शु	७।५।१६।१३	५।२१।५८।३९	३।१९।२८।००	४।१५।४८।३४	६।२३।३३।३९	११।२८।५५।४५	४५।२४	२१।३३	२३।२९	११४२	४।००	६।१६	८।३१	१०।४८	१३।०५	१५।१०	१६।५६	१८।२७	१९।५६
५ श.	७।५।५५।३०	५।२३।१४।१०	३।१९।४०।२३	४।१७।०२।३८	६।२३।३८।२७	११।२८।५२।३२	४५।२२	२१।२९	२३।२५	११३८	३।५६	६।१२	८।२७	१०।४४	१३।०१	१५।०६	१६।५२	१८।२३	१९।५२
६ र.	७।६।३४।४७	५।२४।२९।४१	३।१९।५२।४६	४।१८।१६।४२	६।२३।४३।१५	११।२८।४९।२५	४५।२०	२१।२६	२३।२२	११३५	३।५३	६।०९	८।२४	१०।४१	१२।५८	१५।०३	१६।४९	१८।२०	१९।४९
७ चं.	७।७।१४।४९	५।२५।१९।२८	३।२०।४।३६	४।१९।३०।५६	६।२३।४८।४२	११।२८।४६।१४	४५।१८	२१।२२	२३।१८	११३१	३।४९	६।०५	८।२०	१०।३७	१२।५४	१४।५९	१६।४५	१८।१६	१९।४५
८ मं.	७।७।५४।५१	५।२६।९।१५	३।२०।१६।२५	४।२०।४५।१०	६।२३।५४।०९	११।२८।४३।०३	४५।१६	२१।१८	२३।१४	११२७	३।४५	६।०१	८।१६	१०।३३	१२।५०	१४।५५	१६।४१	१८।१२	१९।४१
९ बु.	७।८।३४।५२	५।२६।५९।०१	३।२०।२८।१४	४।२१।५९।२३	६।२३।५९।३५	११।२८।३९।५२	४५।१४	२१।१४	२३।१०	११२३	३।४१	५।५७	८।१२	१०।२९	१२।४६	१४।५१	१६।३७	१८।०८	१९।३७
१० बृ.	७।९।१४।५३	५।२७।४८।४७	३।२०।४०।०३	४।२३।१३।३६	६।२४।०५।०१	११।२८।३६।४१	४५।१२	२१।११	२३।०७	११२०	३।३८	५।५४	८।९	१०।२६	१२।४३	१४।४८	१६।३४	१८।०५	१९।३४
११ शु.	७।९।५४।५४	५।२८।३८।३३	३।२०।५१।५२	४।२४।२७।४९	६।२४।१०।२७	११।२८।३३।३०	४५।१०	२१।०७	२३।०३	१११९	३।३४	५।५०	८।५	१०।२२	१२।३९	१४।४४	१६।३०	१८।०१	१९।३०
१२ श.	७।१०।३४।५५	५।२९।२८।१९	३।२१।०३।४१	४।२५।४२।०२	६।२४।१५।५३	११।२८।३०।२०	४५।०८	२१।०३	२२।५९	१११२	३।३०	५।४६	८।०१	१०।१८	१२।३५	१४।४०	१६।२६	१७।५७	१९।२६
१३ र.	७।११।१४।५६	६।०।१८।०५	३।२१।१५।३०	४।२६।५६।१५	६।२४।२१।१९	११।२८।२७।१०	४५।०६	२१।००	२२।५६	११०९	३।२७	५।४३	७।५८	१०।१५	१२।३२	१४।३७	१६।२३	१७।५४	१९।२३
१३ चं.	७।११।५५।५०	६।०।३७।४६	३।२१।२६।५२	४।२८।१०।३३	६।२४।२७।२२	११।२८।२३।५९	४५।०४	२०।५६	२२।५२	११०५	३।२३	५।३९	७।५४	१०।११	१२।२८	१४।३३	१६।१९	१७।५०	१९।१९
१४ मं.	७।१२।३६।४४	६।००।५७।२६	३।२१।३८।१४	४।२९।२४।५१	६।२४।३३।२५	११।२८।२०।४८	४५।०२	२०।५३	२२।४९	११०२	३।२०	५।३६	७।५१	१०।८	१२।२५	१४।३०	१६।१६	१७।४७	१९।१६
३० बु.	७।१३।१७।३७	६।०१।१७।०६	३।२१।४९।३६	५।००।३९।०९	६।२४।३९।२८	११।२८।१७।३७	४५।००	२०।४९	२२।४५	०।५८	३।१६	५।३२	७।४७	१०।०४	१२।२१	१४।२६	१६।१२	१७।४३	१९।१२

६ रवौ वल्ली ८।३९।०।५०
अयनांशाः २२।४३।५२



१३ रवौ वल्ली ८।३९।०।५७
अयनांशाः २२।४३।५३



विविधविषयाः– आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थकल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। **हेमाद्रौ**– आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्।। **श्राद्धकालः**– पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्।। **जीमूतवाहनव्रतं भविष्ये**– इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया। हस्तार्के **खञ्जनदर्शनमन्त्राः**– नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।। तद्दर्शनमाकाशपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। **पुनश्च**– अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

ग्रहस्थितिः – मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः।

वातावरणम् – पक्षादिभागे मेघवातखण्डवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धे वातातपस्वल्पवृष्टयः।

आश्विनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २५।६।१४ ई. तः दि. ८।१०।१४ ई. या., उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः दिनानि	तिथयः दं. पं.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. पं.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ वृ.	१६।२६	दि. १२।३७	ह. ३४।५८	रा. ८।००	ब्र. ४४।३८	व. १६।२६	कन्या	अहो.	५।७।५६।२६	२६।५६	६।०१	५।५६	३	९	२५
२ शु.	१८।४१	दि. १।३०	चि. ३८।१८	रा. ६।२१	ऐ. ४३।१८	कौ. १८।४१	कं. ६।३८	दि. ८।४१	५।८।५५।१६	२६।५२	६।०२	५।५८	४	१०	२६
३ श.	१९।३५	दि. १।५२	स्वा. ४०।२१	रा. १०।१०	वै. ४०।५४	ग. १९।३५	तुला	अहो.	५।९।५४।०६	२६।४९	६।०२	५।५८	५	११	२७
४ र.	१९।१०	दि. १।४३	वि. ४१।०९	रा. १०।३१	वि. ३७।३२	वि. १९।१०	तु.२५।५७	दि. ४।२६	५।१०।५२।५६	२६।४६	६।०३	५।५७	६	१२	२८
५ चं.	१७।३२	दि. १।०५	अनु. ४०।४७	रा. १०।२३	प्री. ३७।१०	बा. १७।३२	वृश्चिक	अहो.	५।११।५२।०३	२६।४२	६।०४	५।५६	७	१३	२९
६ मं.	१४।४६	दि. ११।५८	ज्ये ३९।१७	रा. ९।४७	आ. २७।५७	तै. १४।४६	वृ. ३९।१७	रा.९।४७	५।१२।५१।१०	२६।३८	६।०४	५।५६	८	१४	३०
७ बु.	१०।५८	दि. १०।२८	मू. ३७।०२	रा. ८।५४	सौ. २१।५८	व. १०।५८	धनु	अहो.	५।१३।५०।१७	२६।३४	६।०५	५।५५	९	१५	१
८ वृ.	०६।२३	दि. ८।३९	पूषा. ३३।५५	रा. ७।४०	शो. १५।२१	ब. ६।२३	ध.४८।०१	रा. ७।१८	५।१४।४९।२३	२६।३०	६।०६	५।५४	१०	१६	२
९ शु.	०१।१०	दि. ६।३५	उषा. ३०।१६	सं. ६।१३	अति. ८।१२	कौ. १।१०	मकर	अहो.	५।१५।४८।२९	२६।२६	६।०७	५।५३	११	१७	३
११ श.	४९।२३	रा. १।५३	श्र. २६।११	दि. ४।२४	सु. ०।४१	व. २२।२९	म. ५४।४	रा. ०३।४६	५।१६।४७।३५	२६।२२	६।०८	५।५२	१२	१८	४
१२ र.	४३।१९	रा. ११।२८	ध. २१।५७	दि. २।५५	शू. ४५।१०	ब. १६।२१	कुम्भ	अहो.	५।१७।४६।४१	२६।१८	६।०८	५।५२	१३	१९	५
१३ चं.	३७।२०	रा. ९।०५	श. १७।४९	दि. १।१७	ग. ३७।३०	कौ. १०।२०	कु.५९।५४	रा. ५।५६	५।१८।४६।०४	२६।१४	६।०९	५।५१	१४	२०	६
१४ मं.	३१।४१	सं. ६।५०	पूभा. १३।५५	दि. ११।४४	वृ. ३०।०६	ग. ०४।३१	मीन	अहो.	५।१९।४५।२७	२६।१०	६।१०	५।५०	१५	२१	७
१५ बु.	२६।३७	दि. ४।५०	उभा. १०।२७	दि. १०।२२	ध्रु. २३।२५	ब. २६।३७	मीन	अहो.	५।२०।४४।४९	२६।०६	६।११	५।४९	१६	२२	८

- २५: शारदीयनवरात्रारंभः, **कलशस्थापनं,** नवरात्रव्रतारंभः, **श्रीदुर्गापूजनोत्सवः,** दोलारूढाया दुर्गाऽऽगमनफलं महामारीप्रदं, पूर्वास्तः शुक्रः ३३।२२, पूर्वयात्रा, (२ एको.), ○
- २६: **रेमन्तपूजा** दक्षिणयात्रा तृतीयायां, नवरात्रमध्ये प्रतिदिनं कुमारीपूजनं (भोजनं) तदभावेऽष्टम्यामवश्यमेव कर्त्तव्यम् ।
- २७: **हस्ते रविः** ५०।५५ स्त्रीस्त्रीसूसूयोगः कर्कलग्नं छागवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन तापवातखण्डवृष्टियोगः, **श्रीगणेश** ४ व्रतं, भ. ४८।११ उ., वक्री बुधः ४५।०४, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्यां, (३ एको.)।
- २८: भ. १९।१० या., उत्तरयात्रानुराधायाम्। ◐ चन्द्रदर्शनं मु. ३० सौम्यशृंगं फलं साम्यम् ।
- २९: पश्चिमोत्तरयात्रा, (५-६ एको.) ।
- ३०: गजपूजाविल्वाभिमन्त्रणञ्च, गं. ३३।१७ उ. ४८।१७ या., पश्चिमास्तो बुधः ३५।८, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां सप्तम्यां ततः पूर्वयात्रा ।
- १: अक्टूबर १०, पूर्वयात्रा सप्तम्यां, पत्रिकाप्रवेशः, सरस्वत्यावाहनं पूजनञ्च, महारात्रिर्निशापूजा (रात्रिजागरणं), द.ति. १०।५८ उ., भ. १०।५८ उ. ३८।४० या. ।
- २: **महाष्टमी-नवमीव्रतं,** दीक्षाग्रहणं, सन्धिपूजा, द. ति. ६।२३ या., वक्रगत्या कन्यायां बुधः ३४।९ ।
- ३: दशमीमानं ५४।१४, **त्रिशूलिनीपूजा,** अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, यात्रा, नीलकण्ठादिदर्शनं, **नवरात्रव्रतपारणं,** दक्षसावर्णिमन्वादिः, गजवाहनदेव्या गमनफलं वृष्टिप्रदं, पश्चिमांविनायात्राश्रवणायाम्।
- ४: धृतियोगमानं ५२।१८, **पाशांकुशा ११ व्रतं** स्मार्त्तानां, **पञ्चकारंभो** दिवा घं. ४ मि. २४ उ., भ. २२।२९ उ. ४९।२३ या., पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम् ।
- ५: पद्मनाभ १२, गुडेन पारणं, पाशांकुशा ११ व्रतं वैष्णवानाम्।
- ६: **प्रदोष** १३ व्रतं, पश्चिमयात्रा त्रयोदश्यां पूर्वभाद्रे।
- ७: **प्रदोष** १४ व्रतं, **कौमुदी** (कोजागरा) महोत्सवः प्रदोषे घं. ७ मि. २६ यावद्रात्रौ **लक्ष्मीपूजनं,** दीक्षाग्रहणं, भ. ३१।४१ उ. ५९।९ या., पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
- ८: आश्विनी १५ स्नानदानादिः, आदिक**विवाल्मीकिजयन्ती,** गं. ५५।३९ उ., पश्चिमयात्रा रेवत्याम्।

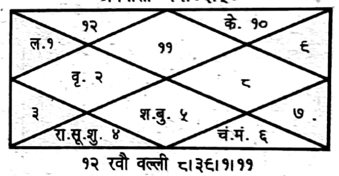
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ वृ.	७।१३।५८।३०	६।०१।३६।४६	३।२२।०।५८	५।०१।५३।२७	६।२४।४५।३१	११।२८।१४।२६
२ शु.	७।१४।३९।२३	६।०१।५६।२६	३।२२।१२।२०	५।३।०७।४५	६।२४।५१।३३	११।२८।११।१५
३ श.	७।१५।२०।१६	६।०१।५६।४८	३।२२।२३।४१	५।४।२२।०३	६।२४।५७।३५	११।२८।०८।०५
४ र.	७।१६।०१।०९	६।१।५०।४८	३।२२।३५।०२	५।५।३६।२०	६।२५।०३।३७	११।२८।४।५५
५ चं.	७।१६।४२।५३	६।१।२१।४९	३।२२।४५।४४	५।६।५०।५०	६।२५।९।४०	११।२८।०१।४४
६ मं.	७।१७।२४।३७	६।०।५२।५०	३।२२।५६।२६	५।८।५।१९	६।२५।१५।४३	११।२७।५८।३३
७ बु.	७।१८।०६।२०	६।००।२३।५१	३।२३।७।८	५।९।१९।४८	६।२५।२१।४६	११।२७।५५।२२
८ वृ.	७।१८।४८।०३	५।२९।५४।५२	३।२३।१७।५०	५।१०।३४।१७	६।२५।२७।४६	११।२७।५२।११
९ शु.	७।१९।२९।४६	५।२९।२५।५४	३।२३।२८।३२	५।११।४८।४६	६।२५।३३।५१	११।२७।४९।००
११ श.	७।२०।११।२९	५।२८।५६।५६	३।२३।३९।१३	५।१३।०३।१५	६।२५।३९।५३	११।२७।४५।४९
१२ र.	७।२०।५३।१२	५।२८।२७।५८	३।२३।४९।५४	५।१४।१७।४४	६।२५।४५।५५	११।२७।४२।३८
१३ चं.	७।२१।३५।१५	५।२७।३९।५६	३।२३।५९।४७	५।१५।३२।२८	६।२५।५२।१९	११।२७।३८।२८
१४ म.	७।२२।१७।१८	५।२६।५१।५४	३।२४।९।४०	५।१६।४७।१२	६।२५।५८।४३	११।२७।३६।१७
१५ बु.	७।२२।५९।२१	५।२६।०३।५२	३।२४।१९।३३	५।१८।०१।५६	६।२६।५।६	११।२७।३३।०६

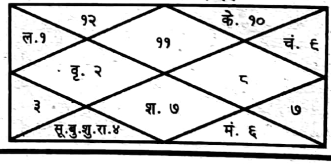
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ वृ.	४४।५८	२०।४५	२२।४१	०।५४	३।१२	५।२८	७।४३	१०।००	१२।१७	१४।२२	१६।०८	१७।३९	१९।०८
२ शु.	४४।५६	२०।४२	२२।३८	०।५१	३।०९	५।२५	७।४०	९।५७	१२।१४	१४।१९	१६।०५	१७।३६	१९।०५
३ श.	४४।५४	२०।३८	२२।३४	०।४७	३।०५	५।२१	७।३६	९।५३	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१९।०१
४ र.	४४।५३	२०।३४	२२।३०	०।४३	३।०१	५।१७	७।३२	९।४९	१२।०६	१४।११	१५।५७	१७।२८	१८।५७
५ चं.	४४।५१	२०।३१	२२।२७	०।४०	२।५८	५।१४	७।२९	९।४६	१२।०३	१४।०८	१५।५४	१७।२५	१८।५४
६ मं.	४४।४९	२०।२७	२२।२३	०।३६	२।५४	५।१०	७।२५	९।४२	११।५९	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।५०
७ बु.	४४।४७	२०।२३	२२।१९	०।३२	२।५०	५।०६	७।२१	९।३८	११।५५	१४।००	१५।४६	१७।१७	१८।४६
८ वृ.	४४।४५	२०।२०	२२।१६	०।२९	२।४७	५।०३	७।१८	९।३५	११।५२	१३।५७	१५।४३	१७।१४	१८।४३
९ शु.	४४।४३	२०।१६	२२।१२	०।२५	२।४३	४।५९	७।१४	९।३१	११।४८	१३।५३	१५।३९	१७।१०	१८।३९
११ श.	४४।४१	२०।१३	२२।०९	०।२२	२।४०	४।५६	७।११	९।२८	११।४५	१३।५०	१५।३६	१७।०७	१८।३६
१२ र.	४४।३९	२०।०९	२२।०५	०।१८	२।३६	४।५२	७।०७	९।२४	११।४१	१३।४६	१५।३२	१७।०३	१८।३२
१३ चं.	४४।३७	२०।०५	२२।०१	०।१४	२।३२	४।४८	७।०३	९।२०	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५९	१८।२८
१४ म.	४४।३५	२०।०२	२१।५८	०।११	२।२९	४।४५	७।००	९।१७	११।३४	१३।३९	१५।२५	१६।५६	१८।२५
१५ बु.	४४।३३	१९।५८	२१।५४	०।०७	२।२५	४।४१	६।५६	९।१३	११।३०	१३।३५	१५।२१	१६।५२	१८।२१

४ रवौ वल्ली ८।३९।१।०४
अयनांशाः २२।४३।५४



१२ रवौ वल्ली ८।३९।१।११
अयनांशाः २२।४३।५५



विविधविषयाः- प्रतिपदि **कलशस्थापनं** ततो देवीपूजनपूर्वकनवदिनं यावच्छप्तशतीस्तोत्रवेदपुराणादिधर्मग्रन्थपाठः मन्त्रजपश्च कर्त्तव्यः। दुर्गागमनयानविचारः- शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता। **तत्फलम्-** गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्।। **विजयदशम्यां देव्या गमनयानफलं-** शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा। **दुर्गापाठमहत्त्वम्-** यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः। स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः। चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात् सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः। **विल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः-** अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदा प्रिय। क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्। **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः-** तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदा प्रिया। क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं **चिनोम्यहम्। नीलकण्ठदर्शनमन्त्राः-** नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नमः। भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय।। खञ्जनदर्शनमन्त्रः- नारायणशरीरोत्थ संवत्सरशुभप्रद। शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तुते।।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ३ तो वक्री ६ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः १ तः पूर्वास्तः।

वातावरणम् - पक्षादिभागे वीतातपच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे खण्डवृष्टिमेघच्छायामहामारीभयादयः ।

कार्त्तिककृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ९।१०।१४ ई. तः दि. २३।१०।१४ ई. या., उत्तरेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः १० तो याम्यगोलः, याम्यायनम्।

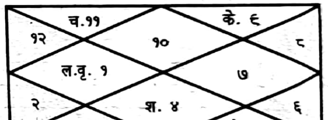
तिथयः दिनानि	तिथयः द. पं.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. पं.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.	कार्त्तिककृष्णपक्षः
१ वृ.	२२।१६	दि. ३।०६	रे. ७।३९	दि. ६।१६	व्या. १६।४०	कौ. २२।१६	मी. ७।३९	दि. ६।१६	५।२१।४४।११	२९।०२	६।१२	५।४८	१७	२३	९	पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्राश्विन्यां, कार्त्तिके यमुनास्नानं महापुण्यप्रदं, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत्, गं १०।३६ या.।
२ शु.	१८।४४	दि. १।४२	अ. ५।४३	दि. ८।२९	ह. १७।५०	ग.१८।४४	मेष	अहो.	५।२२।४३।३३	२८।५८	६।१२	५।४८	१८	२४	१०	भ. ४७।२९ उ.।
३ श.	१६।१३	दि. १२।४२	भ. ४।४०	दि. ८।०५	व. ५।५०	वि. १६।१३	मे. १९।४५	दि. २।०७	५।२३।४२।५५	२८।५४	६।१३	५।४७	१९	२५	११	**चित्रायां रविः** २१।१७ पुंस्त्रीसूचंयोगो मकरलग्नं रासभवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन वाततापखण्डवृष्टियोगः, **कृष्णपिंगला** ४ व्रतं, करक ४, भ. १६।१३ या., (३-४ एको.)।
४ र.	१४।५५	दि. १२।१२	कृ. ४।४६	दि. ८।०८	सि. ०१।४३	बा. १४।५५	वृष	अहो.	५।२४।४२।१७	२८।५०	६।१४	५।४६	२०	२६	१२	व्यतिपातयोगमानं ५६।४८, **पश्चिमास्तः शनिः** २।१, पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्।
५ चं.	१४।५१	दि. १२।११	रो. ६।०६	दि. ८।४१	व. ५६।२५	तै. १४।५१	वृ. ३७।२५	रा. ६।१३	५।२५।४१।५५	२८।४६	६।१५	५।४५	२१	२७	१३	दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा। ▼ मूले धनुषि कुजः ३६।१६, **कार्त्तिकव्रताकाशदीपदानतुलसीव्रतारंभः**।
६ मं.	१६।०६	दि. १२।४४	मृ. ८।४३	दि. ९।४५	प. ५५।११	व. १६।०६	मिथुन	अहो.	५।२६।४१।३३	२८।४२	६।१६	५।४४	२२	२८	१४	भ. १६।०६ उ. ४७।२३ या., (७ एको.)।
७ बु.	१८।३६	दि. १।४२	आ. १२।३१	दि. ११।१६	शि ५५।०४	ब. १८।३६	मिथुन	अहो.	५।२७।४१।११	२८।३८	६।१६	५।४४	२३	२९	१५	द. ति. १८।३६ उ., पश्चिमदक्षिणयात्रा सप्तम्यां पुनर्वसौ।
८ बृ.	२२।१४	दि. ३।११	पुन. १७।२६	दि. १।१५	सि. ५५।३७	कौ. २२।१४	मि. १।१३	प्रा. ६।४६	५।२८।४०।४९	२८।३४	६।१७	५।४३	२४	३०	१६	द. ति. २२।१४ या., पूर्वोदितो बुधः ४०।५, (८ एको.)।
९ शु.	२६।४५	सं. ५।००	पु. २३।१२	दि. ३।३५	सा. ५६।४१	ग. २६।४५	कर्क	अहो.	५।२९।४०।२७	२८।३०	६।१८	५।४२	२५	३१	१७	मासान्तः, भ. ५९।१७ उ.। ❄ सिमरियाधाम्नि कल्पवासारंभः, कार्त्तिकस्नानारंभः, गं. १८।३२ उ. ३३।३२ या., भ. ३१।४६ या., तुलायां शुक्रः २०।१६, ▼
१० श.	३१।४९	रा. ७।०३	अश्ले २९।३२	सं. ६।०८	शु. ५८।०४	वि. ३१।४९	क.२९।३२	सं ६।०८	६।०।४०।०४	२८।२६	६।१९	५।४१	२६	१	१८	**तुलायां रविः** ३।५६ मु. १५ फलं महार्घं, धान्यविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ७ मि. ५३ उ. घं. २ मि. १७ यावद्दिने, **पुण्याहः**, याम्यगोलारंभः ३।५६ उपरि, ❄
११ र.	३७।०७	रा. ९।११	म. ३६।०४	रा. ८।४६	शु. ५९।२५	व. ०४।२८	सिंह	अहो.	६।१।३९।४१	२८।२२	६।२०	५।४०	२७	२	१९	मासादिः, **रंभा** ११ व्रतं सर्वेषां, द. ति. ३७।७ उ.।
१२ चं.	४२।०६	रा. ११।१०	पूफ. ४२।२१	रा. ११।१६	ब्र. ६०।००	कौ. ९।३७	सिं ५८।४६	रा. ५।५०	६।२।३९।३४	२८।१८	६।२०	५।४०	२८	३	२०	गोवत्स १२, विल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, द. ति. ४२।६ या., मार्गी बुधः ९।३४। ❐ अकृतपितृपक्षपार्वणैरवश्यमेव पार्वणं विधेयं, दीक्षाग्रहणं, **कालीपूजा,** निशीथे कालीताराभुवनेश्वरी प्रादुर्भावः।
१३ मं.	४६।२५	रा. १२।५५	उफ. ४७।५८	रा. १।३२	ब्र. ००।२८	ग. १४।१६	कन्या	अहो.	६।३।३९।२७	२८।१४	६।२१	५।३९	२९	४	२१	प्रदोष १३ व्रतं, धन्वन्तरिजयन्ती (धनतेरस), **ब्रह्मवैवर्त्ते**- नारायणांशो भगवान् स्वयं धन्वन्तरिर्महान्। पुरा समुद्रमथने समुत्तस्थौ महादधेः।। भ. ४३।२५ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
१४ बु.	४९।५०	रा. २।१८	ह. ५२।४२	रा. ३।२७	ऐ. ०१।००	वि. १८।०८	कन्या	अहो.	६।४।३९।२०	२८।१०	६।२२	५।३८	३०	५	२२	प्रदोष १४ व्रतं, **हनुमज्जन्मोत्सवः**, हनुमद्ध्वजदानं, वायुपुराणे- कार्त्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां **भौमे** चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः।। भ. १८।८ या.।
३० वृ	५२।०८	रा. ३।१४	चि. ५९।१९	रा. ४।५५	वै ००।४४	च. २०।५९	क. २४।३१	दि. ४।११	६।५।३९।१३	२८।६	६।२३	५।३७	१	६	२३	विष्कंभयोगमानं ५८।५२, कार्त्तिकी ३० स्नानदानादिः, **दीपावली,** सुखरात्रिः प्रदोषे घं. ७ मि. १३ यावद्रात्रौ लक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं पितृविसर्जनञ्च, ❐

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ वृ.	७।२३।४१।२४	५।२५।१५।५१	३।२४।२९।२६	५।१६।१६।४०	६।२६।११।२९	११।२७।२९।५५	४४।३१	१९।५४	२१।५०	००।०३	२।२१	४।३७	६।५२	९।०९	११।२६	१३।३१	१५।१७	१६।४८	१८।१७
२ शु.	७।२४।२३।२७	५।२४।२७।५०	३।२४।३९।१९	५।२०।३१।२४	६।२६।१७।५२	११।२७।२६।४४	४४।२९	१९।५१	२१।४७	००।००	२।१८	४।३४	६।४९	९।०६	११।२३	१३।२८	१५।१४	१६।४५	१८।१४
३ श.	७।२५।५।३०	५।२३।३९।४९	३।२४।४९।११	५।२१।४६।०८	६।२६।२४।१५	११।२७।२३।३४	४४।२७	१९।४७	२१।४३	२३।५९	२।१४	४।३०	६।४५	९।०२	११।१९	१३।२४	१५।१०	१६।४१	१८।१०
४ र.	७।२५।४७।३३	५।२२।५१।४८	३।२४।५९।०३	५।२३।०१।५२	६।२६।३०।३८	११।२७।२०।२४	४४।२५	१९।४४	२१।४०	२३।५३	२।११	४।२७	६।४२	८।५९	११।१६	१३।२१	१५।०७	१६।३८	१८।०७
५ चं.	७।२६।३०।१३	५।२२।२९।०३	३।२५।८।०६	५।२४।१५।४४	६।२६।३७।०७	११।२७।१७।१३	४४।२३	१९।४०	२१।३६	२३।४९	२।०७	४।२३	६।३८	८।५५	११।१२	१३।१७	१५।०३	१६।३४	१८।०३
६ मं.	७।२७।१२।५३	५।२२।०९।१९	३।२५।१७।०९	५।२५।३०।३६	६।२६।४३।३६	११।२७।१४।०२	४४।२१	१९।३६	२१।३२	२३।४५	२।०३	४।१९	६।३४	८।५१	११।०८	१३।१३	१४।५९	१६।३०	१७।५९
७ बु.	७।२७।५५।३३	५।२१।४३।३५	३।२५।२६।११	५।२६।४५।२८	६।२६।५०।०४	११।२७।१०।५१	४४।१९	१९।३३	२१।२९	२३।४२	२।००	४।१६	६।३१	८।४८	११।०५	१३।१०	१४।५६	१६।२७	१७।५६
८ बृ.	७।२८।३८।१३	५।२१।२०।५१	३।२५।३५।१३	५।२८।००।२०	६।२६।५६।३२	११।२७।०७।४०	४४।१७	१९।२९	२१।२५	२३।३८	१।५६	४।१२	६।२७	८।४४	११।०१	१३।०६	१४।५२	१६।२३	१७।५२
९ शु.	७।२९।२०।५२	५।२०।५८।०७	३।२५।४४।१५	५।२९।१५।११	६।२७।०३।००	११।२७।४।२९	४४।१५	१९।२५	२१।२१	२३।३४	१।५२	४।०८	६।२३	८।४०	१०।५७	१३।०२	१४।४८	१६।१९	१७।४८
१० श.	८।०।०३।३१	५।२०।३५।२३	३।२५।५३।१७	६।०।३०।०२	६।२७।९।२८	११।२७।०१।१९	४४।१३	१९।२१	२१।१७	२३।३०	१।४८	४।०४	६।१९	८।३६	१०।५३	१२।५८	१४।४४	१६।१५	१७।४४
११ र.	८।०।४६।१०	५।२०।१२।३९	३।२६।०२।१९	६।१।४४।५३	६।२७।१५।५६	११।२६।५८।०९	४४।११	१९।१७	२१।१३	२३।२६	१।४४	४।००	६।१५	८।३२	१०।४९	१२।५४	१४।४०	१६।११	१७।४०
१२ चं.	८।१।२९।३६	५।२०।१४।०५	३।२६।१०।३४	६।२।५९।५५	६।२७।२२।४७	११।२६।५४।५८	४४।९	१९।१३	२१।०९	२३।२२	१।४०	३।५६	६।११	८।२८	१०।४५	१२।५०	१४।३६	१६।०७	१७।३६
१३ मं.	८।०२।१३।०२	५।२०।३६।४२	३।२६।१८।४९	६।४।१४।५७	६।२७।२९।३८	११।२६।५१।४७	४४।७	१९।०९	२१।०५	२३।१८	१।३६	३।५२	६।०७	८।२४	१०।४१	१२।४६	१४।३२	१६।०३	१७।३२
१४ बु.	८।२।५६।२८	५।२०।५९।१८	३।२६।२७।०४	६।५।२९।५९	६।२७।३६।२९	११।२६।४८।३६	४४।५	१९।०५	२१।०१	२३।१४	१।३२	३।४८	६।०३	८।२०	१०।३७	१२।४२	१४।२८	१५।५९	१७।२८
३० वृ.	८।३।३९।५३	५।२१।२१।५४	३।२६।३५।१९	६।६।४५।०१	६।२७।४३।२०	११।२६।४५।२५	४४।३	१९।०१	२०।५७	२३।१०	१।२८	३।४४	५।५६	८।१६	१०।३३	१२।३८	१४।२४	१५।५५	१७।२४

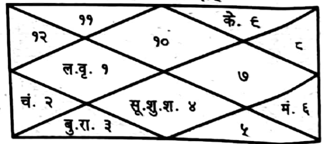
४ रवौ वल्ली ८।३९।१।१८

अयनांशाः २२।४३।५६



११ रवौ वल्ली ८।३९।१।२५

अयनांशाः २२।४३।५७



विविधविषयाः- कार्त्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **प्रातः स्नानमन्त्रः**- कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।। धात्रीमाहात्म्यम्- धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुंक्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्।। धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफलविभूषितः। धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्। **उल्काभ्रमणमन्त्रः**- शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।। **तुलासंक्रमणे आकाशदीपदानफलम्**- तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति।। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः। **दीपदानमन्त्रः** - दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ८ तः पूर्वोदितः १२ तो मार्गी, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ३ तः पश्चिमास्तः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोर्वातमेघचारवृष्टयस्तन्मध्यभागे वातमेघच्छिन्नवृष्टयः।

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २४।१०।१४ ई. तः दि. ६।११।१४ ई. या., उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	दं पं.	घं. मि.	द. पं.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ शु.	५३।०६	रा. ३।३८	स्वा. ५८।४१	रा. ५।५२	प्री. ५७।२७	किं. २२।३७	तुला	अहो.	६।६।३६।०६	२८।०२	६।२४	५।३६	२	७	२४
२ श.	५२।४६	रा. ३।३०	वि. ५६।४५	रा. ६।१८	आ. ५४।१६	बा. २२।५६	तु.४४।२६	रा. १२।१२	६।७।३८।५६	२७।५६	६।२४	५।३६	३	८	२५
३ र.	५१।१३	रा. २।५४	अनु. ५६।३८	रा. ६।१६	सौ. ५०।०८	तै. २२।००	वृश्चिक	अहो.	६।८।३८।५१	२७।५६	६।२५	५।३५	४	६	२६
४ चं.	४८।३१	रा. १।५०	ज्ये. ५८।२४	रा. ५।४८	शो. ४५।०६	व. १६।५२	वृ.५८।२४	रा. ५।४८	६।६।३८।५६	२७।५२	६।२६	५।३४	५	१०	२७
५ मं.	४४।४८	रा. १२।२१	मू. ५६।२१	रा. ४।५८	अति. ३६।१६	ब. १६।४०	धनु	अहो.	६।१०।३६।०७	२७।४६	६।२६	५।३४	६	११	२८
६ बु.	४०।१७	रा. १०।३४	पूषा. ५३।२३	रा. ३।४८	सु. ३२।४५	कौ. १२।३३	धनु	अहो.	६।११।३६।१५	२७।४६	६।२७	५।३३	७	१२	२६
७ वृ.	३५।११	रा. ८।३१	उषा. ४६।४८	रा. २।२२	धृ. २५।३६	ग. ०७।४४	ध. ७।२६	दि. ६।२७	६।१२।३६।२३	२७।४३	६।२७	५।३३	८	१३	३०
८ शु.	२६।२८	सं. ६।१५	श्र. ४५।४६	रा. १२।४८	शू. १८।१२	वि. ०२।२०	मकर	अहो.	६।१३।३६।३१	२७।४०	६।२८	५।३२	६	१४	३१
६ श.	२३।३१	दि. ३।५३	ध. ४१।४०	रा. ११।६	ग. १०।२८	कौ. २३।३१	म. १३।४४	दि. ११।५६	६।१४।३६।३६	२७।३७	६।२६	५।३१	१०	१५	१
१० र.	१७।३०	दि. १।२६	शत. ३७।२८	रा. ६।२८	वृ. ०२।३६	ग. १७।३०	कुम्भ	अहो.	६।१५।३६।४६	२७।३४	६।२६	५।३१	११	१६	२
११ चं.	११।३८	दि. ११।६	पूभा. ३३।२८	रा. ७।४३	व्या. ४७।१५	वि. ११।३८	कु.१६।२८	दि. २।१७	६।१६।४०।०८	२७।३०	६।३०	५।३०	१२	१७	३
१२ मं.	०६।०४	दि. ८।५७	उभा. २६।५३	रा. ६।२८	ह. ३६।५७	बा. ०६।०४	मीन	अहो.	६।१७।४०।३०	२७।२६	६।३१	५।२६	१३	१८	४
१३ बु.	०१।०२	दि. ६।५७	रे. २६।५३	सं. ५।१७	व. ३३।१४	तै. ०१।०२	मी.२६।५३	सं. ५।१७.	६।१८।४०।५२	२७।२२	६।३२	५।२८	१४	१६	५
१५ वृ.	५३।१६	रा. ३।५२	अ. २४।४५	दि. ४।२६	सिं. २७।०६	वि. २५।०३	मेष	अहो.	६।१६।४१।१४	२७।१६	६।३२	५।२८	१५	२०	६

मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्। गोपूजा, **गोवर्धनपूजा**, गोक्रीड़ा, वृषभे औषधिदानं, अन्नकूटः, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं, *

स्वात्यां रविः ४४।५५ स्त्रीस्त्रीसूसूयोगः कर्कलग्नमश्ववाहनं वातानाड़ीपती रविस्तेन वाततापछिन्नवृष्टियोगः, **गोपूजा, गोवर्धनपूजा,** गोक्रीड़ा, वृषभे औषधिदानं, अन्नकूटः, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं, *

भ्रातृद्वितीया, श्रीचित्रगुप्तपूजा, यमुनास्नानं, भगिनीगृहे भोजनम्, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगं फलं समर्घम् ।

कटुमहुली ३, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां निरामिषभोजनं, उत्तरयात्रा तृतीयायाम् । * **महाकविकालिदास**जयन्त्युत्सवः उच्चैठग्रामे तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां कर्मस्थले च, दक्षिणयात्रा प्रतिपदि ।

श्रीगणेश ४ व्रतं, प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य संयमः (नहा-खाय), गं. ५२।२४ उ., भ. १६।५२ उ. ४८।३१ या., पश्चिमोत्तरयात्रा पंचम्यां ज्येष्ठायां ततः उत्तरयात्रा।

प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरना), गं. ७।२४ या., पूर्वयात्रा पञ्चम्याम् ।

प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढ़े । ● द.ति. ६।४ या., पश्चिमयात्रा रेवत्याम् ।

प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, सामापूजारंभः, जगद्धात्रीपूजारंभः, भ. ३५।११ उ., दक्षिणां विना यात्रा **श्रवणायाम्**।

गोपाष्टमी, गोपूजनं , **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. १२ मि. ४८ उ., भ. २।२० या., पश्चिमां विना यात्रा **श्रवणायां ततः** पूर्वयात्रा । ❖ भ. २५।३ या., दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम् ।

नवम्बर ११, **अक्षयनवमी,** सत्ययुगादिः, गंगास्नानदानादिः, **दीक्षाग्रहणं,** धात्रीच्छायायां भोजनं, पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे नवम्याम् ।

ध्रुवयोगमानं ५२।१३, जगद्धात्रीविसर्जनं, भ. ४४।३४ उ.। ☆ **जीवत्सायां ढेङ**मनियारीघट्टे **वाङ्मत्यां** स्नानदानार्चनादिकं, सामाविसर्जनं, गुरुनानक निम्बार्कजयन्ती, **कार्त्तिकेयपूजनं,** कार्त्तिकेयावतारः, ❖

देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, भीष्मपञ्चकव्रतारंभः, द. ति. ११।३८ उ., भ. ११।३८ या., तुलायां बुधः ३६।३५, पश्चिमयात्रैकादश्यां, (११-१२ एको.)।

दामोदर १२, विल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, **तामसमन्वादिः,** चातुर्मास्यव्रतपारणं, तुलसीविवाहः, **प्रदोष** १३ व्रतं, **विद्यापतिस्मृतिदिवसः,** बाबासाहेबरामदासपरमहंसस्य २२५ स्मृतिदिवसः, ●

चतुर्दशीमानं ५५।४५, **प्रदोष** १४ व्रतं, **पञ्चकान्तो** घं. ५ मि. १७ उपरि सायं, गं. १४।५३ उ.२६।५३ या., भ. ५६।४७ उ., उत्तरां विना यात्रा पूर्णिमायाम्।

कार्तिकी १५ स्नानदानादिः, औत्तममन्वादिः, सर्वदिवदेव्युत्यापनं, भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः, **हरिहरक्षेत्रस्नानपूजनादिकं,** सोनपुरमेलापकं, प्रभासपुष्करवराहक्षेत्रस्नानं, **गोशालाघट्टे** कमलायां **जीवछघट्टे** ☆

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
१ शु.	८।४।२३।१८	५।२१।४४।३०	३।२६।४३।३३	६।८।००।०२	६।२७।५०।११	११।२६।४२।१४	४४।०१
२ श.	८।५।६।४३	५।२२।०७।०६	३।२६।५१।४७	६।६।१५।०३	६।२७।५७।०२	११।२६।३६।०४	४३।५६
३ र.	८।५।५०।०८	५।२२।२६।४२	३।२७।००।०१	६।१०।३०।०४	६।२८।०३।५२	११।२६।३५।५४	४३।५८
४ चं.	८।२३।३३।५६	५।२३।२३।५५	३।२७।०७।२०	६।११।४५।१६	६।२८।११।०६	११।२६।३२।४३	४३।५६
५ मं.	८।७।१७।४४	५।२४।१८।०८	३।२७।१४।३६	६।१३।००।२८	६।२८।१८।२०	११।२६।२६।३२	४३।५४
६ बु.	८।८।०१।३२	५।२५।१२।२१	३।२७।२१।५८	६।१४।१५।४०	६।२८।२५।३४	११।२६।२६।२१	४३।५२
७ वृ.	८।८।४५।१६	५।२६।०६।३३	३।२७।२६।१७	६।१५।३०।५१	६।२८।३२।४८	११।२६।२३।१०	४३।५०
८ शु.	८।६।२६।०६	५।२७।००।४५	३।२७।३६।३६	६।१६।४६।०२	६।२८।४०।१२	११।२६।१६।५६	४३।४६
६ श.	८।१०।१२।५३	५।२७।५४।५७	३।२७।४३।५४	६।१८।०१।१३	६।२८।४७।१६	११।२६।१६।४८	४३।४८
१० र.	८।१०।५६।४०	५।२८।४६।०६	३।२७।५१।१२	६।१६।१६।२४	६।२८।५४।३०	११।२६।१३।३८	४३।४७
११ च.	८।११।४०।५७	६।०।६।०१	३।२७।५७।११	६।२०।३१।४०	६।२६।१।४३	११।२६।१०।२७	४३।४५
१२ म.	८।१२।२५।१४	६।१।२२।५३	३।२८।०३।१०	६।२१।४६।५६	६।२६।८।५६	११।२६।०७।१६	४३।४३
१३ बु.	८।१३।६।३१	६।२।३६।४५	३।२८।०६।१०	६।२३।०२।१२	६।२६।१६।६	११।२६।४।०५	४३।४१
१५ वृ.	८।१३।५३।४८	६।३।५६।३७	३।२८।१५।१०	६।२४।१७।२८	६।२६।२३।२२	११।२६।००।५४	४३।३६

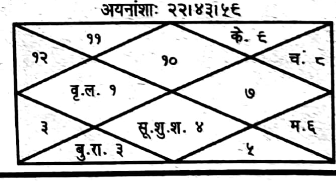
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	१८।५७	२०।५३	२३।०६	१।२४	३।४०	५।५५	८।१२	१०।२६	१२।३४	१४।२०	१५।५१	१७।२०
२ श.	१८।५३	२०।४६	२३।०२	१।२०	३।३६	५।५१	८।०८	१०।२५	१२।३०	१४।१६	१५।४७	१७।१६
३ र.	१८।४६	२०।४५	२२।५८	१।१६	३।३२	५।४७	८।४	१०।२१	१२।२६	१४।१२	१५।४३	१७।१२
४ चं.	१८।४५	२०।४१	२२।५४	१।१२	३।२८	५।४३	८।००	१०।१७	१२।२२	१४।०८	१५।३६	१७।०८
५ मं.	१८।४२	२०।३८	२२।५१	१।०६	३।२५	५।४०	७।५७	१०।१४	१२।१६	१४।०५	१५।३६	१७।०५
६ बु.	१८।३८	२०।३४	२२।४७	१।०५	३।२१	५।३६	७।५३	१०।१०	१२।१५	१४।०१	१५।३२	१७।०१
७ वृ.	१८।३४	२०।३०	२२।४३	१।०१	३।१७	५।३२	७।४६	१०।६	१२।११	१३।५७	१५।२८	१६।५७
८ शु.	१८।३०	२०।२६	२२।३६	०।५७	३।१३	५।२८	७।४५	१०।२	१२।०७	१३।५३	१५।२४	१६।५३
६ श.	१८।२६	२०।२२	२२।३५	०।५३	३।०६	५।२४	७।४१	६।५८	१२।०३	१३।४६	१५।२०	१६।४६
१० र.	१८।२२	२०।१८	२२।३१	०।४६	३।०५	५।२०	७।३७	६।५४	११।५६	१३।४५	१५।१६	१६।४५
११ च.	१८।१८	२०।१४	२२।२७	०।४५	३।०१	५।१६	७।३३	६।५०	११।५५	१३।४१	१५।१२	१६।४१
१२ म.	१८।१४	२०।१०	२२।२३	०।४१	२।५७	५।१२	७।२६	६।४६	११।५१	१३।३७	१५।०८	१६।३७
१३ बु.	१८।१०	२०।०६	२२।१६	०।३७	२।५३	५।०८	७।२५	६।४२	११।४७	१३।३३	१५।०४	१६।३३
१५ वृ.	१८।०६	२०।०२	२२।१५	०।३३	२।४६	५।०४	७।२१	६।३८	११।४३	१३।२६	१५।००	१६।२६

३ रवौ वल्ली ८।३६।१।३२
अयनांशाः २२।४३।५८



१० रवौ वल्ली ८।३६।१।३६
अयनांशाः २२।४३।५६



विविधविषयाः- कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्ति निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत्, गाश्च पूजयेत्। गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः- गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव। **गोपूजनमन्त्रः-** लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनूरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु । अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। **भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः-** भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। **कनिष्ठभ्रातरि** सति- भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। एकादश्यां **विष्णूत्थापनमन्त्रः-** ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्।।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरवः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोर्वायुचारमेघच्छायादयस्तन्मध्यभागे वायुमेघचारच्छिन्नवृष्टयः।

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ७।११।१४ ई. तः दि. २२।११।१४ ई. या., उत्तरेकालः, ९ तः पूर्वेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ६ तः पश्चिमोदितः, अशुद्धः, ८ तः शुद्धः, शरदृतुः ९ तो हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने।

तिथयः दिनानि	तिथयः दं पं.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. पं.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.
१ शु.	५०।५४	रा. २।५५	भ. २३।२७	दि. ३।५६	व्य. २१।५०	बा. २२।७	मे. ३८।२४	रा. ६।५५	६।२०।४१।३५	२७।१६	६।३३	५।२७	१६	२१	७
२ श.	४९।४३	रा. २।२६	कृ. २३।१६	दि. ३।५१	व. १७।२१	तै.२०।१९	वृष	अहो.	६।२१।४१।५६	२७।१३	६।३३	५।२७	१७	२२	८
३ र.	४९।४७	रा. २।२९	रो. २४।१५	दि. ४।१९	प. १३।५२	व. १९।४५	वृ. ५५।२४	रा. ४।४४	६।२२।४२।१७	२७।१०	६।३४	५।२६	१८	२३	९
४ चं.	५१।१०	रा. ३।०३	मृ. २६।३३	सं. ५।१२	शि. ११।२२	ब. २०।२९	मिथुन	अहो.	६।२३।४२।५२	२७।०६	६।३५	५।२५	१९	२४	१०
५ मं.	५३।४५	रा. ४।०५	आ. ३०।०५	रा. ६।३७	सि. ०९।५६	कौ. २२।२८	मिथुन	अहो.	६।२४।४३।२७	२७।०३	६।३५	५।२५	२०	२५	११
६ बु.	५७।३०	रा. ५।३६	पुन. ३४।४५	रा. ८।३०	सा. ९।१८	ग. २५।३७	मि. १८।३५	दि. २।०२	६।२५।४४।०२	२७।००	६।३६	५।२४	२१	२६	१२
७ बृ.	६०।००	अहो.	पु. ४०।१९	रा. १०।४५	शु. ९।३४	वि. २९।४९	कर्क.	अहो.	६।२६।४४।३७	२६।५७	६।३७	५।२३	२२	२७	१३
७ शु.	२।०८	दि. ७।२८	अश्ले. ४६।३५	रा. १।१५	शु. १०।२७	ब. २।०८	क. ४६।३५	रा. १।१५	६।२७।४५।१२	२६।५४	६।३७	५।२३	२३	२८	१४
८ श.	७।२०	दि. ९।३४	म. ५३।०६	रा. ३।५२	ब्र. ११।४५	कौ. ७।२०	सिंह	अहो.	६।२८।४५।४६	२६।५१	६।३८	५।२२	२४	२९	१५
९ र.	१२।४०	दि. ११।४२	पूफ. ५९।२६	रा. ६।२४	ऐ. १३।०६	ग. १२।४०	सिंह	अहो.	६।२९।४६।२०	२६।४८	६।३८	५।२२	२५	३०	१६
१० चं.	१७।४३	दि. १।४४	उफ. ६०।००	अहो.	वै. १४।१५	वि. १७।४३	सिं.१५।५३	दि. १।००	७।००।४७।०७	२६।४४	६।३९	५।२१	२६	१	१७
११ मं.	२२।०८	दि. ३।३१	उफ. ५।१४	दि. ८।४५	वि. १४।५६	बा. २२।०८	कन्या	अहो.	७।१।४७।५३	२६।४१	६।४०	५।२०	२७	२	१८
१२ बु.	२५।३३	दि. ४।५३	ह. १०।१२	दि. १०।४५	प्री. १४।५३	तै. २५।३३	कं.४२।०८	रा. ११।३१	७।२।४८।३९	२६।३८	६।४०	५।२०	२८	३	१९
१३ बृ.	२७।५२	सं. ५।५०	चि. १४।०४	दि. १२।१९	आ. १३।५७	व. २७।५२	तुला	अहो.	७।३।४९।२५	२६।३५	६।४१	५।१९	२९	४	२०
१४ शु.	२८।५३	सं. ६।१५	स्वा. १६।४६	दि. १।२४	सौ. १२।१५	श. २८।५३	तुला	अहो.	७।४।५०।११	२६।३२	६।४२	५।१८	३०	५	२१
३० श.	२८।३४	सं. ६।०८	वि. १८।११	दि. १।५८	शो. ६।१२	ना. २८।३४	तु. २१।५०	दि. ७।५०	७।५।५०।५७	२६।२९	६।४२	५।१८	१	६	२२

विशाखायां रविः २।१८।

दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।

भ. १९।४५ उ. ४९।४७ या., पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम्।

गजानन ४ व्रतं, चतुर्थ्यां पञ्चम्यां वा मेघदर्शनं वर्षतौ वृष्टिप्रदम्।

वीडपञ्चमी, **मनसादेवीशयनं,** विषहरापूजनं, **वृश्चिके शुक्रः** १६।३६, **वृश्चिके शनिः** ४९।३३, पश्चिमदक्षिणयात्रा पञ्चम्यां पुनर्वसौ।

भ. ५७।३० उ., पश्चिमोदितः शुक्रः २२।५६, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।

त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, भ. २९।४९ या., दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये।

कालभैरवाष्टमी, निशीथे **कालभैरवावतारः, महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती,** गं. ३५।३५ उ. ५०।३५ या.।

पुष्टः शुक्रः शुद्धारंभश्च २२।५६, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।

वृश्चिके रविः ५६।४३ मु. ३० फलं साम्यं, मासान्तः, **कार्तिकव्रताकाशदीपदानव्रततुलसीव्रतोद्यापनानि,** द. ति. ५६।४३ उ., म. ४५।१२ उ., (१० एको.)।

विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि.० यावद्दिने, **पुण्याहः,** द. ति. १७।४३ या., म. १७।४३ या., **सिमरियाघाटे** कल्पवासकार्तिकस्नानसमाप्तिः।

मासादिः, **उत्पन्ना** ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वास्तो बुधः ४४।०३, (११ एको.)।

गोमूत्रेण पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **विवाहो दिवारात्रौ,** पूर्वदक्षिणयात्रा द्वादश्याम्।

अनुराधायां रविः १४।१३, भ. २७।५२ उ. ५८।२२ या., **विवाहस्त्रयोदश्यां,** पश्चिमयात्रा त्रयोदश्याम्।

प्रदोष १४ व्रतं, दक्षिणयात्रा स्वात्याम्।

मार्गी ३० स्नानदानादिः, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

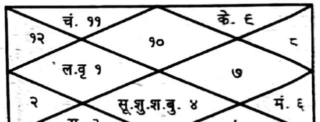
ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ शु.	८।१४।३८।१४	६।५।१३।२९	३।२८।२१।१०	६।२५।३२।४३	६।२९।३०।३५	११।२५।५७।४३
२ श.	८।१५।२२।२०	६।६।२०।२१	३।२८।२७।१०	६।२६।४७।५८	६।२९।३७।४८	११।२५।५४।३३
३ र.	८।१६।०६।३६	६।७।४७।१२	३।२८।३३।१०	६।२८।०३।१३	६।२९।४५।०१	११।२५।५१।२३
४ चं.	८।१६।५१।११	६।९।१७।४०	३।२८।३८।०२	६।२९।१८।३०	६।२९।५२।०९	११।२५।४८।१२
५ मं.	८।१७।३५।४६	६।१०।४८।०८	३।२८।४२।५४	७।००।३३।४७	६।२९।५९।१७	११।२५।४५।०१
६ बु.	८।१८।२०।२१	६।१२।१८।३५	३।२८।४७।४६	७।१।४९।०४	७।००।६।२४	११।२५।४१।५०
७ बृ.	८।१९।४।५६	६।१३।४९।०२	३।२८।५२।३८	७।३।४।२१	७।००।१३।३१	११।२५।३८।३९
७ शु.	८।१९।४९।३१	६।१५।१९।२९	३।२८।५७।३०	७।४।१९।३८	७।००।२०।३८	११।२५।३५।२८
८ श.	८।२०।३४।०६	६।१६।४९।५६	३।२९।०२।२२	७।५।३४।५५	७।००।२७।४५	११।२५।३२।१८
९ र.	८।२१।१८।४०	६।१८।२०।०३	३।२९।०७।१४	७।६।५०।१२	७।००।३४।५२	११।२५।२९।८
१० चं.	८।२२।०३।३६	६।१९।५८।३६	३।२९।११।११	७।८।५।४५	७।००।४२।००	११।२५।२५।५७
११ मं.	८।२२।४८।३८	६।२१।३७।०८	३।२९।१५।०८	७।९।२१।१८	७।००।४९।८	११।२५।२२।४६
१२ बु.	८।२३।३३।३६	६।२३।१५।४०	३।२९।१९।०४	७।१०।३६।५१	७।००।५६।१६	११।२५।१९।३५
१३ बृ.	८।२४।१८।३४	६।२४।५४।१२	३।२९।२३।००	७।११।५२।२४	७।१।३।२४	११।२५।१६।२४
१४ शु.	८।२५।०३।३२	६।२६।३२।४४	३।२९।२६।५६	७।१३।७।५६	७।१।१०।३२	११।२५।१३।१३
३० श.	८।२५।४८।३०	६।२८।११।१६	३।२९।३०।५२	७।१४।२३।२८	७।१।१७।४०	११।२५।१०।१३

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	४३।३७	१८।०२	१९।५८	२२।११	०।२९	२।४५	५।००	७।१७	९।३४	११।३९	१३।२५	१४।५६	१६।२५
२ श.	४३।३६	१७।५८	१९।५४	२२।०७	०।२५	२।४१	४।५६	७।१३	९।३०	११।३५	१३।२१	१४।५२	१६।२१
३ र.	४३।३५	१७।५५	१९।५१	२२।०४	०।२२	२।३८	४।५३	७।१०	९।२७	११।३२	१३।१८	१४।४९	१६।१८
४ चं.	४३।३३	१७।५१	१९।४७	२२।००	०।१८	२।३४	४।४९	७।६	९।२३	११।२८	१३।१४	१४।४५	१६।१४
५ मं.	४३।३१	१७।४७	१९।४३	२१।५६	०।१४	२।३०	४।४५	७।०२	९।१९	११।२४	१३।१०	१४।४१	१६।१०
६ बु.	४३।२९	१७।४३	१९।३९	२१।५२	०।१०	२।२६	४।४१	६।५८	९।१५	११।२०	१३।०६	१४।३७	१६।०६
७ बृ.	४३।२७	१७।३९	१९।३५	२१।४८	०।०६	२।२२	४।३७	६।५४	९।११	११।१६	१३।०२	१४।३३	१६।०२
७ शु.	४३।२६	१७।३५	१९।३१	२१।४४	०।०२	२।१८	४।३३	६।५०	९।०७	११।१२	१२।५८	१४।२९	१५।५८
८ श.	४३।२५	१७।३१	१९।२७	२१।४०	२३।५८	२।१४	४।२९	६।४६	९।०३	११।०८	१२।५४	१४।२५	१५।५४
९ र.	४३।२४	१७।२७	१९।२३	२१।३६	२३।५४	२।१०	४।२५	६।४२	८।५९	११।०४	१२।५०	१४।२१	१५।५०
१० चं.	४३।२२	१७।२३	१९।१९	२१।३२	२३।५०	२।०६	४।२१	६।३८	८।५५	११।००	१२।४६	१४।१७	१५।४६
११ मं.	४३।२०	१७।१९	१९।१५	२१।२८	२३।४६	२।०२	४।१७	६।३४	८।५१	१०।५६	१२।४२	१४।१३	१५।४२
१२ बु.	४३।१८	१७।१५	१९।११	२१।२४	२३।४२	१।५८	४।१३	६।३०	८।४७	१०।५२	१२।३८	१४।०९	१५।३८
१३ बृ.	४३।१६	१७।११	१९।०७	२१।२०	२३।३८	१।५४	४।०९	६।२६	८।४३	१०।४८	१२।३४	१४।०५	१५।३४
१४ शु.	४३।१५	१७।०६	१९।०२	२१।१५	२३।३३	१।४९	४।०४	६।२१	८।३८	१०।४३	१२।२९	१४।००	१५।२९
३० श.	४३।१४	१७।०२	१८।५८	२१।११	२३।२९	१।४५	४।००	६।१७	८।३४	१०।३९	१२।२५	१३।५६	१५।२५

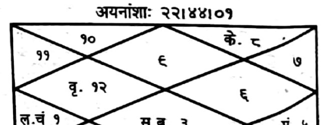
३ रवौ वल्ली ८।३९।१।४६

अयनांशाः २२।४४।००



९ रवौ वल्ली ८।३९।१।५३

अयनांशाः २२।४४।०१



विविधविषयाः मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद् दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **पंचोपचारपूजनं**-गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च । पञ्चोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः। **षोडशोपचारपूजा-** आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च । गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा । **पंचगव्यम्-** गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्। **पञ्चामृतम्-** शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते। **पंचरत्नानि-** वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्पपरागेन्द्रनीलकम्। पंचरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्। **पञ्चपल्लवाः-** अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पंचपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः ।। **सप्तधान्यम्-** यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्। **सर्वौषधिः-** मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः। सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्। **सप्तमृत्तिका-**अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात्। राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ११ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ६ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघच्छायादयः तन्मध्यभागे शीतवातमेघचारादयः।

अग्रहायणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २३।११।१४ ई. तः दि. ६।१२।१४ ई. या., पूर्वकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	२७।०२	सं. ५।३२	अनु. १८।२२	दि. २।०४	अति. ५।२०	ब. २७।०२	वृश्चिक	अहो.	७।६।५१।४३	२६।२६	६।४३	५।१७	२	७	२३
२ चं.	२४।२२	दि. ४।२८	ज्ये. १७।२३	दि. १।४०	सु. ००।३०	कौ. २४।२२	वृ.१७।२३	दि. १।४०	७।७।५२।४१	२६।२४	६।४३	५।१७	३	८	२४
३ मं.	२०।४३	दि. ३।१	मू. १५।२६	दि. १२।५६	शू. ४८।३२	ग. २०।४३	धनु.	अहो.	७।८।५३।३६	२६।२२	६।४४	५।१६	४	९	२५
४ बु.	१६।१३	दि. १।१३	पूषा. १२।४४	दि. ११।५०	गं. ४१।३५	वि. १६।१३	ध.२६।५३	सं. ५।२६	७।९।५४।३७	२६।२०	६।४४	५।१६	५	१०	२६
५ वृ.	११।०६	दि. ११।१०	उषा. ९।१९	दि. १०।२८	वृ. ३४।९	बा. ११।०६	मकर	अहो.	७।१०।५५।३५	२६।१८	६।४४	५।१६	६	११	२७
६ शु.	५।२७	दि. ८।५६	श्र. ५।२५	दि. ८।५५	ध्रु. २६।२५	तै. ५।२७	म.-३३।२१	रा. ८।०५	७।११।५६।३३	२६।१६	६।४५	५।१५	७	१२	२८
८ श.	५३।३७	रा. ४।१२	ध. १।१९	दि. ७।१५	व्या. १८।३४	वि. २६।३६	कुम्भ	अहो.	७।१२।५७।३१	२६।१५	६।४५	५।१५	८	१३	२९
९ र.	४७।५०	रा. १।५३	पूभा. ५२।५८	रा. ३।५६	ह. १०।४०	बा. २०।४४	कु.३८।५९	रा. १०।२१	७।१३।५८।२८	२६।१४	६।४५	५।१५	९	१४	३०
१० चं.	४२।२१	रा. ११।४६	उभा. ४९।१७	रा. २।२९	व. २।५६	तै. १५।०६	मीन	अहो.	७।१४।५९।३५	२६।१२	६।४६	५।१४	१०	१५	१
११ मं.	३७।२४	रा. ९।४४	रे. ४६।०६	रा. १।१२	व्य. ४८।३४	व. ६।५३	मी. ४६।६	रा. १।१२	७।१६।००।४१	२६।११	६।४६	५।१४	११	१६	२
१२ बु.	३३।१४	रा. ८।०४	अ. ४३।४७	रा. १२।१७	व. ४२।१४	ब. ५।१९	मेष	अहो.	७।१७।१।४७	२६।१०	६।४६	५।१४	१२	१७	३
१३ वृ.	२९।५४	सं. ६।४४	भ. ४२।१४	रा. ११।४०	प. ३६।३७	कौ. १।३४	मे.५७।०७	रा. ५।३७	७।१८।२।५३	२६।९	६।४६	५।१४	१३	१८	४
१४ शु.	२७।३८	सं. ५।४९	कृ. ४१।४५	रा. ११।२८	शि. ३१।५०	व. २७।३८	वृष.	अहो.	७।१९।३।५९	२६।८	६।४६	५।१४	१४	१९	५
१५ श.	२६।३६	सं. ५।२५	रो. ४२।४८	रा. ११।५४	सि. २७।५९	ब. २६।३६	वृष.	अहो.	७।२०।५।०५	२६।७	६।४७	५।१३	१५	२०	६

हरिशोव्रतं, **षाण्मासिकरविव्रतारंभः**, **वृश्चिके** बुधः ४६।१०, **विवाहोऽनुराधायां**, उत्तरयात्रा द्वितीयायाम्। ⊙ दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायाम्, (५-६ एको.)।
धृतियोगमानं ५४।२१, गं. ११।२३ उ. २६।२३ या., **विवाहो** मूले, **मुण्डनं** ज्येष्ठायां, **द्विरागमन**मुत्तरयात्रा च तृतीयायां, चन्द्रदर्शनं मु. ३० सौम्यशृंगं फलं साम्यम्।
श्रीगणेश ४ व्रतं, भ. ४८।२८ उ., पूर्वयात्रा। ✱ **नवान्नपार्वणं** पञ्चम्यां, **विवाहो** दिवारात्रौ, **मुण्डनं** पञ्चम्यां श्रवणायां, कर्णवेधः, **द्विरागमनं**, ⊙
भ. १६।१३ या., **विवाहो** द्विरागमनञ्च पञ्चम्याम्।
विवाहपञ्चमी, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः, जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनं, **गोस्वामीलक्ष्मीनाथ (बाबाजी) परमहंसस्य** २२१ जयन्त्युत्सवः १४२ स्मृतिदिवसश्च, ✱
सप्तमीमानं ५४।७, **पञ्चकारं**भो दिवा घं. ८ मि. ५५ उ., स्कन्दषष्ठी, भ. ५६।३४ उ., **मकरे कुजः** १५।५२, **विवाहः** श्रवणायां, **गुरुदेवाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायां**, ◆१/
शतभिषामानं ५५।४६, भ. २६।३६ या.। ✓◆ कर्णवेधः, द्विरागमनं षष्ठ्यां, गृहप्रवेशो **मुण्डनञ्च** सप्तम्यां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।
द. ति. ४७।५० उ.।
सिद्धियोगमानं ५२।३२, दिसम्बर १२, द. ति. ४२।२१ या., **विवाहो** द्विरागमनं गृहप्रवेशश्चैकादश्याम्, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम्।
मोक्षदा ११ व्रतं सर्वेषां, गीताजयन्ती, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १ मि. १२ उ., गं. ३४।६ उ. ४६।६ या., भ. ६।५३ उ. ३७।२४ या., पश्चिमयात्रा द्वादश्यां रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा।
ज्येष्ठायां रविः २१।४१, केशव १२, गोमूत्रेण पारणं, **विवाह** अश्विन्यां, कर्णवेधः, द्विरागमनं द्वादश्यां, गृहप्रवेशः, गृहारम्भो दिवा घं. ३ मि. २६ उ., उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम्।
प्रदोष १३ व्रतम्।
प्रदोष १४ व्रतं, मूले धनुषि शुक्रः ७।४६, भ. २७।३८ उ. ५७।०७ या., **विवाहो द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्याम्।
मार्गी १५ स्नानदानादिः, क्षेत्रस्नानं हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं, **पूर्वोदितः** शनिः ३८।३, **गृहारंभः**, दक्षिणयात्रा प्रतिपदि रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।

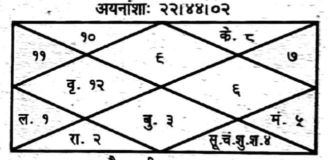
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
१ र.	८।२६।३३।०८	६।२६।४६।४८	३।२६।३४।४८	७।१५।३६।००	७।१।२४।४७	११।२५।६।५३	४३।१३
२ चं.	८।२७।१८।५५	७।१।३२।३६	३।२६।३६।५५	७।१६।५४।३१	७।१।३२।००	११।२५।३।४२	४३।१२
३ मं.	८।२८।४।२१	७।३।१५।२३	३।२६।३९।०१	७।१८।१०।१२	७।१।३९।१३	११।२५।०।३१	४३।११
४ बु.	८।२८।४९।४७	७।४।५८।१०	३।२६।४१।०७	७।१९।२५।३३	७।१।४६।२६	११।२४।५७।२०	-४३।१०
५ वृ.	८।२९।३५।१३	७।६।४०।५७	३।२६।४३।१३	७।२०।४१।४	७।१।५३।३९	११।२४।५४।९	४३।९
६ शु.	९।००।२०।३९	७।८।२३।४४	३।२६।४५।१९	७।२१।५६।३५	७।२।००।५१	११।२४।५०।५८	४३।८
८ श.	९।१।६।०५	७।१०।६।३१	३।२६।४७।२५	७।२३।१२।०६	७।२।८।०३	११।२४।४७।४७	४३।७
९ र.	९।१।५१।३१	७।११।४९।१८	३।२६।४९।३१	७।२४।२७।३७	७।२।१५।१५	११।२४।४४।३७	४३।७
१० चं.	९।२।३७।११	७।१३।३३।५३	३।२६।५०।२८	७।२५।४३।१८	७।२।२२।२९	११।२४।४१।२६	४३।६
११ मं.	९।३।२२।५१	७।१५।१८।२८	३।२६।५१।२४	७।२६।५८।५९	७।२।२९।४३	११।२४।३८।१५	४३।५
१२ बु.	९।४।८।३१	७।१७।३।०३	३।२६।५२।२०	७।२८।१४।४०	७।२।३६।५७	११।२४।३५।०४	४३।४
१३ वृ.	९।४।५४।११	७।१८।४७।३८	३।२६।५३।१६	७।२९।३०।२१	७।२।४४।११	११।२४।३१।५३	४३।३
१४ शु.	९।५।३९।५०	७।२०।३२।१३	३।२६।५४।१२	८।००।४६।०२	७।२।५१।२५	११।२४।२८।४२	४३।३
१५ श.	९।६।२५।२९	७।२२।१६।४७	३।२६।५५।८	८।२।१।४३	७।२।५८।३९	११।२४।२५।३२	४३।३

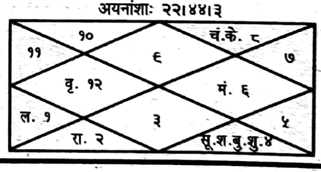
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	१६।५७	१८।५३	२१।०६	२३।२४	१।४०	३।५५	६।१२	८।२९	१०।३४	१२।२०	१३।५१	१५।२०
२ चं.	१६।५३	१८।४९	२१।०२	२३।२०	१।३६	३।५१	६।०८	८।२५	१०।३०	१२।१६	१३।४७	१५।१६
३ मं.	१६।४९	१८।४५	२०।५८	२३।१६	१।३२	३।४७	६।०४	८।२१	१०।२६	१२।१२	१३।४३	१५।१२
४ बु.	१६।४४	१८।४०	२०।५३	२३।११	१।२७	३।४२	५।५९	८।१६	१०।२१	१२।७	१३।३८	१५।०७
५ वृ.	१६।४०	१८।३६	२०।४९	२३।०७	१।२३	३।३८	५।५५	८।१२	१०।१७	१२।३	१३।३४	१५।०३
६ शु.	१६।३६	१८।३२	२०।४४	२३।०३	१।१८	३।३३	५।५१	८।८	१०।१३	११।५९	१३।३०	१४।५८
८ श.	१६।३१	१८।२७	२०।४०	२२।५८	१।१४	३।२९	५।४६	८।३	१०।०८	११।५४	१३।२५	१४।५४
९ र.	१६।२७	१८।२३	२०।३६	२२।५४	१।१०	३।२५	५।४२	७।५९	१०।०४	११।५०	१३।२१	१४।५०
१० चं.	१६।२३	१८।१९	२०।३२	२२।५०	१।०६	३।२०	५।३८	७।५५	१०।००	११।४६	१३।१७	१४।४६
११ मं.	१६।१८	१८।१४	२०।२७	२२।४५	१।०१	३।१६	५।३३	७।५०	९।५५	११।४१	१३।१२	१४।४१
१२ बु.	१६।१४	१८।१०	२०।२३	२२।४१	०।५७	३।१२	५।२९	७।४६	९।५१	११।३७	१३।०८	१४।३७
१३ वृ.	१६।१०	१८।०६	२०।१९	२२।३७	०।५३	३।०८	५।२५	७।४२	९।४७	११।३३	१३।०४	१४।३३
१४ शु.	१६।०६	१८।०२	२०।१५	२२।३३	०।४९	३।०४	५।२१	७।३८	९।४३	११।२९	१३।००	१४।२९
१५ श.	१६।०१	१७।५७	२०।१०	२२।२८	०।४४	२।५९	५।१६	७।३३	९।३८	११।२४	१२।५५	१४।२४

१ रवौ वल्ली ८।३६।२।००
अयनांशाः २२।४४।०२



९ रवौ वल्ली ८।३६।२।०७
अयनांशाः २२।४४।१३



विविधविषयाः- रवौ त्याज्यवस्तूनि- क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि-** पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रंशर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।। **रात्रौ लग्नज्ञानम्-** ध्रुवं परितो रक्त वर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ, नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति।

चन्द्रोदयास्तसाधनम्- तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च ।। यथा- मार्गशुक्लपञ्चम्यां गुरौ रात्रिमानं ३३।४२, तदोक्तरीत्या (३३।४२) x ५ = १६८।३० + २।० = १७०।३० ÷ १५ = ११।२२ दण्डादि। सूर्यास्त (५।१६) माने यथोक्त फलस्य घण्टामिण्टात्मकमान (४।३३) योजनेन घं. ९ मि. ४९ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः १५ तः पूर्वोदितः।

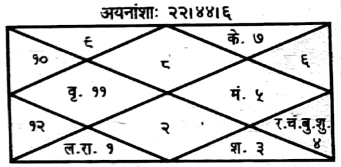
वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारशीतादयस्तन्मध्यभागे

पौषकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ७।१२।१४ ई तः दि. २२।१२।१४ ई. या., पूर्वकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ४ तो वक्री, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ९ तोऽ शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.	
१ र.	२६।४८	सं. ५।३०	मृ. ४४।२७	रा. १२।३४	सा. २५।०६	कौ. २६।४८	वृ. १३।३८	दि. १२।१४	७।२१।६।११	२६।६	६।४७	५।१३	१६	२१	७	पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदं, कुजवेधाद्विवाहो नैव मृगशिरसि, **द्विरागमनं** पश्चिमां विना यात्रा च द्वितीयायां मृगशिरसि।
२ चं.	२८।२२	सं. ६।०८	आ. ४७।४२	रा. १।५२	शु. २३।१७	ग.२८।२२	मिथुन	अहो	७।२२।०७।२५	२६।४	६।४७	५।१३	१७	२२	८	भ. ५९।४५ उ., **द्विरागमनं** पश्चिमदक्षिणयात्रा च पुनर्वसौ।
३ मं.	३१।७	रा. ७।१५	पुन. ५२।५	रा. ३।३८	शु. २२।२४	वि. ३१।७	मि.३९।००	रा. ६।१२	७।२३।८।३९	२३।२	६।४८	५।१२	१८	२३	९	भ. ३१।७ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
४ बु.	३५।२	रा. ८।४९	पु. ५७।२८	रा. ५।४७	ब्र. २२।२४	ब. ३।०४	कर्क	अहो	७।२४।९।५३	२६।००	६।४८	५।१२	१९	२४	१०	लम्बोदर ४ व्रतं, वक्री गुरुः १३।११, **द्विरागमनमुत्तरां** विना यात्रा च पञ्चम्यां पुष्ये।
५ बृ.	३९।४८	रा. १०।४३	अश्ले. ६०।००	अहो.	ऐ. २३।३	कौ. ७।२५	कर्क	अहो	७।२५।११।०७	२५।५९	६।४८	५।१२	२०	२५	११	**शकुलम्**- पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्मिन् तिथौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः॥ गं. ५२।३३ उ., **मूले धनुषि बुधः** ११।४१।
६ शु.	४५।०६	रा. १२।५०	अश्ले. ०३।३३	दि. ८।१३	वै. २४।१२	ग. १२।२७	क. ३।३३	दि. ८।१३	७।२६।१२।२१	२५।५८	६।४८	५।१२	२१	२६	१२	गं. ७।३३ या., भ. ४५।०६ उ., कुजवेधाद्विवाहो नैव मघायाम्।
७ श.	५०।३२	रा. ३।०२	म. १०।०३	दि. १०।५०	वि. २५।३४	वि. १७।५९	सिंह	अहो.	७।२७।१३।३५	२५।५७	६।४९	५।११	२२	२७	१३	सप्तम्यां मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्यां च सुवृष्टिः, भ. २५।३४ या., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
८ र.	५५।३९	रा. ५।०५	पूफ. १६।३१	दि. १।२५	प्री. २६।४६	बा. २३।०६	सिं.३३।०१	रा. ८।१	७।२८।१४।४९	२५।५६	६।४९	५।११	२३	२८	१४	**अपूपाष्टका**, केतुवेधाद्विवाहो मध्यम उत्तरफल्गुन्यामष्टम्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
९ च.	६०।००	अहो.	उफ. २२।२९	दि. ३।४९	आ. २७।३५	तै. २७।५३	कन्या	अहो.	७।२९।१६।०९	२५।५४	६।४९	५।११	२४	२९	१५	मासान्तः, अन्वष्टका, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।
९ मं.	००।६	दि. ६।५२	ह. २७।४३	सं. ५।५५	सौ. २७।४७	ग. ०।०६	कं.५९।४८	रा. ६।४५	८।००।१७।२९	२५।५२	६।५०	५।१०	२५	०१	१६	**मूले धनुषि रविः** २५।५० मु. ३० फलं साम्यं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि.० उपरिदिने, **पुण्याहः**, ○
१० बु.	३।२७	दि. ८।१३	चि. ३१।५२	रा. ७।३५	शो. २७।०४	वि. २।२७	तुला	अहो.	८।१।१८।४९	२५।५०	६।५०	५।१०	२६	२	१७	मासादिः, भ. ३।२७ या.। ○ द. ति. ०।६ उ. २५।५० या., भ. ३१।४७ उ., **अमुक्तारंभः** २५।५० उ.।
११ बृ.	५।४७	दि. ९।०९	स्वा. ३४।५५	रा. ८।४८	अति. २५।३२	वा. ५।४७	तुला	अहो	८।२।२०।०९	२५।४९	६।५०	५।१०	२७	३	१८	**सफला** ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा स्वात्याम्।
१२ शु	६।४५	दि. ९।३२	वि. ३६।३९	रा. ९।३०	सु. २२।५८	तै. ६।४५	तु. २१।१३	दि. ३।१९	८।३।२१।२९	२५।४८	६।५०	५।१०	२८	४	१९	गोमयेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, पश्चिमोदितो बुधः ४९।५४, उत्तरयात्रानुराधायाम्।
१३ श.	६।२४	दि. ९।२५	अनु. ३७।११	रा. ९।४३	धृ. १९।२६	व. ६।२४	वृश्चिक	अहो	८।४।२२।४९	२५।४७	६।५१	५।९	२९	५	२०	**प्रदोष** १४ व्रतं, भ. ६।२४ उ. ३५।३७ या., पश्चिमोत्तरयात्रा।
१४ र.	४।४९	दि. ८।४७	ज्ये. ३६।३१	रा. ९।२७	शू. १४।५२	श. ४।४९	वृ ३६।५१	रा. ९।२७	८।५।२४।९	२५।४६	६।५१	५।९	३०	६	२१	**दशतारकारंभो** रात्रौ घं. ९ मि. २७ उ., तत्र वाताभ्रगर्जनतडिदुदकशीतादिभिरग्रिमवर्षस्य वृष्टिविचारो विवेचः, गं. ३०।३१ उ. ४५।३१ या.।
३० चं.	२।०६	दि. ७।४१	मू. ३४।५०	रा. ८।४७	गं. ९।२९	ना. २।०६	धनु.	अहो.	८।६।२५।३३	२५।४६	६।५१	५।९	१	७	२२	प्रतिपन्मानं ५६।१९, **पौषी** ३० स्नानदानादिः, **सोमवारीव्रतं** घं. ७ मि. ४१ यावद्दिने, द. ति. ५८।२५ उ., उत्तरयात्रा प्रतिपदि।

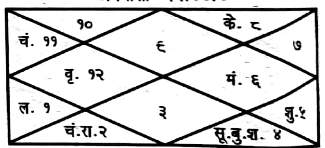
१४ रवौ वल्ली ८।३९।२।२८
अयनांशाः २२।४४।६



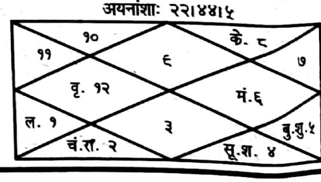
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	६।७।११।०८	७।२४।०१।२१	३।२६।५६।०४	८।०३।१७।२३	७।३।५।५३	११।२४।२२।२२	४३।०३	१५।५७	१७।५३	२०।०६	२२।२४	०।४०	२।५५	५।१२	७।२९	९।३४	११।२०	१२।५१	१४।२०
२ चं.	६।७।५७।१३	७।२५।४४।२८	३।२६।५६।४४	८।४।३२।५७	७।३।१२।२८	११।२४।१९।११	४३।०२	१५।५३	१७।४९	२०।०२	२२।२०	०।३६	२।५१	५।०८	७।२५	९।३०	११।१९	१२।४७	१४।१९
३ मं.	६।८।४३।१८	७।२७।१७।३५	३।२६।५७।०४	८।५।४८।३१	७।३।१९।०३	११।२४।१६।००	४३।०१	१५।४९	१७।४५	१९।५८	२२।१६	०।३२	२।४७	५।०४	७।२१	९।२६	११।१२	१२।४३	१४।१२
४ बु.	६।९।२९।२३	७।२९।०९।४२	३।२६।५७।९	८।७।४।०५	७।३।२५।३८	११।२४।१२।४९	४३।००	१५।४४	१७।४०	१९।५३	२२।११	०।२७	२।४२	४।५९	७।१९	९।२१	११।०७	१२।३८	१४।०७
५ बृ.	६।१०।१५।२८	८।००।४३।४९	३।२६।५६।४९	८।८।१९।३८	७।३।३२।१३	११।२४।०९।३८	४२।५९	१५।४०	१७।३६	१९।४९	२२।०७	०।२३	२।३८	४।५५	७।१२	९।१७	११।०३	१२।३४	१४।०३
६ शु.	६।११।०१।३३	८।२।२६।५६	३।२६।५५।४५	८।९।३५।११	७।३।३८।४८	११।२४।०६।२७	४२।५८	१५।३६	१७।३२	१९।४५	२२।०३	०।१९	२।३४	४।५१	७।०८	९।१३	१०।५९	१२।३०	१३।५९
७ श.	६।११।४७।३८	८।४।१०।०२	३।२६।५४।४०	८।१०।५०।४४	७।३।४५।२२	११।२४।३।१७	४२।५८	१५।३२	१७।२८	१९।४१	२१।५९	०।१५	२।३०	४।४७	७।०४	९।०९	१०।५५	१२।२६	१३।५५
८ र.	६।१२।३३।४४	८।६।०३।०८	३।२६।५३।३५	८।१२।६।१७	७।३।५१।५६	११।२४।००।०७	४२।५८	१५।२८	१७।२४	१९।३७	२१।५५	०।११	२।२६	४।४३	७।००	९।०५	१०।५१	१२।२२	१३।५१
९ च.	६।१३।१९।५५	८।७।४२।१८	३।२६।५१।४०	८।१३।२१।५९	७।३।५८।२३	११।२३।५६।५६	४२।५७	१५।२४	१७।२०	१९।३३	२१।५१	०।७	२।२२	४।३९	६।५६	९।०१	१०।४७	१२।१८	१३।४७
९ मं.	६।१४।०६।०६	८।९।२१।२८	३।२६।४९।४३	८।१४।३७।४१	७।४।४।४९	११।२३।५३।४५	४२।५६	१५।२०	१७।१६	१९।२९	२१।४७	०।०३	२।१८	४।३५	६।५२	८।५७	१०।४३	१२।१४	१३।४३
१० बु.	६।१४।५२।११	८।११।००।३८	३।२६।४७।४७	८।१५।५३।२२	७।४।११।१५	११।२३।५०।३४	४२।५५	१५।१५	१७।११	१९।२४	२१।४२	२३।५८	२।१३	४।३०	६।४७	८।५२	१०।३८	१२।०९	१३।३८
११ बृ.	६।१५।३८।२८	८।१२।३९।४८	३।२६।४५।५१	८।१७।९।३	७।४।१७।४१	११।२३।४७।२३	४२।५४	१५।११	१७।०७	१९।२०	२१।३८	२३।५४	२।०९	४।२६	६।४३	८।४८	१०।३४	१२।०५	१३।३४
१२ शु.	६।१६।२४।३६	८।१४।१८।५७	३।२६।४३।५५	८।१८।२४।४४	७।४।२४।०७	११।२३।४४।१२	४२।५३	१५।०७	१६।०३	१९।१६	२१।३४	२३।५०	२।०५	४।२२	६।३९	८।४४	१०।३०	१२।०१	१३।३०
१३ श.	६।१७।१०।४६	८।१५।५८।०६	३।२६।४१।५९	८।१९।४०।२५	७।४।३०।३३	११।२३।४१।०२	४२।५३	१५।०२	१६।५८	१९।११	२१।२९	२३।४५	२।००	४।१७	६।३४	८।३९	१०।२५	११।५६	१३।२५
१४ र.	६।१७।५६।५६	८।१७।३७।१५	३।२६।४०।३	८।२०।५६।०६	७।४।३६।५९	११।२३।३७।५२	४२।५३	१४।५८	१६।५४	१९।०७	२१।२५	२३।४१	१।५६	४।१३	६।३०	८।३५	१०।२१	११।५२	१३।२१
३० चं.	६।१८।४३।१६	८।१९।८।४६	३।२६।३६।४७	८।२२।११।४३	७।४।४३।१८	११।२३।३४।४१	४२।५३	१४।५३	१६।४९	१९।०२	२१।२०	२३।३६	१।५१	४।०८	६।२५	८।३०	१०।१६	११।४७	१३।१६

१ रवौ वल्ली ८।३९।२।१४
अयनांशाः २२।४४।४



८ रवौ वल्ली ८।३९।२।२१
अयनांशाः २२।४४।५



विविधविषयाः- दशतारकविचारः - पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति ॥ एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्। **गर्भपुष्टिविचारः**- वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः॥ तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति । **गोचरशन्यादिविचारः**- द्विजन्मनि पंचमसप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः । धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः। **शनेर्विचारः**- यदि स्वजन्मराशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयुः- जन्मांगरूद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसूर्येष्विह लौहपादम्। **तत्फलम्**- लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्॥ अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्यः । **शनिस्तवः- पिप्पलाद उवाच**- नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते॥ नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभौ ॥ नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे ॥

ग्रहस्थितिः - मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १२ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ४ तो वक्री, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम् - पक्षस्य पूर्वार्द्धे शीतवृद्धिवातहिमपातादयस्तदुत्तरार्द्धे वातमेघचारच्छिन्नवृष्टयः।

पौषशुक्लपक्षः

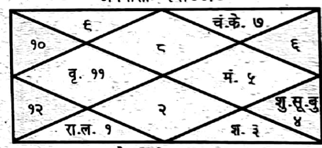
शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २३।१२।१४ ई. तः दि. ५।१।१५ ई. या., पूर्वकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.	
२ मं.	५३।५२	रा. ४।२४	पूषा. ३२।१८	रा. ७।४६	वृ. ३।२१	बा. २५।५९	ध.४६।२९	रा. १।२७	८।७।२६।५७	२५।४७	६।५१	५।०६	२	८	२३	**ध्रुवयोगमानं** ५३।१३, द. ति. ५३।५२ या., चन्द्रदर्शनं मु. ३० सौम्यशृंगं फलं साम्यम्।
३ बु.	४८।४३	रा. २।१९	उषा. २६।०२	रा. ६।२७	व्या. ४६।१४	तै. २१।१८	मकर	अहो.	८।८।२८।२१	२५।४८	६।५०	५।१०	३	९	२४	।।००।।
४ वृ.	४३।०६	रा. १२।०४	श्र. २५।१७	सं. ४।५७	ह. ४१।३५	व. १५।५५	म.५३।४५	रा. ४।२०	८।९।२९।४५	२५।४९	६।५०	५।१०	४	१०	२५	**पञ्चकारंभो** सायं घं. ४ मि. ५७ उ., **श्रीगणेश** ४ व्रतं, भ. १५।५५ उ. ४३।६ या., पूर्वयात्रा पञ्चम्यां मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
५ शु.	३७।१५	रा. ९।४४	ध. २१।१३	दि. ३।१९	व. ३३।४४	ब. १०।११	कुम्भ.	अहो.	८।१०।३१।०६	२५।५०	६।५०	५।१०	५	११	२६	।।००।।
६ श.	३१।१९	रा. ७।२२	शत. १७।०१	दि. १।३८	सिं. २५।४६	कौ. ०४।१७	कु.५८।५७	रा. ६।२५	८।११।३२।३३	२५।५१	६।५०	५।१०	६	१२	२७	पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
७ र.	२५।३४	सं. ५।०४	पूभा. १२।५६	दि. १२।००	व्य. १७।५९	व. २५।३४	मीन.	अहो.	८।१२।३३।५६	२५।५२	६।५०	५।१०	७	१३	२८	**गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती,** भ. २५।३४ उ. ५२।५२ या., **मकरे शुक्रः** ५४।३६, उत्तरयात्रापूर्वभाद्रे।
८ च.	२०।१०	दि. २।५३	उभा. ०९।९	दि. १०।२९	व. १०।२६	ब. २०।१०	मीन.	अहो.	८।१३।३५।२२	२५।५३	६।४९	५।११	८	१४	२९	**पूर्वाषाढे रविः** २७।५७, गं. ५३।२४ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यामष्टम्याम्।
९ मं.	१५।१९	दि. १२।५७	रे. ५।२४	दि. ८।५९	प. ३।१७	कौ. १५।१९	मी. ५।२४	दि. ८।५९	८।१४।३६।४८	२५।५४	६।४९	५।११	९	१५	३०	शिवयोगमानं ५३।२६, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. ८ मि. ५९ उ., गं. ८।२४ या., मकरे बुधः १।३३, पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्, (९-१० एको.)।
१० बु.	११।१५	दि. ११।१९	अ. ३।२०	दि. ८।०९	सिं. ५०।५१	ग. ११।१५	मेष	अहो.	८।१५।३८।१४	२५।५५	६।४९	५।११	१०	१६	३१	**दशतारकान्तो** दिवा घं. ८ मि. ९ उ., **कर्म** १०, **विश्वकर्मार्चा,** भ. ३९।३९ उ., उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्।
११ वृ.	८।०२	दि. १०।२	भ. १।३८	दि. ७।२८	सा. ४५।४८	वि. ८।०२	मे.१९।२८	दि. १।२४	८।१६।३९।४०	२५।५६	६।४९	५।११	११	१७	१	**जनवरी** २०१५ ई., **पुत्रदा** ११ व्रतं सर्वेषां, धर्मसावर्णिमन्वादिः, भ. ८।२ या.।
१२ शु.	५।५३	दि. ९।१०	कृ. ०।५६	दि. ७।११	शु. ४१।३७	बा. ५।५३	वृष	अहो.	८।१७।४१।०६	२५।५७	६।४९	५।११	१२	१८	२	नारायण १२, गोमयेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदश्याम्।
१३ श.	०४।५८	दि. ८।४७	रो. १।२५	दि. ७।२२	शु. ३८।४४	तै. ४।५८	वृ.३२।४७	रा. ७।५५	८।१८।४२।३१	२५।५८	६।४८	५।१२	१३	१९	३	**प्रदोष** १४ व्रतं, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि।
१४ र.	०५।१९	दि. ८।५६	मृ. ३।०८	दि. ८।०३	ब्र. ३६।१२	व. ५।१९	मिथुन	अहो.	८।१९।४३।५६	२६।००	६।४८	५।१२	१४	२०	४	भ. ५।१९ उ. ३६।११ या.। ✲ पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा।
१५ चं.	०७।०२	दि. ९।३७	आ. ६।०८	दि. ९।१५	ऐ. ३५।०१	ब. ०७।२	मि.५४।१४	रा. ४।३०	८।२०।४५।२१	२६।२	६।४८	५।१२	१५	२१	५	**पौषी** १५ स्नानदानादिः, **कौशिकीस्नानं तन्मन्त्रश्च**–गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः श्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।। ✲

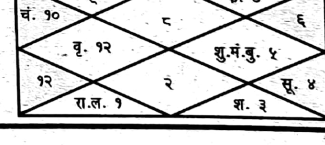
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
२ मं.	९।१९।२९।३३	८।२०।४०।१७	३।२९।३३।३१	८।२३।२७।१९	७।४।४९।३६	११।२३।३१।३०	४२।५३	१४।४९	१६।४५	१८।५८	२१।१६	२३।३२	१।४७	४।०४	६।२१	८।२६	१०।१२	११।४३	१३।१२
३ बु.	९।२०।१५।५०	८।२२।११।४८	३।२९।३०।१६	८।२४।४२।५५	७।४।५५।५४	११।२३।२८।१९	४२।५३	१४।४४	१६।४०	१८।५३	२१।११	२३।२७	१।४२	३।५९	६।१६	८।२१	१०।७	११।३८	१३।०७
४ वृ.	९।२१।२।०६	८।२३।४३।१९	३।२९।२७।०१	८।२५।५८।३१	७।५।२।१२	११।२३।२५।०८	४२।५३	१४।४०	१६।३६	१८।४९	२१।०७	२३।२३	१।३८	३।५५	६।१२	८।१७	१०।३	११।३४	१३।०३
५ शु.	९।२१।४८।२२	८।२५।१४।४९	३।२९।२३।४६	८।२७।१४।०७	७।५।८।३०	११।२३।२१।५७	४२।५४	१४।३५	१६।३१	१८।४४	२१।०२	२३।१८	१।३३	३।५०	६।०७	८।१२	९।५८	११।२९	१२।५८
६ श.	९।२२।३४।३८	८।२६।४६।१९	३।२९।२०।३१	८।२८।२९।४३	७।५।१४।४८	११।२३।१८।४६	४२।५५	१४।३१	१६।२७	१८।४०	२०।५८	२३।१४	१।२९	३।४६	६।०३	८।०८	९।५४	११।२५	१२।५४
७ र.	९।२३।२०।५४	८।२८।१७।४९	३।२९।१७।१६	८।२९।४५।१९	७।५।२१।०६	११।२३।१५।३६	४२।५६	१४।२६	१६।२२	१८।३५	२०।५३	२३।०९	१।२४	३।४१	५।५८	८।०३	९।४९	११।२०	१२।४९
८ चं.	९।२४।०७।२९	८।२९।३५।४९	३।२९।१२।४८	९।१।००।५३	७।५।२७।००	११।२३।१२।२५	४२।५७	१४।२२	१६।१८	१८।३१	२०।४९	२३।०५	१।२०	३।३७	५।५४	७।५९	९।४५	११।१६	१२।४५
९ मं.	९।२४।५४।०४	९।००।५३।४९	३।२९।८।२०	९।२।१६।२६	७।५।३२।५४	११।२३।९।१४	४२।५८	१४।१७	१६।१३	१८।२६	२०।४४	२३।००	१।१५	३।३२	५।४९	७।५४	९।४०	११।११	१२।४०
१० बु.	९।२५।४०।३९	९।०२।११।४९	३।२९।३।५२	९।३।३१।५९	७।५।३८।४८	११।२३।९।३	४२।५९	१४।१३	१६।०९	१८।२२	२०।४०	२२।५६	१।११	३।२८	५।४५	७।५०	९।३६	११।०७	१२।३६
११ वृ.	९।२६।२७।१४	९।०३।२९।४९	३।२८।५९।२४	९।४।४७।३२	७।५।४४।४२	११।२३।२।५२	४३।००	१४।०८	१६।०४	१८।१७	२०।३५	२२।५१	१।०६	३।२३	५।४०	७।४५	९।३१	११।०२	१२।३१
१२ शु.	९।२७।१३।४९	९।०४।४७।४९	३।२८।५४।५६	९।६।३।५	७।५।५०।३६	११।२२।५९।४१	४३।००	१४।०४	१६।००	१८।१२	२०।३१	२२।४७	१।०२	३।१९	५।३६	७।४१	९।२७	१०।५८	१२।२७
१३ श.	९।२८।००।२४	९।०६।०५।४९	३।२८।५०।२८	९।७।१८।३८	७।५।५६।३०	११।२२।५६।३१	४३।००	१३।५९	१५।५५	१८।०८	२०।२६	२२।४२	०।५७	३।१४	५।३१	७।३६	९।२२	१०।५३	१२।२२
१४ र.	९।२८।४६।५८	९।०७।२३।४९	३।२८।४६।००	९।८।३४।११	७।६।२।२३	११।२२।५३।२१	४३।००	१३।५५	१५।५१	१८।०४	२०।२२	२२।३८	०।५३	३।१०	५।२७	७।३२	९।१८	१०।४९	१२।१८
१५ च.	९।२९।३३।५०	९।०८।१९।५५	३।२८।४०।२८	९।९।४९।३१	७।६।८।३४	११।२२।५०।१०	४३।०१	१३।५०	१५।४६	१७।५९	२०।१७	२२।३३	०।४८	३।०५	५।२२	७।२७	९।१३	१०।४४	१२।१३

७ रवौ वल्ली ८।३९।२।३५
अयनांशाः २२।४४।७



१४ रवौ वल्ली ८।३९।२।४२
अयनांशाः २२।४४।८



विविधविषयाः – वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः– दशमी पञ्चपंचाशद् घटिका चेत्प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत्।। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराबिन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा। **नारदपुराणे**– क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम्। **कौर्मे**– तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन।। **भविष्ये**– दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्तितः।। **अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्ते**– चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम्। एकादश्यां **त्याज्यवस्तूनि**– कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने। केषामन्नं परान्नं नेत्याह– गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्नं तथैव च। पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः।। **स्वपवित्रवस्तूनि**– आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।। **अशक्तादिषु विशेषमाह कात्यायनः**– अशक्तौ निर्जने देशे मृते जाते च सूतके। जपेच्च मानसीं सन्ध्यां कुशवारिविवर्जिताम्।

ग्रहस्थितिः – मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ बुधशुक्रौ, वक्री पूर्वोदितो गुरुः।

वातावरणम् – पक्षादिभागे वातहिमोपलपातच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरभागे शीतवृद्धिवातमेघादयः।

माघकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ६।१।१५ ई. तः, दि. २०।१।१५ ई. या., पूर्वकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः ६ तः शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, ६ तः शिशिरर्तुः सौम्यायनञ्च ।

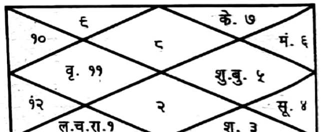
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ मं.	६।५३	दि. १०।४४	पुन. १०।१५	दि. १०।५३	वै. ३४।४२	कौ. ६।५३	कर्क	अहो.	८।२१।४६।४६	२६।०४	६।४७	५।१३	१६	२२	६
२ बु.	१३।५४	दि. १२।२१	पु. १५।२८	दि. १२।५८	वि. ३५।११	रा.१३।५४	कर्क	अहो.	८।२२।४८।११	२६।०६	६।४७	५।१३	१७	२३	७
३ वृ.	१८।४४	दि. २।१७	अश्ले. २१।२९	दि. ३।२३	प्री. ३६।११	वि. १८।४४	क.२१।२९	दि. ३।२३	८।२३।४९।३६	२६।०७	६।४७	५।१३	१८	२४	८
४ शु.	२४।०५	दि. ४।२४	म. २७।५८	सं. ५।५७	आ. ३७।२८	बा. २४।०५	सिंह.	अहो.	८।२४।५१।०१	२६।०८	६।४६	५।१४	१९	२५	९
५ श.	२९।३२	सं. ६।३५	पूफ. ३४।२९	रा. ८।३२	सौ. ३८।४७	तै. २९।३२	सिं.५१।०१	रा. ३।१०	८।२५।५२।२५	२६।०९	६।४६	५।१४	२०	२६	१०
६ र.	३४।३६	रा. ८।३६	उफ. ४०।३६	रा. ११।००	शो. ३९।४६	ग. ०२।०४	कन्या	अहो.	८।२६।५३।४९	२६।१०	६।४६	५।१४	२१	२७	११
७ च.	३८।५६	रा. १०।२२	ह. ४६।०३	रा. १।११	अति. ४०।१२	वि. ६।४८	कन्या	अहो.	८।२७।५५।११	२६।१२	६।४६	५।१४	२२	२८	१२
८ मं.	४२।१७	रा. ११।४०	चि. ५०।३२	रा. २।५८	सु. ३९।५२	बा. १०।३८	क. १८।१८	दि. २।०४	८।२८।५६।३३	२६।१४	६।४५	५।१५	२३	२९	१३
९ बु.	४४।३३	रा. १२।३४	स्वा. ५३।५२	रा. ४।१८	धृ. ३८।४१	तै. १३।२५	तुला	अहो.	८।२९।५७।५४	२६।१६	६।४५	५।१५	२४	३०	१४
१० वृ.	४५।२४	रा. १२।५५	वि. ५५।५५	रा. ५।०७	शू. ३९।२८	व. १४।५९	तु.४०।२६	रा. ९।५५	९।०।५९।१५	२६।१७	६।४५	५।१५	२५	१	१५
११ शु.	४४।५६	रा. १२।४२	अनु. ५६।४३	रा. ५।२५	गं. ३३।१४	ब. १५।१०	वृश्चिक	अहो.	९।२।०।३६	२६।१८	६।४४	५।१६	२६	२	१६
१२ श.	४३।१६	रा. १२।२	ज्ये. ५६।१९	रा. ५।१६	वृ. २९।०२	कौ. १४।०६	वृ.५६।१९	रा. ५।१६	९।३।१।५७	२६।१९	६।४४	५।१६	२७	३	१७
१३ र.	४०।३०	रा. १०।५६	मू. ५४।५०	रा. ४।४०	ध्रु. २३।५८	ग. ११।५३	धनु.	अहो.	९।४।३।१८	२६।२०	६।४४	५।१६	२८	४	१८
१४ चं.	३६।४६	रा. ९।२६	पूषा. ५२।३४	रा. ३।४६	व्या. १८।०४	वि. ८।३८	धनु.	अहो.	९।५।४।३५	२६।२२	६।४४	५।१६	२९	५	१९
३० मं.	३२।१०	रा. ७।३५	उषा. ४९।२८	रा. २।३०	ह. ११।३१	चं. ४।२८	ध. ९।४८	दि. ९।२६	९।६।५।५१	२६।२४	६।४३	५।१७	३०	६	२०

लक्ष्मणसंवत् ९०६ प्रारंभः, माघे **कमलास्नानं** महापुण्यप्रदं, द. ति. ६।५३ उ., **कुम्भे** कुजः १६।३३।
द. ति. १३।५४ या., भ. ४६।१९ उ., (३ एको.)।
भालचन्द्र ४ व्रतं, गणेशावतारः, गणेशपूजनं, गं. १०।२९ उ. २५।२९ या., भ. १८।४४ या.।
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, (४ एको.)।
उत्तरयात्रा षष्ठ्यां पूर्वफल्गुन्याम् ।
उत्तराषाढ़े रविः २९।३५, श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती, भ. ३४।३६ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते ।
भ. ६।४८ या., दक्षिणयात्राष्टम्याम्।
अपूपाष्टका, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।
मकरे रविः ४५।११ मु. १५ फलं महार्घं, सौम्यायनारंभः **शुद्धारंभश्च** ४५।११ उ., मासान्तः, अन्वष्टका।
सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि.० यावद्दिने, पुण्याहः, तिलसंक्रान्तिः, माघस्नानारंभः, **प्रयागे कल्पवासारंभः**, भ. १४।५९ उ. ४५।२४ या.।
मासादिः, **षट्तिला** ११ व्रतं सर्वेषां, द. ति. ४४।५६ उ. ।
गोदुग्धेन पारणं, गं. ५०।१९ उ., द. ति. ४३।१६ या., पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा ।
प्रदोष १३ व्रतं, गं. ५।१९ या., भ. ४०।३० उ., वक्री बुधः ४३।३६, **विवाहः** पूर्वोत्तरयात्रा च त्रयोदश्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, **नरकनिवारण** १४ व्रतं, प्रदोषः घं. ६ मि. ५२ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, **कुशेश्वर-कपिलेश्वर**प्रतिष्ठादिनं, भ. ८।३८ या.।
माघी ३० मौनी ३० स्नानदानादिः, **कलियुगादिः**, कलिगताब्दाः ५११५, भोग्याब्दाश्च ४२६८८५, भौमवती ३० गंगास्नानं कोटिसूर्यग्रहणसमफलदम् ।

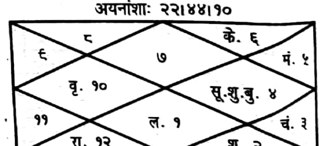
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	१०।०।२०।४१	६।६।१६।०१	३।२८।३४।५६	६।११।४।५१	७।६।१४।४५	११।२२।४६।५९	४३।०२	१३।४६	१५।४२	१७।५५	२०।१३	२३।२९	०।४४	३।०१	५।१८	७।२३	९।०९	१०।४०	१२।०९
२ बु.	१०।१।०७।३२	६।१०।१२।०७	३।२८।२९।२४	६।१२।२०।११	७।६।२०।५५	११।२२।४३।४८	४३।०३	१३।४१	१५।३७	१७।५०	२०।०८	२३।२४	०।३९	२।५६	५।१३	७।१८	९।०४	१०।३५	१२।०४
३ वृ.	१०।१।५४।२३	६।११।८।१३	३।२८।२३।५३	६।१३।३५।३१	७।६।२७।०५	११।२२।४०।३७	४३।०४	१३।३७	१५।३३	१७।४६	२०।०४	२३।२०	०।३५	२।५२	५।०९	७।१४	९।००	१०।३१	१२।००
४ शु.	१०।२।४१।१४	६।१२।४।१८	३।२८।१८।२२	६।१४।५०।५१	७।६।३३।१५	११।२२।३७।२६	४३।०५	१३।३२	१५।२८	१७।४१	१९।५९	२३।१५	०।३०	२।४७	५।०४	७।०९	८।५५	१०।२६	११।५५
५ श.	१०।३।२८।०५	६।१३।००।२३	३।२८।१२।५१	६।१६।६।१०	७।६।३९।२५	११।२२।३४।१६	४३।०५	१३।२८	१५।२४	१७।३७	१९।५५	२३।११	०।२६	२।४३	५।००	७।०५	८।५१	१०।२२	११।५१
६ र.	१०।४।१४।५६	६।१३।५९।२८	३।२८।०७।२०	६।१७।२१।२९	७।६।४५।३५	११।२२।३१।०९	४३।०५	१३।२४	१५।२०	१७।३३	१९।५१	२३।०७	०।२२	२।३९	४।५६	७।०१	८।४७	१०।१८	११।४७
७ चं.	१०।५।१।२४	६।१४।१८।२६	३।२८।००।४४	६।१८।३६।३६	७।६।५०।३५	११।२२।२७।५५	४३।०६	१३।१९	१५।१५	१७।२८	१९।४६	२३।०२	०।१७	२।३४	४।५१	६।५६	८।४२	१०।१३	११।४२
८ मं.	१०।५।४७।५१	६।१४।४०।२४	३।२७।५४।०९	६।१९।५१।४३	७।६।५५।३५	११।२२।२४।४४	४३।०७	१३।१५	१५।११	१७।२४	१९।४२	२२।५८	०।१३	२।३०	४।४७	६।५२	८।३८	१०।९	११।३८
९ बु.	१०।६।३४।१८	६।१५।२।२२	३।२७।४७।३४	६।२१।६।५०	७।७।००।३५	११।२२।२१।३३	४३।०८	१३।११	१५।०७	१७।२०	१९।३८	२२।५४	०।०९	२।२६	४।४३	६।४८	८।३४	१०।५	११।३४
१० वृ.	१०।७।२०।४५	६।१५।२४।२०	३।२७।४०।५९	६।२२।२१।५७	७।७।५।३५	११।२२।१८।२२	४३।०९	१३।०७	१५।०३	१७।१६	१९।३४	२२।५०	०।०५	२।२२	४।३९	६।४४	८।३०	१०।१	११।३०
११ शु.	१०।८।७।१२	६।१५।४६।१७	३।२७।३४।२४	६।२३।३७।४	७।७।१०।३५	११।२२।१५।११	४३।१०	१३।०३	१४।५९	१७।१२	१९।३०	२२।४६	०।०१	२।१८	४।३५	६।४०	८।२६	९।५७	११।२६
१२ श.	१०।८।५३।३९	६।१६।८।१४	३।२७।२७।४९	६।२४।५२।११	७।७।१५।३५	११।२२।१२।०१	४३।१०	१२।५९	१४।५५	१७।०८	१९।२६	२२।४२	२३।५७	२।१४	४।३१	६।३६	८।२२	९।५३	११।२२
१३ र.	१०।९।४०।०६	६।१६।२०।११	३।२७।२१।१४	६।२६।७।१७	७।७।२०।३५	११।२२।८।५१	४३।१०	१२।५४	१४।५०	१७।०३	१९।२१	२२।३७	२३।५२	२।०९	४।२६	६।३१	८।१७	९।४८	११।१७
१४ चं.	१०।१०।२६।३७	६।१६।२७।५१	३।२७।१३।५१	६।२७।२२।१९	७।७।२५।२८	११।२२।५।४०	४३।११	१२।५०	१४।४६	१६।५९	१९।१७	२२।३३	२३।४८	२।०५	४।२२	६।२७	८।१३	९।४४	११।१३
३० मं.	१०।११।१३।८	६।१६।४।१६	३।२७।६।२८	६।२८।३७।२१	७।७।३०।२१	११।२२।२।२९	४३।१२	१२।४६	१४।४२	१६।५५	१९।१३	२२।२९	२३।४४	२।०१	४।१८	६।२३	८।०९	९।४०	११।०९

६ रवौ वल्ली ८।३६।२।४९
अयनांशाः २२।४४।९



१३ रवौ वल्ली ८।३६।२।५६
अयनांशाः २२।४४।१०



विविधविषयाः- माघे **प्रातःस्नानफलम्**- यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ ।। मकरार्के **प्रातःस्नानमन्त्रः**- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्। माघे कुत्रापि **स्नानफलम्** - स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। चतुर्थ्यां **गणेशोत्पत्तिः** - सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां **नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्**- चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा ।।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १३ तो वक्री, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम् - पक्षपूर्वार्द्धे शीतवृद्धिहिमपातवातादयस्तदुत्तरार्द्धभागे मेघचारवातशीतादयः।

माघशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. २१।१।१५ ई. तः दि. ३।२।१५ ई. या., पूर्वकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

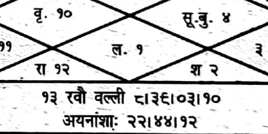
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	२६।५७	सं. ५।३०	श्र. ४५।४८	रा. १।०२	व. ४।२३	व. २६।५७	मकर.	अहो.	६।७।७।०७	२६।२६	६।४३	५।१७	१	७	२१
२ वृ.	२१।२०	दि. ३।१४	ध. ४१।४८	रा. ११।२५	व. ४६।०६	कौ. २१।२०	म. १३।४८	दि. १२।१३	६।८।८।२३	२६।२८	६।४२	५।१८	२	८	२२
३ शु.	१५।२८	दि. १२।५३	श. ३७।३७	रा. ६।४५	व. ४१।११	ग. १५।२८	कुंभ.	अहो.	६।९।९।३९	२६।३०	६।४२	५।१८	३	९	२३
४ श.	०९।३५	दि. १०।३१	पूभा.३३।३३	रा. ८।०६	प. ३३।२१	वि. ९।२५	कु.१९।३४	दि.२।३१	६।१०।१०।५५	२६।३३	६।४१	५।१९	४	१०	२४
५ र.	०३।५२	दि. ८।१४	उभा.२६।४२	रा. ६।३४	शि. २५।४५	बा. ३।५२	मीन.	अहो.	६।११।१२।११	२६।३६	६।४१	५।१९	५	११	२५
७ चं.	५३।४४	रा. ४।१०	रे. २६।१७	सं. ५।११	सि. १८।२८	ग. २६।०८	मी.२६।१७	सं. ५।११	६।१२।१३।२०	२६।४०	६।४०	५।२०	६	१२	२६
८ मं.	४६।४६	रा. २।२३	अ. २३।३३	दि. ३।५४	सा. ११।४४	वि. २१।४५	मेष	अहो.	६।१३।१४।२६	२६।४४	६।३९	५।२१	७	१३	२७
९ बु.	४६।३८	रा. १।१७	भ. २१।४३	दि. ३।१९	शु. ५।३६	बा. १८।१२	मे.३६।२८	रा. ६।१३	६।१४।१५।३८	२६।४८	६।३८	५।२२	८	१४	२८
१० वृ.	४४।३७	रा. १२।२६	कृ. २०।४५	दि. २।५६	शु. ००।२१	तै. १५।३७	वृष	अहो.	६।१५।१६।४७	२६।५१	६।३८	५।२२	९	१५	२९
११ शु.	४३।४८	रा. १२।०८	रो. २०।५६	दि. २।५९	ऐ. ५२।२३	व. १४।१२	वृ.५१।३९	रा. ३।१७	६।१६।१७।५५	२६।५४	६।३७	५।२३	१०	१६	३०
१२ श.	४३।३२	रा. ११।३८	मृग.२२।२२	दि. ३।३४	वै. ४९।५३	ब. १३।४०	मिथुन	अहो.	६।१७।१९।०३	२६।५७	६।३७	५।२३	११	१७	३१
१३ र.	४६।०८	रा. १।०३	आ. २५।०४	दि. ४।३८	वि. ४८।२६	कौ. १४।५०	मिथुन	अहो.	६।१८।२०।११	२७।००	६।३६	५।२४	१२	१८	१
१४ चं.	४९।३	रा. २।१२	पुन.२८।५७	सं. ६।१०	प्री. ४७।५०	ग. १७।३६	मि.१२।५८	दि.११।४६	६।१९।२१।१३	२७।०४	६।३५	५।२५	१३	१९	२
१५ मं.	५३।११	रा. ३।५०	पु. ३३।५८	रा. ८।०६	आ. ५८।०७	वि. २१।०७	कर्क	अहो.	६।२०।२२।५५	२७।०८	६।३४	५।२६	१४	२०	३

सिद्धियोगमानं ५२।३०, शिशिरनवरात्रारंभः **कलशस्थापनं,** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, कर्णविधः, **पञ्चकारंभो रात्रौ** घं. १ मि. २ उ., कुम्भे शुक्रः ४९।१९, **विवाहः** श्रवणायां, ☆ ✓
पश्चिमास्तो बुधः ७।२७, **गुरुवेधाद्विवाहो** मध्यमो धनिष्ठायां, **मुण्डनं,** कर्णविधः, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां, चन्द्रदर्शनं मु. ३० समशृंगं फलं साम्यम्।
बदरी ३, कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, **श्रीगणेश** ४ व्रतं, भ. ४२।३२ उ., मुण्डनं तृतीयायां, (३-४ एको.) ।✓☆ गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायां, कर्णविधः, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा।
श्रवणायां रविः ३२।३६, भ. ९।३५ या., पश्चिमयात्रा चतुर्थ्याम्। ✓○ गं. १४।१७ उ. २९।१७ या., **पञ्चकान्तः** सायं घं. ५ मि. ११ उ., भ. ५३।४४ उ., विवाहो दिवारात्रौ, **मुण्डनं,** ✱ ✓
षष्ठीमानं ५४।४०, वसन्तपञ्चमी, श्रीसरस्वतीपूजनं, पश्चिमाभिमुखहलप्रवाहः, दीक्षाग्रहणं, सरस्वत्यवतारः, **विवाहो रेवत्यां, केतुवेधाद्विवाहो मध्यम** उत्तरभाद्रे, उत्तरयात्रा सप्तम्याम्।
षट्षष्टिगणतंत्रदिवसः, **राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं,** अचला ७, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं, गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमफलदं, **ब्रह्मसावर्णिमन्वादिः,** ○ ✓
भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणं, दीक्षाग्रहणं, भ. २१।४५ या., उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्।
।।००।। ✔ **मुण्डनं** कर्णविधश्च मृगशिरसि, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रैकादश्याम्।
ब्रह्ममानं ५५।३१, **कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रतिष्ठादिनं, विवाहः** पूर्वयात्रा च रोहिण्याम्।
भैमी ११ व्रतं सर्वेषां, द. ति. ४३।४८ उ., भ. १४।१२ उ. ४३।४८ या., **उपनयनं,** एकादशीव्रतोद्यापनं, **विवाहो** दिवारात्रौ, ✔
श्रीमाधव १२, गोदुग्धेन पारणं, द. ति., ४३।३२ या.। ✓ ✱ कर्णविधः, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, पूर्वां विना यात्राष्टम्याम्।
फरवरी २, **प्रदोष** १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ त्रयोदश्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, भ. ४९।३ उ., पूर्वां विना यात्रा पूर्णिमायाम्। ■ **रविदासजयन्ती,** भ. २१।७ या., उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
माघी १५ स्नानदानादिः, गोशालाघट्टे **कमलायां** जीवछघट्टे **जीववत्सायां** स्नानदानशिवार्चनादिकं, ■

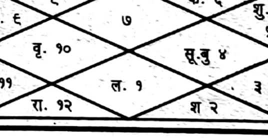
सरस्वतीपूजा– आपस्तम्बः - पञ्चमी तु प्रकर्त्तव्या षष्ठ्या युक्ता तु नारद ।। नन्दिकेश्वरः– प्रातरावाहयेद्देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्। प्रातः प्रातश्च संपूज्य प्रातरेव विसर्जयेत् ।। तथा च– भगवत्याः प्रवेशादिविसर्गान्ताश्च याः क्रियाः। पूर्वाह्न एव कुर्वीत न तत्र तिथियुग्मता ।। शुक्लपक्षे तिथिर्ग्राह्या यस्यामभ्युदितो रविः ।। स्तोकापि सा तिथिः पुण्या यस्यामभ्युदितो रविः ।। इत्यादिवचनैः औदयिकतिथिप्राधान्यात् सरस्वतीपूजा पञ्चम्यां रवौ एव, दि. १४।२।१९८६ ई.-शुक्रवासरवदिति।

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च।						दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्													
	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	१०।११।५८।३८	९।१५।४०।४१	३।२६।५९।०६	९।२९।५२।२३	७।७।३५।१४	११।२१।५६।१८	४३।१३	१२।४२	१४।३८	१६।५१	१९।०६	२१।२५	२३।४०	१।५७	४।१४	६।१९	८।०५	९।३६	११।०५
२ बृ.	१०।१२।४६।०८	९।१५।१७।०६	३।२६।५१।४४	१०।१।७।२५	७।७।४०।०७	११।२१।५६।०७	४३।१४	१२।३८	१४।३४	१६।४७	१९।०५	२१।२१	२३।३६	१।५३	४।१०	६।१५	८।०१	९।३२	११।०१
३ शु.	१०।१३।३२।३८	९।१४।५३।३२	३।२६।४४।२२	१०।२।२२।२६	७।७।४५।५०	११।२१।५२।५६	४३।१५	१२।३३	१४।२९	१६।४२	१९।००	२१।१६	२३।३१	१।४८	४।०६	६।११	७।५७	९।२८	१०।५७
४ श.	१०।१४।१९।०८	९।१४।२८।५८	३।२६।३७।००	१०।३।३७।२७	७।७।४९।५३	११।२१।४९।४६	४३।१६	१२।२९	१४।२५	१६।३८	१८।५६	२१।१२	२३।२७	१।४४	४।०१	६।०६	७।५२	९।२३	१०।५२
५ र.	१०।१५।५।३८	९।१४।६।२४	३।२६।२९।३८	१०।४।५२।२८	७।७।५४।४५	११।२१।४६।३६	४३।१८	१२।२५	१४।२१	१६।३४	१८।५२	२१।०८	२३।२३	१।४०	३।५७	६।०२	७।४८	९।१९	१०।४८
७ चं.	१०।१५।५२।०६	९।१३।१८।४४	३।२६।२१।५६	१०।६।७।११	७।७।५८।५२	११।२१।४३।२५	४३।२०	१२।२१	१४।१७	१६।३०	१८।४८	२१।०४	२३।१९	१।३६	३।५३	५।५८	७।४४	९।१५	१०।४४
८ मं.	१०।१६।३८।३४	९।१२।३१।०४	३।२६।१४।१४	१०।७।२१।५३	७।८।२।५९	११।२१।४०।१४	४३।२२	१२।१७	१४।१३	१६।२६	१८।४४	२१।००	२३।१५	१।३२	३।४९	५।५४	७।४०	९।११	१०।४०
९ बु.	१०।१७।२५।०२	९।११।४३।२४	३।२६।६।३२	१०।८।३६।३५	७।८।७।०६	११।२१।३७।०३	४३।२४	१२।१३	१४।०९	१६।२२	१८।४०	२०।५६	२३।११	१।२८	३।४५	५।५०	७।३६	९।०७	१०।३६
१० वृ.	१०।१८।११।३०	९।१०।५५।४४	३।२५।५८।५०	१०।९।५१।१७	७।८।११।१३	११।२१।३३।५२	४३।२६	१२।०९	१४।०४	१६।१८	१८।३६	२०।५२	२३।०७	१।२४	३।४१	५।४६	७।३२	९।०३	१०।३२
११ शु.	१०।१८।५७।५८	९।१०।८।४	३।२५।५१।०८	१०।११।५।५९	७।८।१५।२०	११।२१।३०।४१	४३।२८	१२।०४	१४।००	१६।१३	१८।३१	२०।४७	२३।०२	१।१९	३।३६	५।४१	७।२७	८।५८	१०।२७
१२ श.	१०।१८।४४।२६	९।९।२०।२५	३।२५।४३।२६	१०।१२।२०।४१	७।८।१९।१७	११।२१।२७।३०	४३।२९	१२।००	१३।५६	१६।०९	१८।२७	२०।४३	२२।५८	१।१५	३।३२	५।३७	७।२३	८।५४	१०।२३
१३ र.	१०।२०।३०।५३	९।८।३२।४६	३।२५।३५।४४	१०।१३।३५।२३	७।८।२३।३३	११।२१।२४।२०	४३।३०	११।५६	१३।५२	१६।०५	१८।२३	२०।३९	२२।५४	१।११	३।२८	५।३३	७।१९	८।५०	१०।१९
१४ चं.	१०।२७।१७।१५	९।८।२।३५	३।२५।२७।४९	१०।१४।४९।४६	७।८।२७।११	११।२१।२१।०९	४३।३२	११।५२	१३।४८	१६।०१	१८।१९	२०।३५	२२।५०	१।०७	३।२४	५।२९	७।१५	८।४६	१०।१५
१५ मं.	१०।२२।३।३७	९।७।३२।२४	३।२५।१९।५४	१०।१६।४।०९	७।८।३०।४९	११।२१।१७।५८	४३।३४	११।४८	१३।४४	१५।५७	१८।१५	२०।३१	२२।४६	१।०३	३।२०	५।२५	७।११	८।४२	१०।११

५ रवौ वल्ली ८।३९।३।०३
अयनांशाः २२।४४।११



१३ रवौ वल्ली ८।३९।०३।१०
अयनांशाः २२।४४।१२



विविधविषयाः– अचलासप्तम्यां सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र **स्नानमन्त्रः**– यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमि।। ततः सूर्यार्घ्यं **दद्यात्तन्मन्त्रः** – सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर ।। ततः प्रणमेच्च **तन्मन्त्रः**– जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये ।। ततो दानादिकं कुर्यात्। अष्टम्यां **भीष्मतर्पणमन्त्रः**– वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे ।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्रापि कर्त्तव्यम्।
ग्रहस्थितिः – मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, वक्री पश्चिमोदितो बुधः २ तः पश्चिमास्तः, वकी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।
वातावरणम् – पक्षाद्यन्तभागयोः वातशीतवृद्धिच्छिन्नवृष्टयस्तन्मध्यभागे मेघचारतापवाताभ्रचारादयः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

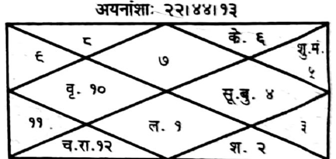
शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ४।२।१५ ई. तः दि. १८।२।१५ ई. या., पूर्वेकालः, ६ तो दक्षिणेकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.	
१ बु.	५८।००	रा. ५।४६	अश्ले.३६।४६	रा. ६।३२	सौ. ४६।०१	बा. २५।३६	क. ३७।२५	रा. ६।३२	६।२१।२३।१६	२७।१२	६।३४	५।२६	१५	२१	४	फाल्गुने वाङ्मतीस्नानं महापुण्यप्रदं, गं. २८।४६ उ. ४३।४६ या., सूर्यवियान्मघायां विवाहो नैव।
२ बृ.	६०।००	अहो.	म. ४६।१३	रा. ११।५९	शो. ५०।१७	तै.२८।४१	सिंह.	अहो.	६।२२।२४।१७	२७।१५	६।३३	५।२७	१६	२२	५	त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, मघायां सूर्यवेधाद्विवाहो नैव, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
२ शु.	३।२१	दि. ७।५२	पूफ. ५२।४७	रा. ३।३९	अति. ५१।४२	ग. ३।२१	सिंह.	अहो.	६।२३।२५।१८	२७।१८	६।३२	५।२८	१७	२३	६	**धनिष्ठायां रविः** ३८।२७, भ. ३६।३ उ., **केतुवेधाद्विवाहो मध्यम** उत्तरफल्गुन्यां, पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायां पूर्वफल्गुन्याम्।
३ श.	८।४५	दि. १०।२	उफ. ५६।०२	रा. ६।०३	सु. ५२।५२	वि. ८।४५	सिं ६।२१	दि. १०।१६	६।२४।२६।१९	२७।२१	६।३२	५।२८	१८	२४	७	**श्रीहेरम्ब** ४ व्रतं, भ. ८।४५ या., पूर्वोदितो बुधः ००।४६।
४ र.	१३।४४	दि. ११।१	ह. ६०।००	अहो.	धृ. ५३।२५	बा. १३।४४	कन्या	अहो.	६।२५।२७।२०	२७।२४	६।३१	५।२९	१९	२५	८	**विवाहः** पूर्वदक्षिणयात्रा च पञ्चयम्यां, (५ एको.)।
५ चं.	१८।००	दि. ११४३	ह. ०४।४२	दि. ८।२४	शू. ५३।३३	तै. १८।००	कं. ३७।२४	रा. ६।२९	६।२६।२८।१०	२७।२७	६।३१	५।२९	२०	२६	९	**विवाहो** हस्ते, चित्रायां कुजवेधाद्विवाहो नैव, **मुण्डनं** कर्णवेधश्च पञ्चम्यां, दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।
६ मं.	२१।०८	दि. २।५७	चि. ६।२५	दि. १०।१६	गं. ५२।४०	व. २१।०८	तुला	अहो.	६।२७।२९।००	२७।३०	६।३०	५।३०	२१	२७	१०	भ. २१।८ उ. ५२।१२ या., **मार्गी बुधः** ४३।५८, पश्चिमदक्षिणयात्रा सप्तम्यां, (६ एको.)।
७ बु.	२३।१५	दि. ३।४७	स्वा. १३।१२	दि. ११।४२	वृ. ५०।४९	ब. २३।१५	तु. ५९।५०	रा. ६।२५	६।२८।२९।५०	२७।३३	६।२९	५।३१	२२	२८	११	**विवाहः** पश्चिमदक्षिणयात्रा च स्वात्याम्।
८ बृ.	२३।५८	दि. ४।०४	वि. १५।२५	दि. १२।३९	ध्रु. ४७।५९	कौ. २३।५८	वृश्चिक	अहो.	६।२९।३०।४०	२७।३६	६।२९	५।३१	२३	२९	१२	मासान्तः, शाकाष्टका। ✱ **श्रीरावणेश्वरवैद्यनाथसिद्धिश्वरनाथयोः** प्रतिष्ठादिनं, सिंहश्वरमेलापकः, भ. १०।१५ उ. ३७।३६ या., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।
९ शु.	२३।२४	दि. ३।५०	अनु. १६।२८	दि. १।०३	व्या. ४४।०९	ग. २३।२४	वृश्चिक	अहो.	१०।०।३१।३०	२७।३९	६।२८	५।३२	२४	१	१३	**कुंभे रविः** १२।४५ मु. ३० फलं साम्यं, विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ८ मि. २२ उ. घं. २ मि. ४६ यावद्दिने, अन्वष्टका, **पुण्याहः**, माघस्नानसमाप्तिः, प्रयागे कल्पवाससमाप्तिः, भ. ५२।३६ उ.।
१० श.	२१।३६	दि. ३।०६	ज्ये. १६।२१	दि. १।००	ह. ३९।२२	वि. २१।३६	वृ. १६।२१	दि. १।००	१०।१।३२।२०	२७।४२	६।२८	५।३२	२५	२	१४	मासादिः, गं. १०।२१ उ. २५।२१ या., भ. २१।३६ या., **मीने कुजः** १।५६।
११ र.	१८।४४	दि. १।५७	मू. १५।०७	दि. ११।३०	व. ३३।४७	बा. १८।४४	धनु.	अहो.	१०।२।३३।१९	२७।४५	६।२७	५।३३	२६	३	१५	विजया ११ व्रतं सर्वेषां, **मीने शुक्रः** ४।३३, **विवाहो** मूले, पूर्वोत्तरयात्रा द्वादश्याम्।
१२ चं.	१४।५४	दि. १२।२८	पूषा. १३।०३	दि. ११।३९	सि. २७।३२	तै. १४।५४	ध.२७।१६	सं. ५।२१	१०।३।३३।४८	२७।४८	६।२६	५।३४	२७	४	१६	गोदध्ना पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **विवाह** उत्तराषाढे, (१२-१३ एको.)।
१३ मं.	१०।१५	दि. १०।३२	उषा. १०।०७	दि. १०।२९	व्य. २०।३७	व. १०।१५	मकर	अहो.	१०।४।३४।२७	२७।५२	६।२६	५।३४	२८	५	१७	**प्रदोष** १४ व्रतं, नक्तव्रतं, **महाशिवरात्रिव्रतं** प्रदोषे घं. ७ मि. १० यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः, श्रीशिवदर्शनं, ✱
१४ बु.	०४।५७	दि. ८।२४	श्र. ६।३६	दि. ६।०३	व. १३।१४	श. ४।५७	म. ३४।३८	रा. ८।१६	१०।५।३५।०६	२७।५६	६।२५	५।३५	२९	६	१८	**अमामानं** ५४।१६, गोसहस्रिका ३० स्नानदानादिः, **पञ्चकारंभो** दिवा घं.६ मि. ३ उ., पश्चिमयात्रा प्रतिपदि।

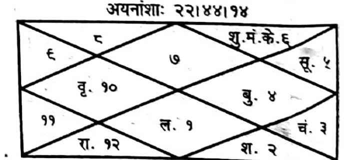
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	१०।२२।४६।५८	६।७।२।१३	३।२५।११।५९	१०।१७।१८।३२	७।८।३४।२६	११।२१।१४।४७	४३।३६	११।४३	१३।३९	१५।५२	१८।१०	२०।२६	२२।४१	०।५८	३।१५	५।२०	७।०६	८।३७	१०।०६
२ बृ.	१०।२३।३६।१९	६।६।३२।०२	३।२५।४।०४	१०।१८।३२।५५	७।८।३८।०३	११।२१।११।३६	४३।३८	११।३९	१३।३५	१५।४८	१८।०६	२०।२२	२२।३७	०।५४	३।११	५।१६	७।०२	८।३३	१०।०२
२ शु.	१०।२४।२२।४०	६।६।१।५१	३।२४।५६।०९	१०।१९।४७।१७	७।८।४१।४०	११।२१।८।२५	४३।४०	११।३५	१३।३१	१५।४४	१८।०२	२०।१८	२२।३३	०।५०	३।०७	५।१२	६।५८	८।२९	६।५८
३ श.	१०।२५।९।०१	६।५।३१।४०	३।२४।४८।१४	१०।२१।२।३९	७।८।४५।१७	११।२१।५।१५	४३।४१	११।३१	१३।२७	१५।४०	१७।५८	२०।१४	२२।२९	०।४६	३।०३	५।०८	६।५४	८।२५	६।५४
४ र.	१०।२५।५५।२२	६।५।१।२९	३।२४।४०।१९	१०।२२।१६।०१	७।८।४८।५४	११।२१।२।५	४३।४२	११।२७	१३।२३	१५।३६	१७।५४	२०।१०	२२।२५	०।४२	२।५९	५।०४	६।५०	८।२१	६।५०
५ चं.	१०।२६।४१।३१	६।४।५९।२२	३।२४।३२।१६	१०।२३।३०।०२	७।८।५१।४८	११।२०।५८।५४	४३।४४	११।२२	१३।१८	१५।३१	१७।४९	२०।०५	२२।२०	०।३७	२।५४	४।५९	६।४५	८।१६	६।४५
६ मं.	१०।२७।२७।४०	६।४।५३।१५	३।२४।२४।१३	१०।२४।४४।०३	७।८।५४।४२	११।२०।५५।४३	४३।४६	११।१८	१३।१४	१५।२७	१७।४५	२०।०१	२२।१६	०।३३	२।५०	४।५५	६।४१	८।१२	६।४१
७ बु.	१०।२८।१३।४९	६।५।११।३०	३।२४।१६।१०	१०।२५।५८।०४	७।८।५७।३६	११।२०।५२।३२	४३।४८	११।१४	१३।१०	१५।२३	१७।४१	१९।५७	२२।१२	०।२९	२।४६	४।५१	६।३७	८।०८	६।३७
८ बृ.	१०।२८।५९।५७	६।५।२९।४५	३।२४।८।०७	१०।२७।१२।०५	७।९।००।३०	११।२०।४९।२१	४३।४९	११।१०	१३।०६	१५।१९	१७।३७	१९।५३	२२।०८	०।२५	२।४२	४।४७	६।३३	८।०४	६।३३
९ शु.	१०।२९।४६।०५	६।५।४८।००	३।२४।००।०४	१०।२८।२६।०५	७।९।३।२४	११।२०।४६।१०	४३।५०	११।०६	१३।०२	१५।१५	१७।३३	१९।४९	२२।०४	०।२१	२।३८	४।४३	६।२९	८।००	६।२९
१० श.	११।०।३२।१३	६।६।६।१५	३।२३।५२।०१	१०।२९।४०।५	७।९।६।१८	११।२०।४३।००	४३।५१	११।०२	१२।५८	१५।११	१७।२९	१९।४५	२२।००	०।१७	२।३४	४।३९	६।२५	७।५६	६।२५
११ र.	११।१।१८।२१	६।६।२४।२९	३।२३।४३।५८	११।००।५४।०६	७।९।९।११	११।२०।३९।५०	४३।५२	१०।५८	१२।५४	१५।०७	१७।२५	१९।४१	२१।५६	०।१३	२।३०	४।३५	६।२१	७।५२	६।२१
१२ चं.	११।२।४।२५	६।७।१४।०४	३।२३।३९।१५	११।२।७।४६	७।९।११।२९	११।२०।३९।३९	४३।५४	१०।५५	१२।५१	१५।०४	१७।२२	१९।३८	२१।५३	०।१०	२।२७	४।३२	६।१८	७।४९	६।१८
१३ मं.	११।२।५०।२९	६।८।३।३९	३।२३।२८।३२	११।३।२१।२६	७।९।१३।४७	११।२०।३३।२८	४३।५६	१०।५१	१२।४७	१५।००	१७।१८	१९।३४	२१।४९	०।०६	२।२३	४।२८	६।१४	७।४५	६।१४
१४ बु.	११।३।३६।३३	६।८।५३।१४	३।२३।२०।४९	११।४।३५।०६	७।९।१६।०५	११।२०।३०।१७	४३।५८	१०।४७	१२।४३	१४।५६	१७।१४	१९।३०	२१।४५	०।०२	२।१९	४।२४	६।१०	७।४१	६।१०

४ रवौ वल्ली ८।३९।३।१७
अयनांशाः २२।४४।१३



११ रवौ वल्ली ८।३९।३।२४
अयनांशाः २२।४४।१४



विविधविषयाः- माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे-माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः।। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता ।। तथा च- उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।। **गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः-** त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः। अमृतस्यारिणस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते। **गंगास्नानमन्त्रः-** ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव। **गंगामाहात्म्यं, विष्णुपुराणे-** गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्। पुनश्च- इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजङ्गं करे रथाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।

ग्रहस्थितिः - मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ३ तः पूर्वोदितः ६ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोः झंझावातहिमोपलपातादयस्तन्मध्यभागे मेघचारतापवातादयः।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. १९।२।१५ ई. तः दि. ५।३।१५ ई. या., दक्षिणेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ वृ.	५३।२२	रा. ३।४५	ध. ०२।४०	दि. ७।२८	प. ५।३२	किं. २६।१९	कुम्भ.	अहो.	१०।६।३५।४५	२८।००	६।२४	५।३६	३०	७	१९
२ शु.	४७।२७	रा. १।२२	पूभा. ५४।२४	रा. ४।०९	सि. ४६।५६	बा.२०।२५	कुं. ४०।२५	रा. १०।३३	१०।७।३६।२४	२८।०४	६।२३	५।३७	१	८	२०
३ श.	४१।४२	रा. ११।१४	उभा. ५०।२९	रा. २।३५	सा. ४२।१७	तै. १४।३५	मीन.	अहो.	१०।८।३७।०२	२८।०७	६।२३	५।३७	२	९	२१
४ र.	३६।२३	रा. ८।५५	रे. ४६।५९	रा. १।१०	शु. ३४।५५	व. ६।०४	मी.४६।५९	रा. १।१०	१०।९।३७।४०	२८।१०	६।२२	५।३८	३	१०	२२
~~५ चं.~~	~~२१।३७~~	~~रा. ७।००~~	~~अ. ४४।०३~~	~~रा. ११।५८~~	~~शु. २८।०५~~	~~ब. ४।००~~	~~मेष~~	~~अहो.~~	~~१०।१०।३८।१५~~	~~२८।१४~~	~~६।२१~~	~~५।३८~~	~~४~~	~~११~~	~~२३~~
६ मं.	२७।४०	सं. ५।२४	भ. ४२।०३	रा. ११।०९	ब्र. २१।५१	तै. २७।४०	मे.५६।४५	रा. ५।०२	१०।११।३८।३०	२८।१८	६।२०	५।४०	५	१२	२४
७ बु.	२४।३७	दि. ४।११	कृ. ४०।५२	रा. १०।४१	ऐ. १६।२०	व. २४।३७	वृष.	अहो.	१०।१२।३८।५५	२८।२२	६।२०	५।४०	६	१३	२५
८ वृ.	२२।३८	दि. ३।२२	रो. ४०।४९	रा. १०।३९	वै. ११।३९	ब. २२।३८	वृष.	अहो.	१०।१३।३९।१९	२८।२६	६।१९	५।४१	७	१४	२६
९ शु.	२१।५१	दि. ३।०२	मृ. ४१।५६	रा. ९।०४	वि. ७।५४	कौ. २१।५१	वृ. ११।२३	दि. १०।५१	१०।१४।३९।४३	२८।३०	६।१८	५।४२	८	१५	२७
१० श.	२२।२४	दि. ३।१५	आ. ४४।२३	रा. १२।२	प्री. ५।१०	ग. २२।२४	मिथुन.	अहो.	१०।१५।४०।०७	२८।३४	६।१७	५।४३	९	१६	२८
११ र.	२४।१८	दि. ४।००	पुन. ४८।०४	रा. १।३१	आ. ३।२६	वि. २४।१८	मि.००।१८	दि. ६।२४	१०।१६।४०।३१	२८।३८	६।१७	५।४३	१०	१७	१
१२ च.	२७।१८	सं. ४।११	पु. ५२।५३	रा. ३।०७	सौ. २।३८	बा. २७।१८	कर्क	अहो.	१०।१७।४०।४४	२८।४२	६।१६	५।४४	११	१८	२
१३ मं.	३१।२७	रा. ६।५०	अश्ले.५८।३५	रा. ५।५३	शो. २।४५	तै. ३१।२७	क.५८।३५	रा. ५।२३	१०।१८।४०।५७	२८।४६	६।१५	५।४५	१२	१९	३
१४ बु.	३६।१४	रा. ८।४४	म. ६०।००	अहो.	अति. ३।३३	ग. ३।५१	सिंह	अहो.	१०।१९।४१।१०	२८।५०	६।१४	५।४६	१३	२०	४
१५ वृ.	४१।३२	रा. १०।५०	म. ४।५३	दि. ८।१०	सु. ४।४५	वि. ८।५३	सिंह	अहो.	१०।२०।४१।२३	२८।५४	६।१३	५।४७	१४	२१	५

शतभिषामानं ५५।५०, शिवयोगमानं ५२।११, **शतभिषायां रविः** ४८।१२, **कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारंभः**, रामकृष्णपरमहंसजयन्ती, **द्विरागमनं**, पश्चिमयात्रा कर्णविधश्च धनिष्ठायाम्।

विवाहो द्विरागमनञ्चोत्तरभाद्रे, उत्तरयात्रा तृतीयायां पूर्वभाद्रे, चन्द्रदर्शनं मु. ३० समशृंगं फलं साम्यम्। ▼ उत्तरयात्रा पञ्चम्यां रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा।

द. ति. ४१।४२ उ.।

श्रीगणेश ४ व्रतं, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १ मि. १० उ., गं. ३४।५९ उ. ४६।५९ या., द. ति. ३६।२३ या., भ. ६।४ उ. ३६।२३ या., **विवाहो** द्विरागमनञ्च पंचम्यां, ▼

उपनयनं, मुण्डनं, कर्णविधः, द्विरागमनं **विवाहः** पूर्वां विना यात्रा चाश्विन्याम्।

।।००।। ○ **होलिकादाहो** रात्रौ पूर्णिमायां, होलिकादाहे पूर्ववायौ राजप्रजासुखमग्निकोणेऽग्निभयं दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं पश्चिमे वृष्टिर्वायव्ये वायुवृद्धिरुत्तरैशान्ययोः ❖

भ. २४।३७ उ. ५३।३८ या., **विवाहो** रोहिण्याम्।

विवाहो द्विरागमनं पूर्वयात्रा चाष्टम्याम्।

विवाहो मुण्डनं कर्णविधो द्विरागमनं गृहप्रवेशश्च दशम्यां मृगशिरसि, पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि। ❖ सुभिक्षं निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः, भ. ८।३५ या.।

भ. ५३।२१ उ., गृहप्रवेशः पश्चिमदक्षिणयात्रा च पुनर्वसौ।

मार्च ३, **आमलकी** ११ व्रतं सर्वेषां, जनकपुरस्य लघ्वीपरिक्रमारंभः, भ. २४।१८ या., क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं, **एकादशीव्रतोद्यापनं**, द्विरागमनं द्वादश्यां, उत्तरयात्रा द्वादश्यां पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा।

गोविन्द १२, समुद्रस्नानं जगन्नाथ दर्शनञ्च, गोदघ्ना पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, कर्णविधः, गृहप्रवेशः पुष्ये, द्विरागमनं पूर्वां विना यात्रा च त्रयोदश्यां पुष्ये।

गं. ४७।३५ उ.।

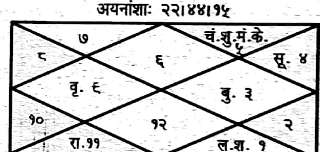
प्रदोष १४ व्रतं, गं. २।३५ या., भ. ३६।१४ उ., **विवाहः** पूर्णिमायाम्।

पूर्वभाद्रे रविः ३।११, **फाल्गुनी** १५ स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः, **कुलदेवताभ्यः सिन्दूरार्पणं** (पातरिदान), जनकपुरस्यान्तर्गृहीयपरिक्रमा तत्समाप्तिश्च, चैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, ○

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च।						दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्												
	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ वृ.	११।४।२२।३७	६।६।४२।५०	३।२३।१३।०६	११।५।४८।४६	७।६।१८।२३	११।२०।२७।०६	४४।००	१०।४३	१२।३६	१४।५२	१७।१०	१९।२६	२१।४१	२३।५८	२।१५	४।२०	६।०६	७।३७	६।०६
२ शु.	११।९।२८।४१	६।१०।३२।३६	३।२३।५।२३	११।७।२।२६	७।६।२०।४१	११।२०।२३।५५	४४।०२	१०।३९	१२।३५	१४।४८	१७।०६	१९।२२	२१।३७	२३।५४	२।११	४।१६	६।०२	७।३३	६।०२
३ श.	११।५।५४।४५	६।११।२२।०२	३।२२।५७।४०	११।८।१६।०६	७।६।२२।५९	११।२०।२०।४५	४४।०४	१०।३६	१२।३२	१४।४५	१७।०३	१९।१९	२१।३४	२३।५१	२।०८	४।१३	५।५९	७।३०	८।५९
४ र.	११।६।४०।४८	६।१२।११।३८	३।२२।४९।५७	११।९।२९।४५	७।६।२५।१७	११।२०।१७।३५	४४।०५	१०।३२	१२।२८	१४।४१	१६।५९	१९।१५	२१।३०	२३।४७	२।०४	४।०९	५।५५	७।२६	८।५५
५ चं.	११।७।२६।३६	६।१३।२७।०९	३।२२।४२।३९	११।१०।४३।१५	७।६।२६।५२	११।२०।१४।२४	४४।०७	१०।२८	१२।२४	१४।३७	१६।५५	१९।११	२१।२६	२३।४३	२।००	४।०५	५।५१	७।२२	८।५१
६ मं.	११।८।१२।२४	६।१४।४२।४०	३।२२।३५।०१	११।११।५६।४४	७।६।२८।२७	११।२०।११।१३	४४।०९	१०।२४	१२।२०	१४।३३	१६।५१	१९।०७	२१।२२	२३।३९	१।५६	४।०१	५।४७	७।१८	८।४७
७ बु.	११।८।५८।११	६।१५।५८।१०	३।२२।२७।३३	११।१३।१०।१३	७।६।३०।०२	११।२०।८।०२	४४।११	१०।२०	१२।१६	१४।२९	१६।४७	१९।०३	२१।१८	२३।३५	१।५२	३।५७	५।४३	७।१४	८।४३
८ वृ.	११।९।४३।५८	६।१७।१३।४०	३।२२।२०।५	११।१४।२३।४२	७।६।३१।३७	११।२०।४।५१	४४।१३	१०।१७	१२।१३	१४।२६	१६।४४	१९।००	२१।१५	२३।३२	१।४९	३।५४	५।४०	७।११	८।४०
९ शु.	११।१०।२९।४५	६।१८।२९।१०	३।२२।१२।३७	११।१५।३७।११	७।६।३३।१२	११।२०।१।४०	४४।१५	१०।१३	१२।०९	१४।२२	१६।४०	१८।५६	२१।११	२३।२८	१।४५	३।५०	५।३६	७।०७	८।३६
१० श.	११।११।१५।३२	६।१९।४४।४०	३।२२।०५।०६	११।१६।५०।४०	७।६।३४।४७	११।१९।५८।२९	४४।१७	१०।०९	१२।०५	१४।१८	१६।३६	१८।५२	२१।०७	२३।२४	१।४१	३।४६	५।३२	७।०३	८।३२
११ र.	११।१२।१।१९	६।२१।००।१०	३।२१।५७।४२	११।१८।४।०९	७।६।३६।२२	११।१९।५५।१९	४४।१९	१०।०५	१२।०१	१४।१४	१६।३२	१८।४८	२१।०३	२३।२०	१।३७	३।४२	५।२८	६।५९	८।२८
१२ चं.	११।१२।४७।००	६।२२।३१।३५	३।२१।५०।५४	११।१९।१७।०४	७।६।३७।२४	११।१९।५२।०८	४४।२१	१०।०१	११।५७	१४।१०	१६।२८	१८।४४	२०।५९	२३।१६	१।३३	३।३८	५।२४	६।५५	८।२४
१३ मं.	११।१३।३२।४०	६।२४।३।००	३।२१।४४।०६	११।२०।२९।५८	७।६।३८।२६	११।१९।४८।५७	४४।२३	९।५७	११।५३	१४।०६	१६।२४	१८।४०	२०।५५	२३।१२	१।२९	३।३४	५।२०	६।५१	८।२०
१४ बु.	११।१४।१८।२०	६।२५।३४।२५	३।२१।३७।१८	११।२१।४२।५२	७।६।३९।२८	११।१९।४५।४५	४४।२५	९।५४	११।५०	१४।०३	१६।२१	१८।३७	२०।५२	२३।०९	१।२६	३।३१	५।१७	६।४८	८।१७
१५ वृ.	११।१५।४।००	६।२७।५।५०	३।२१।३०।३०	११।२२।५५।४६	७।६।४०।३०	११।१९।४२।३५	४४।२७	९।५०	११।४६	१३।५९	१६।१७	१८।३३	२०।४८	२३।०५	१।२२	३।२७	५।१३	६।४४	८।१३

४ रवौ वल्ली ८।३९।३।३१

अयनांशाः २२।४४।१५



११ रवौ वल्ली ८।३९।३।३८

अयनांशाः २२।४४।१६



विविधविषयाः– फाल्गुनपूर्णिमायां **होलिकादाहः**– तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। धृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः**– असृमयावसन्तप्तैः कृत्वां त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। **तत्प्रदीपनमन्त्रः**– दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः**– वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।। प्रयागे **केशवपनफलम्**– किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। **स्थानविशेषमहत्त्वम्**– प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्। **सुवर्णपवित्रीमहत्त्वम्**– अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। **स्वर्णात्मकपवित्रस्य** कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। अभावे रजतादीनामपि।

ग्रहस्थितिः – मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधशनयः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम् – पक्षाद्यन्तभागयोः तापाग्निभयझंझावातादयस्तदुत्तरार्द्धे मेघच्छायाझंझावातोपलपातादयः।

चैत्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७१, सन् १४२२ साल, दि. ६।३।१५ ई. तः दि. २०।३।१५ ई. या., दक्षिणेकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, १० तो वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.
१ शु.	४६।५१	रा. १२।५६	पूफ. ११।२८	दि. १०।४७	धृ. ६।१३	बा. १४।१२	सि.२८।०४	स. ५।२६	१०।२१।४१।२६	२८।५८	६।१२	५।४८	१५	२२	६
२ श.	५१।५४	रा. २।५४	उफ. १७।५३	दि. ९।२१	शू. ७।३३	तै. १९।१८	कन्या	अहो.	१०।२२।४१।४६	२९।०२	६।१२	५।४८	१६	२३	७
३ र.	५५।५३	रा. ४।३२	ह. २३।४१	दि. ३।३६	ग. ८।२८	व. २३।४६	कं. ५६।१०	रा. ४।३६	१०।२३।४२।०२	२९।०६	६।११	५।४९	१७	२४	८
४ च.	५८।५२	रा. ५।४३	चि. २८।३९	सं. ५।३८	वृ. ८।४६	ब. २७।२२	तुला	अहो.	१०।२४।४२।०१	२९।१०	६।१०	५।५०	१८	२५	९
५ मं.	६०।००	अहो.	स्वा. ३२।३०	रा. ७।०६	ध्रु. ८।०९	कौ. ३०।५०	तुला	अहो.	१०।२५।४२।००	२९।१४	६।०९	५।५१	१९	२६	१०
~~५ बु.~~	~~००।४८~~	~~दि. ६।२७~~	~~वि. ३५।१०~~	रा. ८।१२	~~व्या. ६।४३~~	~~तै. ००।४८~~	तु. १९।३०	दि. १।५६	~~१०।२६।४१।५८~~	~~२९।१८~~	~~६।०८~~	५।५२	२०	२७	११
६ वृ.	०१।२१	दि. ६।४०	अनु. ३६।३०	रा. ८।४४	ह. ४।१६	व. ०१।२१	वृश्चिक	अहो.	१०।२७।४१।५६	२९।२२	६।०८	५।५२	२१	२८	१२
७ शु.	००।३७	दि. ६।०७	ज्ये. ३६।४०	रा. ८।४७	व. ०।५०	ब. ००।३७	वृ. ३६।४०	रा. ८।४७	१०।२८।४१।५४	२९।२६	६।०७	५।५३	२२	२९	१३
९ श.	५५।३८	रा. ४।२१	मू. ३५।३८	रा. ८।२१	व्य. ५९।८	तै. २७।०८	धनु.	अहो.	१०।२९।४१।५२	२९।३०	६।०६	५।५४	२३	३०	१४
१० र.	५१।४२	रा. २।४६	पूषा. ३३।४५	रा. ७।३५	व. ४५।१७	व. २२।४०	ध. ४८।०४	रा. ११।१६	११।०।४१।५०	२९।३४	६।०५	५।५५	२४	१	१५
११ च.	४६।५५	रा. १२।५०	उषा. ३०।५९	रा. ६।२८	प. ३८।२६	ब. १९।१९	मकर	अहो.	११।१।४१।३३	२९।३८	६।०४	५।५६	२५	२	१६
१२ मं.	४१।३४	रा. १०।४२	श्र. २७।३४	सं. ५।०६	शि. ३१।१५	कौ. १४।१५	म. ५५।३८	रा. ४।१६	११।२।४१।१६	२९।४२	६।०४	५।५६	२६	३	१७
१३ बु.	३५।५१	रा. ८।२३	ध. २३।४१	दि. ३।३१	सि. २३।४२	ग. ०८।४३	कुंभ	अहो.	११।३।४०।५९	२९।४६	६।०३	५।५७	२७	४	१८
१४ वृ.	२९।५१	सं. ५।५८	श. १९।३६	दि. १।५२	सा. १५।५९	श. ०२।५१	कुंभ	अहो.	११।४।४०।४२	२९।५०	६।०२	५।५८	२८	५	१९
३० शु.	२३।५३	दि. ३।३४	पूभा. १५।२७	दि. १२।१२	शु. ८।११	ना. २३।५३	कु. १।२९	दि. ६।३७	११।५।४०।२४	२९।५४	६।०१	५।५९	२९	६	२०

होलिकाभस्मधारणं, सचैलस्नानं, **होली, सप्तडोरकबन्धनं,** पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, चैत्रे **लक्ष्मणास्नानं** महापुण्यप्रदं, ०
कुम्भे बुधः ३८।५०, **गृहारंभः,** दक्षिणयात्रा हस्ते। ० **शुक्रकेतुवेधाद्विवाहो** मध्यमः कर्णवेधश्चोत्तरफल्गुन्यां, **द्विरागमनं** प्रतिपद्युत्तरफल्गुन्याम् ।
पूर्वदक्षिणयात्रा तृतीयायां, चैत्रे मेघाच्छन्नत्वं शोभनं, द.ति. ५५।५३ उ., भ. २३।४९ उ. ५५।५३ या., रविकुजवेधाद्विवाहो नैव तृतीयायां, **द्विरागमनं** तृतीयायाम्
विकट ४ व्रतं, द. ति. ५८।५२ या., **द्विरागमनं** पश्चिमदक्षिणयात्रा च पंचम्याम्।
त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
अश्विन्यां मेषे शुक्रः ३५।१, **विवाहः** पश्चिमयात्रा चानुराधायाम्।
भ. १।२१ उ. ३०।५६ या., वक्री शनिः ४२।३६, पूर्वास्तो बुधः ५१।२८, **विवाहोऽनुराधायां,** पश्चिमोत्तरयात्रा।
अष्टमीमानं ५८।२, सिद्धियोगमानं ५५।३३, गं. ३०।४० उ. ४५।४० या., **विवाहो मूले,** उत्तरयात्रा ज्येष्ठायामष्टम्यां ततः पूर्वोत्तरयात्रा ।
मासान्तः।
मीने रविः २।५४ मु. ३० फलं साम्यं, षडशीतिसंक्रान्ति पुण्यकालो घं. ७ मि. १५ उ. घं. १ मि. ३६ यावद्दिने, **पुण्याहः,** भ. २२।४० उ. ५१।४२ या. ।
मासादिः, **पापमोचिनी** ११ व्रतं सर्वेषाम्।
गोघृतेन पारणं, **पञ्चकारंभः** सायं घं. ५ मि. ६ उ., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा ।
उत्तराभाद्रे रविः २३।४८, **वारुणीयोगः** शतभिषायां तत्र दिनं यावद् गंगास्नानं शतसूर्यग्रहणसमफलदं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **प्रदोष** १४ व्रतं, भ ३५।५१ उ.।
भ. २१५१ या.।
चैत्री ३० स्नानदानादिः।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ शु.	११।१५।४९।४०	६।२८।३७।१५	३।२१।२३।४२	११।२४।८।४०	७।६।४१।३२	११।१९।३९।२४
२ श.	११।१६।३५।२०	१०।००।८।३९	३।२१।१६।५५	११।२५।२१।३४	७।६।४२।३४	११।१९।३६।१४
३ र.	११।१७।२१।००	१०।१।४०।०३	३।२१।१०।०८	११।२६।३४।२८	७।६।४३।३५	११।१९।३३।४
४ चं.	११।१८।०६।२०	१०।३।२१।३६	३।२१।४।१५	११।२७।४६।५१	७।६।४३।५७	११।१९।२९।५३
५ मं.	११।१८।५१।४०	१०।५।३।१५	३।२०।५८।४२	११।२८।५९।१४	७।६।४४।१८	११।१९।२६।४२
५ बु.	११।१९।३७।००	१०।६।४४।५१	३।२०।५२।५९	०।०।११।३७	७।६।४४।२९	११।१९।२३।३१
६ वृ.	११।२०।२२।२०	१०।८।२६।२७	३।२०।४७।१७	०।१।२४।०	७।६।४४।३४	११।१९।२०।२०
७ शु.	११।२१।०७।४०	१०।१०।८।०३	३।२०।४१।३५	०।२।३६।२२	७।६।४४।२१	११।१९।१७।९
९ श.	११।२१।५३।००	१०।११।४९।३९	३।२०।३५।५३	०।३।४८।४४	७।६।४३।५०	११।१९।१३।५९
१० र.	११।२२।३८।२०	१०।१३।३१।१४	३।२०।३०।११	०।५।१।६	७।६।४३।१९	११।१९।१०।४९
११ चं.	११।२३।२३।२३	१०।१५।१९।०४	३।२०।२५।३४	०।६।१३।५	७।६।४२।४१	११।१९।७।३८
१२ म.	११।२४।८।१६	१०।१७।०६।५३	३।२०।२०।५७	०।७।२५।३	७।६।४२।३	११।१९।४।२७
१३ बु.	११।२४।५३।२९	१०।१८।५४।४२	३।२०।१६।२०	०।८।३७।१	७।६।४१।२५	११।१९।१।१६
१४ वृ.	११।२५।३८।३२	१०।२०।४२।३१	३।२०।११।४३	०।९।४८।५९	७।६।४०।४७	११।१८।५८।५
३० शु.	११।२६।२३।३५	१०।२२।३०।२०	३।२०।०७।०६	०।११।०।५७	७।६।४०।९	११।१८।५४।५४

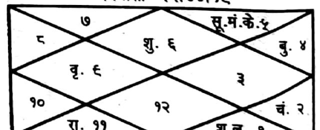
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	४४।२९	६।४६	११।४२	१३।५५	१६।१३	१८।२९	२०।४४	२३।१	१।१८	३।२३	५।१९	६।४०	८।९
२ श.	४४।३१	६।४२	११।३८	१३।५१	१६।९	१८।२५	२०।४०	२२।५७	१।१४	३।१९	५।१५	६।३६	८।५
३ र.	४४।३३	६।३८	११।३४	१३।४७	१६।५	१८।२१	२०।३६	२२।५३	१।१०	३।१५	५।११	६।३२	८।१
४ चं.	४४।३५	६।३४	११।३०	१३।४३	१६।१	१८।१७	२०।३२	२२।४९	१।६	३।११	४।५७	६।२८	७।५७
५ मं.	४४।३७	६।३१	११।२७	१३।४०	१५।५८	१८।१४	२०।२९	२२।४६	१।३	३।८	४।५४	६।२५	७।५४
५ बु.	४४।३९	६।२७	११।२३	१३।३६	१५।५४	१८।१०	२०।२५	२२।४२	०।५९	३।४	४।५०	६।२१	७।५०
६ वृ.	४४।४१	६।२३	११।१९	१३।३२	१५।५०	१८।६	२०।२१	२२।३८	०।५५	३।०	४।४६	६।१७	७।४६
७ शु.	४४।४३	६।१९	११।१५	१३।२८	१५।४६	१८।२	२०।१७	२२।३४	०।५१	२।५६	४।४२	६।१३	७।४२
९ श.	४४।४५	६।१५	११।११	१३।२४	१५।४२	१७।५८	२०।१३	२२।३०	०।४७	२।५२	४।३८	६।९	७।३८
१० र.	४४।४७	६।११	११।७	१३।२०	१५।३८	१७।५४	२०।९	२२।२६	०।४३	२।४८	४।३४	६।५	७।३४
११ चं.	४४।४९	६।८	११।४	१३।१७	१५।३५	१७।५१	२०।६	२२।२३	०।४०	२।४५	४।३१	६।२	७।३१
१२ म.	४४।५१	६।४	११।०	१३।१३	१५।३१	१७।४७	२०।२	२२।१९	०।३६	२।४१	४।२७	५।५८	७।२७
१३ बु.	४४।५३	६।०	१०।५६	१३।९	१५।२७	१७।४३	१९।५८	२२।१५	०।३२	२।३७	४।२३	५।५४	७।२३
१४ वृ.	४४।५५	५।५७	१०।५३	१३।६	१५।२४	१७।४०	१९।५५	२२।१२	०।२९	२।३४	४।२०	५।५१	७।२०
३० शु.	४४।५७	५।५३	१०।४९	१३।२	१५।२०	१७।३६	१९।५१	२२।८	०।२५	२।३०	४।१६	५।४७	७।१६

३ रवौ वल्ली ८।३९।३।४५
अयनांशाः २२।४४।१७



१० रवौ वल्ली ८।३९।३।५२
अयनांशाः २२।४४।१८



विविधविषयाः- दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च **छिक्काफलं,** मुहूर्तगणपती- मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागमः सुखम्। क्लेशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्।। गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन - सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्यपीनसकेतवः। केतवः-कपटः। पीनसो- मुहुर्नासाश्रावी। **रत्नावलीरत्नकलापयोः-** प्राग्न्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम् ।। यात्रायां क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्। **रत्नकलापे-** अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चात्क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षुतम् सर्वशाकुने- औषधे च नवारोहो विवादे शयने ऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्। क्षुतादिषु **कर्त्तव्यमाह-** छिक्कापतनजृम्भासु जीवोत्तिष्ठांगुलीध्वनिः। गुरावपि च कर्त्तव्या अकृत्वा ब्रह्महा भवेत्। **होमविधौ विशेषः-** विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीतिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। **प्रतिष्ठाप्रकाशे-** दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रं च वह्नेरपि।।

ग्रहस्थितिः - मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ६ तः पूर्वास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः,मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ६ तो वक्री।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोर्वाताप्रचारझंझावातादयस्तदुत्तरार्द्धे झंझावातोपलपातातापादयः।

चैत्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३६, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. २१।३।१५ ई. तः दि. ४।४।१५ ई. या., दक्षिणेकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

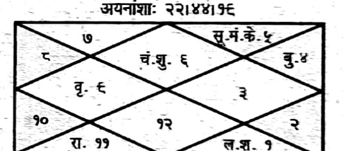
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घ. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	१८।८	दि. १।१५	उभा. ११।२६	दि. १०।३६	शु. ०।३१	ब. १८।८	मीन	अहो.	११।६।४०।६	२९।५८	६।००	६।००	३०	७	२१
२ र.	१२।४३	दि. ११।१५	रे. ७।५२	दि. ६।६	ऐ. ४६।१०	कौ. १२।४३	मी. ७।५२	दि. ६।६	११।७।३६।४८	३०।२	६।००	६।००	१	८	२२
३ चं.	७।५४	दि. ६।६	अ. ४।५१	दि. ७।५५	वै. ३६।४८	ग. ७।५४	मेष	अहो.	११।८।३६।१६	३०।६	५।५९	६।०१	२	९	२३
४ मं.	३।५५	दि. ७।३२	भ. २।४०	दि. ७।२	वि. ३४।८	वि. ३।५५	मे. १७।१६	दि. १२।५४	११।९।३८।४३	३०।१०	५।५८	६।०२	३	१०	२४
५ बु.	०।५०	दि. ६।१७	कृ. १।१६	दि. ६।२७	प्री. २९।१७	बा. ०।५५	वृष	अहो.	११।१०।३८।१०	३०।१४	५।५७	६।०३	४	११	२५
७ बृ.	५८।२	रा. ५।१६	रो. ०।५८	दि. ६।१९	आ. २५।१९	ग. २८।२६	वृ. ३१।४०	सं. ६।३६	११।११।३७।३७	३०।१८	५।५६	६।०४	५	१२	२६
८ शु.	५८।३३	रा. ५।२१	मृ. २।२२	दि. ६।५३	सौ. २२।२१	वि. २८।१८	मिथुन	अहो.	११।१२।३७।४	३०।२२	५।५६	६।०४	६	१३	२७
९ श.	६०।०	अहो.	आ. ४।१	दि. ७।३१	शो. २०।२४	बा. २९।३०	मि. ५१।३८	रा. २।१६	११।१३।३६।३१	३०।२६	५।५५	६।०५	७	१४	२८
९ र.	०।२७	दि. ६।५	पुन. ७।३०	दि. ८।५४	अति. १९।२७	कौ. ०।२७	कर्क	अहो.	११।१४।३५।५८	३०।३०	५।५४	६।०६	८	१५	२९
१० चं.	३।२४	दि. ७।१५	पु. १।१३	दि. १०।४२	सु. १९।२३	ग. ३।२४	कर्क	अहो.	११।१५।३५।१०	३०।३४	५।५३	६।०७	९	१६	३०
११ मं.	७।२८	दि. ८।५१	आश्ले. १७।३५	दि. १२।५४	धृ. २०।३	वि. ७।२८	क. १७।३५	दि. १२।५४	११।१६।३४।२२	३०।३८	५।५२	६।०८	१०	१७	३१
१२ बु.	१२।१८	दि. १०।४७	म. २३।४६	दि. ३।२२	शू. २१।१८	बा. १२।१८	सिंह	अहो.	११।१७।३३।३४	३०।४२	५।५२	६।०८	११	१८	१
१३ बृ.	१७।३५	दि. १२।५३	पूफ. ३०।२३	सं. ६।०	गं. २२।४८	तै. १७।३५	सिं. ४७।०	रा. १२।३६	११।१८।३२।४५	३०।४६	५।५१	६।०९	१२	१९	२
१४ शु.	२२।४५	दि. २।५६	उफ. ३६।५०	रा. ८।३४	वृ. २४।१६	व. २२।४५	कन्या	अहो.	११।१९।३१।५६	३०।५०	५।५०	६।१०	१३	२०	३
१५ श.	२७।३२	दि. ४।५०	ह. ४२।४७	रा. १०।५६	ध्रु. २५।२४	ब. २७।३२	कन्या	अहो.	११।२०।३१।७	३०।५३	५।४९	६।११	१४	२१	४

- २१ ब्रह्मयोगमानं ५२।३७, वासन्तनवरात्रारंभः, **कलशस्थापनं**, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, नवरात्रव्रतारंभः, **विक्रमसंवत् २०७२ प्रारंभः**, द. ति. १८।८ उ., गं. ५५।५२ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां प्रतिपदि।
- २२ **रेमन्तपूजा, पञ्चकान्तो** दिवा घं. ९ मि. ९ उ., द. ति. १२।४३ या., गं. १०।५२ या., पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायां, चन्द्रदर्शनं मु ३० याम्यशृंगं फलं महार्घम्, (२-३ एको.)।
- २३ **गौरी** ३ व्रतं, गणेश ४ व्रतं, **स्वायंभुवमन्वादिः**, भ. ३५।५५ उ., पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्।
- २४ **श्रीपञ्चमी,** लक्ष्मीपूजनं, मीनावतारः, रामराज्याभिषेकोत्सवः, सूर्यषष्ठीव्रतैकभुक्तं (खरना), भ. ३।५५ या., **मीने बुधः** ५१।४२।
- २५ षष्ठीमानं ५८।००, सूर्यषष्ठीव्रतं, सायंकालिकार्घदानं, **गजपूजाविल्वाभिमन्त्रणं,** अश्विन्यां मेषे कुजः ३४।२३, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
- २६ प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, **पत्रिकाप्रवेशः,** भ. ५८।२ उ., पूर्वयात्रा रोहिण्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा।
- २७ महाष्टमीव्रतं, **निशापूजा,** दीक्षाग्रहणं, अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं ब्रह्मपुत्रस्नानञ्च, भ. २८।१८ या., पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि।
- २८ महानवमीव्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, दीक्षाग्रहणं, रामावतारः, **रामनवमीव्रतं,** श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकं, हनुमद्ध्वजदानं, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा।
- २९ उपनयनं दशम्यां क्षत्रियवैश्ययोर्ब्राह्मणानां पुष्ये, उत्तरयात्रा दशम्यां पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा।
- ३० **विजया** १०, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, नवरात्रव्रतपारणं, नीलकण्ठखञ्जनादिदर्शनं, भ. ३५।२६ या., **उपनयनं,** पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
- ३१ **रेवत्यां रविः** ५१।२, **कामदा** ११ व्रतं सर्वेषां, गं. ६।३५ उ. २१।३५ या., भ. ७।२८ या., **उपनयनं** छन्दोगानाम्।
- १ अप्रील ४, विष्णु १२, गोघृतेन पारणं, चैत्रावली, मदन १३, **मदनपूजनं,** गोष्ठे सत्संगारंभः, प्रदोष १३ व्रतम्।
- २ **श्रीमहावीर** (२६१४) जयन्ती, मदनभंजिका १४, **प्रदोष** १४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, (१४ एको.)।
- ३ भ. २२।४५ उ. ५५।०९ या., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
- ४ **चैत्री** १५ स्नानदानादिः, **स्वारोचिषमन्वादिः,** दक्षिणयात्रा प्रतिपदि।

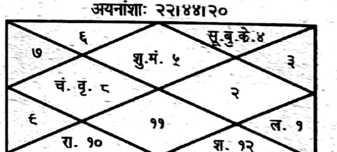
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रह दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	११।२७।०८।३८	१०।२४।१८।०९	३।२०।०२।२९	०।१२।१२।५५	७।६।३९।३२	११।१८।५१।४४	४४।५९	८।४९	१०।४५	१२।५८	१५।१६	१७।३२	१९।४७	२२।०४	००।२१	२।२९	४।१२	५।४३	७।१२
२ र.	११।२७।५३।४०	१०।२६।०५।५८	३।१९।५७।५२	०।१३।२४।५३	७।६।३८।५५	११।१८।४८।३४	४५।०१	८।४६	१०।४२	१२।५५	१५।१३	१७।२९	१९।४४	२२।०१	००।१८	२।२३	४।०९	५।४०	७।०९
३ चं.	११।२८।३८।२७	१०।२७।५६।५२	३।१९।५४।२५	०।१४।३६।००	७।६।३७।२६	११।१८।४५।२३	४५।०३	८।४२	१०।३८	१२।५१	१५।०९	१७।२५	१९।४०	२१।५७	००।१४	२।१९	४।०५	५।३६	७।०५
४ मं.	११।२९।२३।१४	१०।२९।४७।४६	३।१९।५०।५८	०।१५।४७।०७	७।६।३५।५७	११।१८।४२।१२	४५।०५	८।३८	१०।३४	१२।४७	१५।०५	१७।२१	१९।३६	२१।५३	००।१०	२।१५	४।०१	५।३२	७।०१
५ बु.	००।००।०८।०१	११।०१।३८।४०	३।१९।४७।३१	०।१६।५८।१४	७।६।३४।२८	११।१८।३९।०१	४५।०७	८।३५	१०।३१	१२।४४	१५।०२	१७।१८	१९।३३	२१।५०	००।०७	२।१२	३।५८	५।२९	६।५८
७ बृ.	००।००।५२।४८	११।०३।२८।३४	३।१९।४४।०५	०।१८।०९।२१	७।६।३२।५९	११।१८।३५।५०	४५।०९	८।३१	१०।२७	१२।४०	१४।५८	१७।१४	१९।२९	२१।४६	००।०३	२।०८	३।५४	५।२५	६।५४
८ शु.	००।०१।३७।३५	११।०५।२०।२८	३।१९।४०।३९	०।१९।२०।२८	७।६।३१।३१	११।१८।३२।३९	४५।११	८।२७	१०।२३	१२।३६	१४।५४	१७।१०	१९।२५	२१।४२	२३।५९	२।०४	३।५०	५।२१	६।५०
९ श.	००।०२।२२।२२	११।०७।११।२२	३।१९।३७।१३	०।२०।३१।३४	७।६।३०।०३	११।१८।२९।२८	४५।१३	८।२४	१०।२०	१२।३३	१४।५१	१७।०७	१९।२२	२१।३९	२३।५६	२।०१	३।४७	५।१८	६।४७
९ र.	००।०३।०७।०८	११।०९।०२।१५	३।१९।३३।४७	०।२१।४२।४०	७।६।२८।३५	११।१८।२६।१८	४५।१५	८।२०	१०।१६	१२।२९	१४।४७	१७।०३	१९।१८	२१।३५	२३।५२	१।५७	३।४३	५।१४	६।४३
१० चं.	००।०३।५१।४४	११।१०।५२।५०	३।१९।३१।३५	०।२२।५३।३४	७।६।२६।३१	११।१८।२३।०७	४५।१७	८।१६	१०।१२	१२।२५	१४।४३	१६।५९	१९।१४	२१।३१	२३।४८	१।५३	३।३९	५।१०	६।३९
११ मं.	००।०४।३६।२०	११।१२।४५।२५	३।१९।२९।२३	०।२४।०४।२८	७।६।२४।२७	११।१८।१९।५६	४५।१९	८।१३	१०।०९	१२।२२	१४।४०	१६।५६	१९।११	२१।२८	२३।४५	१।५०	३।३६	५।०७	६।३६
१२ बु.	००।०५।२०।५९	११।१४।३७।००	३।१९।२७।१२	०।२५।१५।२१	७।६।२२।२३	११।१८।१६।४५	४५।२१	८।०९	१०।०५	१२।१८	१४।३६	१६।५२	१९।०७	२१।२४	२३।४१	१।४६	३।३२	५।०३	६।३२
१३ बृ.	००।०६।०५।३२	११।१६।२८।३५	३।१९।२५।०१	०।२६।२६।१४	७।६।२०।२०	११।१८।१३।३४	४५।२३	८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३३	१६।४९	१९।०४	२१।२१	२३।३८	१।४३	३।२९	५।००	६।२९
१४ शु.	००।०६।५०।०८	११।१८।२०।१०	३।१९।२२।५०	०।२७।३७।०७	७।६।१८।१७	११।१८।१०।२३	४५।२५	८।०२	०९।५८	१२।११	१४।२९	१६।४५	१९।००	२१।१७	२३।३४	१।३९	३।२५	४।५६	६।२५
१५ श.	००।०७।३४।४४	११।२०।११।४४	३।१९।२०।३९	०।२८।४८।००	७।६।१६।१४	११।१८।०७।१३	४५।२७	७।५९	०९।५५	१२।०८	१४।२६	१६।४२	१८।५७	२१।१४	२३।३१	१।३६	३।२२	४।५३	६।२२

२ रवौ वल्ली ८।३६।३।५९
अयनांशाः २२।४४।१९



९ रवौ वल्ली ८।३६।४।०६
अयनांशाः २२।४४।२०



विविधविषयः- चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः- त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं, **लिंगपुराणे**- अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः। **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः** - ब्रह्मपुत्र महाभाग शन्तनोः कुलसम्भव। अमोघागर्भसंभूत पापं लौहित्य मे हर।। चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतन्तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं** सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः- दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं,** वृहद्विष्णुपुराणे- मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते। **चक्षूरक्षार्थं** पठनीयमन्त्रः- शर्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।।

ग्रहस्थितिः - मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम् - पक्षादिभागे तापाग्निभयमेघवातचारादयस्तदुत्तरार्द्धभागे तापमेघच्छायाझंझावातादयः।

वैशाखकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३६, १० तः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. ५।४।१५ ई. तः दि. १८।४।१५ ई. या., दक्षिणेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः ८ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, १० तः सौम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

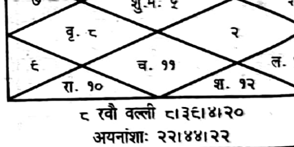
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	३१।३३	सं. ६।२८	चि. ४७।५८	रा. १।००	व्या. २५।५६	कौ. ३१।३३	कं. १५।२३	दि. ११।५८	११।२१।३०।१८	३०।५६	५।४९	६।११	१५	२२	५
२ चं.	३४।२४	रा. ७।३४	स्वा. ५२।०४	रा. २।३८	ह. २५।४१	तै. २।५९	तुला	अहो.	११।२२।२६।१४	३१।००	५।४८	६।१२	१६	२३	६
३ मं.	३६।१२	रा. ८।१६	वि. ५४।५८	रा. ३।४६	व. २४।३६	व. ५।१८	तु. ३६।१५	रा. ६।२९	११।२३।२८।१०	३१।०४	५।४७	६।१३	१७	२४	७
४ बु.	३६।३८	रा. ८।२५	अनु.५६।३८	रा. ४।२५	सि. २२।२८	ब. ६।२५	वृश्चिक	अहो.	११।२४।२७।०६	३१।०८	५।४६	६।१४	१८	२५	८
५ वृ.	३५।४७	रा. ८।०५	ज्ये. ५७।०३	रा. ४।३५	व्य. १६।२०	कौ. ६।१३	वृ. ५७।३	रा. ४।३५	११।२५।२६।०२	३१।१२	५।४६	६।१४	१९	२६	९
६ शु.	३३।४२	सं. ७।१४	मू. ५६।१८	रा. ४।१६	व. १५।१३	ग. ४।४५	धनु	अहो.	११।२६।२४।५७	३१।१६	५।४५	६।१५	२०	२७	१०
७ श.	३०।३४	दि. ५।५८	पूषा. ५४।३३	रा. ३।३३	प. १०।१३	वि. २।१३	धनु	अहो.	११।२७।२३।५२	३१।२०	५।४४	६।१६	२१	२८	११
८ र.	२६।३०	दि. ४।१६	उषा. ५१।५७	रा. २।३०	शि. ४।२४	कौ. २६।३०	ध.८।५४	दि. ६।१७	११।२८।२२।४७	३१।२४	५।४३	६।१७	२२	२९	१२
९ चं.	२१।४३	दि. २।२३	श्र. ४८।३९	रा. १।१०	सा. ५०।५५	ग. २१।४३	मकर	अहो.	११।२९।२१।२७	३१।२८	५।४२	६।१८	२३	३०	१३
१० मं.	१६।१६	दि. १२।१२	ध. ४४।५३	रा. ११।३९	शु. ४३।३१	वि. १६।१६	म.१६।४६	दि. १२।२४	०।००।२०।०७	३१।३२	५।४२	६।१८	२४	१	१४
११ बु.	१०।२४	दि. ६।५१	श. ४०।५०	रा. १०।०१	शु. ३५।५६	बा. १०।२४	कुम्भ	अहो.	०।१।१८।४७	३१।३६	५।४१	६।१९	२५	२	१५
१२ वृ.	०४।२१	दि. ७।२४	पूभा. ३६।३८	रा. ८।१९	ब्र. २८।११	तै. ४।२१	कुं. २।४१	दि. ६।४४	०।२।१७।२७	३१।४०	५।४०	६।२०	२६	३	१६
१४ शु.	५२।२५	रा. २।३७	उभा.३२।३७	सं. ६।४२	ऐ. २०।३५	वि. २५।२१	मीन	अहो.	०।३।१६।०७	३१।४४	५।३९	६।२१	२७	४	१७
३० श.	४६।५९	रा. १२।२६	रे. २८।५६	दि. ५।१२	वै. १३।१०	च. १६।३७	मी.२८।५६	दि. ५।१२	०।४।१४।४७	३१।४८	५।३८	६।२२	२८	५	१८

वैशाखे तैलं त्यजेत्, द.ति. ३१।३३ उ., वृषे शुक्रः ४६।२६।
द. ति. ३४।२४ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा तृतीयायां स्वात्याम्।
भ. ५।१८ उ. ३६।१२ या., पश्चिमयात्रानुराधायाम्।
वक्रतुण्ड ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा पंचम्याम्।
गं. ५१।३ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा ✱ सतुआईन, सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, प्रपागलन्तिकादानं, **सृष्ट्यादिः, नववर्षारंभः,** आर्यभटजयन्ती, सौम्यगोलारंभः **१९३७ शकाब्दारंभश्च** २५।१२ उ., ❖
कोकिला ६, गं. ६।३ या., भ. ३३।४२ उ., अश्विन्यां मेषे बुधः ७।२७, पूर्वोत्तरयात्रा षष्ठ्याम्।
भ. २।१३ या., उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे । ❖ सृष्टिगताब्दाः १९७२९४९११६ भोग्याब्दाश्च २३४७०५०८८४, भ. १६।१६ या., पश्चिमोदितो बुधः ३४।०४, (१०–११ एको.) ।
सिद्धिमानं ५३।३३, **मार्गी गुरुः** ४६।२ ।
मासान्तः, **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. १ मि. १० उ., भ. ४६।० उ., पश्चिमास्तः कुजः ३३।२३ ।
अश्विन्यां मेषे रविः २५।१२ मु. ३० फलं साम्यं, यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ३ मि. ४७ उपरिदिने, **पुण्याहः,** वैशाखस्नानारंभः, हनुमद्ध्वजदानं, हरिद्वारे कल्पवासारंभः, ✱
मासादिः, **वरुथिनी** ११ व्रतं सर्वेषां, वल्लभाचार्यजयन्ती।
त्रयोदशीमानं ५३।५५, कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, भ. ५८।१६ उ., **राहुवेधाद्विवाहो** मध्यम उत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे।
प्रदोष १४ व्रतं, भ. २५।२१ या., उत्तरयात्रा रेवत्याञ्चतुर्दश्याम्।
वैशाखी ३० स्नानदानादिः, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. ५ मि. १२ उ., गं.१६।५६ उ. ३१।५६ या., पूर्वा दिना यात्रा प्रतिपदि।

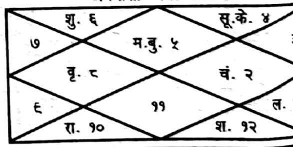
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	०।८।१६।२०	११।२२।३।१८	३।१६।१८।२८	०।२६।५८।५३	७।६।१४।११	११।१८।०४।०३	४५।२८	७।५५	९।५१	१२।०४	१४।२२	१६।३८	१८।५३	२१।१०	२३।२७	१।३२	३।१८	४।४९	६।१८
२ चं.	०।९।३।२७	११।२३।५२।३२	३।१६।१७।४६	१।१।८।४१	७।६।११।२५	११।१८।००।५२	४५।३०	७।५१	९।४७	१२।००	१४।१८	१६।३४	१८।४९	२१।०६	२३।२३	१।२८	३।१४	४।४५	६।१४
३ मं.	०।९।४७।३४	११।२५।४१।४६	३।१६।१७।१०	१।२।१८।२९	७।६।८।३९	११।१७।५७।४१	४५।३२	७।४८	९।४४	११।५७	१४।१५	१६।३१	१८।४६	२१।०३	२३।२०	१।२५	३।११	४।४१	६।११
४ बु.	०।१०।३१।४१	११।२७।४१।००	३।१६।१६।३१	१।३।२८।१७	७।६।५।५३	११।१७।५४।३०	४५।३४	७।४४	९।४०	११।५३	१४।११	१६।२७	१८।४२	२०।५९	२३।१६	१।२१	३।०७	४।३८	६।०७
५ वृ.	०।११।१५।४८	११।२९।२०।१४	३।१६।१५।५३	१।४।३८।०४	७।६।३।०७	११।१७।५१।१९	४५।३६	७।४०	९।३६	११।४९	१४।०७	१६।२३	१८।३८	२०।५५	२३।१२	१।१७	३।०३	४।३४	६।०३
६ शु.	०।११।५९।५४	०।१।१।२८	३।१६।१५।१५	१।५।४७।५१	७।६।००।२१	११।१७।४८।८	४५।३८	७।३७	९।३३	११।४६	१४।०४	१६।२०	१८।३५	२०।५२	२३।०९	१।१४	३।००	४।३१	६।००
७ श.	०।१२।४४।००	०।२।५८।४२	३।१६।१४।३७	१।६।५७।३८	७।८।५७।३६	११।१७।४४।५८	४५।४०	७।३३	९।२९	११।४२	१४।००	१६।१६	१८।३१	२०।४८	२३।०५	१।१०	२।५६	४।२७	५।५६
८ र.	०।१३।२८।०६	०।४।४७।५५	३।१६।१३।५९	१।८।७।२५	७।८।५४।५१	११।१७।४१।४८	४५।४२	७।२९	९।२५	११।३८	१३।५६	१६।१२	१८।२७	२०।४४	२३।०१	१।०६	२।५२	४।२३	५।५२
९ चं.	०।१४।१२।०३	०।६।३२।०६	३।१६।१४।१७	१।९।१६।३४	७।८।५१।३१	११।१७।३८।३६	४५।४४	७।२५	९।२१	११।३४	१३।५२	१६।०८	१८।२३	२०।४०	२२।५७	१।०२	२।४८	४।१९	५।४८
१० मं.	०।१४।५६।००	०।८।१६।१७	३।१६।१५।०२	१।१०।२५।४३	७।८।४८।१२	११।१७।३५।२६	४५।४६	७।२१	९।१७	११।३०	१३।४८	१६।०४	१८।१९	२०।३६	२२।५३	०।५८	२।४४	४।१५	५।४४
११ बु.	०।१५।३९।५७	०।१०।००।२८	३।१६।१५।४७	१।११।३४।५२	७।८।४४।५३	११।१७।३२।१५	४५।४८	७।१८	९।१४	११।२७	१३।४५	१६।०१	१८।१६	२०।३३	२२।५०	०।५५	२।४१	४।१२	५।४१
१२ वृ.	०।१६।२३।५३	०।११।४४।३९	३।१६।१६।३२	१।१२।४४।०१	७।८।४१।३४	११।१७।२९।०४	४५।५०	७।१४	९।१०	११।२३	१३।४१	१५।५७	१८।१२	२०।२९	२२।४६	०।५१	२।३७	४।०८	५।३७
१४ शु.	०।१७।७।४९	०।१३।२८।५०	३।१६।१७।१७	१।१३।५३।०९	७।८।३८।१५	११।१७।२५।५३	४५।५२	७।१०	९।६	११।१९	१३।३७	१५।५३	१८।०८	२०।२५	२२।४२	०।४७	२।३३	४।०४	५।३३
३० श.	०।१७।५१।४५	०।१५।१३।००	३।१६।१८।०२	१।१५।२।१७	७।८।३४।५६	११।१७।२२।४३	४५।५४	७।०६	९।२	११।१५	१३।३३	१५।४९	१८।०४	२०।२१	२२।३८	०।४३	२।२९	४।००	५।२९

१ रवौ वल्ली ८।३६।४।१२
अयनांशाः २२।४४।२१



८ रवौ वल्ली ८।३६।४।२०
अयनांशाः २२।४४।२२



विविधविषयाः– वैशाखे प्रातः**स्नानमन्त्रः**– वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन ।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम् ।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। **प्रातः स्नानस्य समयः**– उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्। वैशाखे **त्याज्यवस्तूनि**– कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने। **वैशाखे दानवस्तूनि,** स्कन्दे– प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च। **तिथितत्त्वे**– ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **मासविशेषे स्नानम्**– कौशिकीं माघवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्वतीं मार्गे कार्त्तिके यामुनीं तथा। भूयसी गैरिका वैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा। विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुने मता ।। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा। वाग्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्त्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः। गंगा तु सर्वदेति।

ग्रहस्थितिः – मार्गी पूर्वोदितः कुजः ९ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १० तः पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः ८ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम् – पक्षाद्यन्तभागयोः वाताग्निकोपतापादयस्तन्मध्यभागे झंझावाततापादयः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	४२।०४	रा. १०।२८	अ. २५।४६	दि. ३।५६	वि. ६।६	किं. १४।३२	मेष	अहो	०।५।१३।२७	३१।५२	५।३८	६।२२	२६	६	१९
२ चं.	३८।०३	रा. ८।५०	भ. २३।२२	दि. २।५८	आ. ५३।५५	बा.१०।०४	मे. ३७।५८	रा. ८।४८	०।६।११।५२	३१।५६	५।३७	६।२३	३०	७	२०
३ मं.	३४।५४	रा. ७।३४	कृ. २१।४७	दि. २।१९	सौ. ४८।५५	तै. ६।२९	वृष	अहो	०।७।१०।१७	३२।००	५।३६	६।२४	१	८	२१
४ बु.	३२।५१	रा. ६।४३	रो. २१।४७	दि. २।१८	शो. ४४।४८	व. ३।५२	वृ. ५१।५१	रा. २।१९	०।८।८।४२	३२।०४	५।३५	६।२५	२	९	२२
५ बृ.	३२।००	रा. ६।२३	मृ. २१।५४	दि. २।२१	अति. ४१।३९	ब. २।२६	मिथुन	अहो	०।९।७।०७	३२।०७	५।३५	६।२५	३	१०	२३
६ शु.	३२।२७	रा. ६।३३	आ. २३।४८	दि. ३।०५	सु ३६।३१	कौ. २।१४	मिथुन	अहो	०।१०।५।३२	३२।१०	५।३४	६।२६	४	११	२४
७ श.	३४।१८	रा. ७।१६	पुन. २६।५६	दि. ४।२१	धृ. ३८।२६	ग. ३।०१	मि. ११।१२	दि. १०।२	०।११।३।५६	३२।१३	५।३३	६।२७	५	१२	२५
८ र.	३७।११	रा. ८।२५	पु. ३१।१६	सं. ६।०३	शू. ३८।११	वि. ५।४५	कर्क	अहो.	०।१२।२।२०	३२।१६	५।३३	६।२७	६	१३	२६
९ चं.	४१।११	रा. १०।००	अश्ले.३६।४१	रा. ८।१२	गं. ३८।४८	बा. ६।००	क. ३६।४१	रा. ८।१२	०।१३।००।३०	३२।१९	५।३२	६।२८	७	१४	२७
१० मं.	४५।५४	रा. ११।५४	म. ४२।४५	रा. १०।३८	वृ. ४०।००	तै. १३।३३	सिंह	अहो.	०।१३।५८।४०	३२।२२	५।३२	६।२८	८	१५	२८
११ बु.	५०।४८	रा. १।५०	पूफ.४९।१८	रा. १।१४	ध्रु. ४१।३१	व. १८।२१	सिंह	अहो.	०।१४।५६।५०	३२।२५	५।३१	६।२९	९	१६	२९
१२ बृ.	५६।०८	रा. ३।५७	उफ.५५।५२	रा. ३।५१	व्या. ४३।०६	ब. २३।२८	सि. १२।३०	दि. १०।३०	०।१५।५५।००	३२।२८	५।३०	६।३०	१०	१७	३०
१३ शु	६०।००	अहो.	ह. ६०।००	अहो.	ह. ४४।२३	कौ.२८।२८	कन्या	अहो.	०।१६।५३।१०	३२।३१	५।३०	६।३०	११	१८	१
१३ श.	०।४७	प्रा. ५।४८	ह. १।५९	प्रा. ६।१७	व. ४५।१०	तै. ०।४७	कं. ३४।४१	रा. ७।२१	०।१७।५१।२०	३२।३४	५।२९	६।३१	१२	१९	२
१४ र.	०४।४२	दि. ७।२२	चि. ७।२२	दि. ८।२६	सि. ४५।१२	व. ४।४२	तुला	अहो.	०।१८।४९।२९	३२।३६	५।२९	६।३१	१३	२०	३
१५ चं.	०९।३१	दि. ८।२८	स्वा. ११।४०	दि. १०।८	व्य. ४४।२१	ब. ७।३१	तु. ५६।०५	रा. ५।०६	०।१९।४७।२५	३२।३९	५।२८	६।३२	१४	२१	४

वैशाखशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. १९।४।१५ ई. तः दि. ४।५।१५ ई. या., दक्षिणकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने।

प्रीतियोगमानं ५३।५३, **शिवाजीजयन्ती, विवाह** अश्विन्याम् । ◆ दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा ।

चन्द्रदर्शनं मु. ३० याम्यशृंगं फलं साम्यम् ।

अक्षय ३, त्रेतायुगादिः, गंगास्नानदानादिः, परशुरामावतारः, **परशुरामजयन्ती,** दीक्षाग्रहणं, पूर्वदक्षिणायात्रा रोहियाम्। ☐ दीक्षाग्रहणं, हनुमद्ध्वजदानं, **विवाहो दशम्यां,** गं. ३०।४१ उ. ४५।४१ या. ।

भ. ३।५२ उ. ३२।५१ या., **विवाहो** द्विरागमनमुत्तरां विना यात्रा च पञ्चम्याम्। ✗ **द्विरागमनं** गृहप्रवेशश्चोत्तरफल्गुन्यां, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।

शंकराचार्य (२५२२) **जयन्ती,** द. ति. ३२।०० उ., **उपनयनं, विवाहो** मुण्डनं कर्णवेधो **द्विरागमनं** दक्षिणां विना यात्रा च मृगशिरसि।

द. ति. ३२।२७ या., गृहप्रवेशः पुनर्वसौ।

जह्नु ७, जह्नुमुनेः कर्णरन्ध्राद्गंगायाः प्राकट्यं, गंगास्नानदानादिः, भ. ३४।१८ उ., **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, पश्चिमदक्षिणयात्रा ✱

भ. ५।४५ या., **द्विरागमनं** पश्चिमां विना यात्रा च पुष्ये। ✱ मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।

जानकीनवमीव्रतं, भूगर्भाज्जगज्जनन्या जानक्याः प्रादुर्भावः, सीतामढ्यां पुण्यारण्ये सीतारामपूजनदर्शनादिकं, **मैथिलीदिवसः** ☐ ।

भरण्यां रविः ८।१७, **जानकीनवमीव्रतपारणं, वृषे बुधः** १५।७, पूर्वयात्रा दशम्यां पूर्वफल्गुन्याम्।

विजया ११ व्रतं सर्वेषां, भ. १८।२१ उ. ५०।४८ या., **उपनयनं,** एकादशीव्रतोद्यापनं, केतुवेधाद्विवाहो मध्यमो ✗

मधुसूदन १२, कुशोदकेन पारणं, **उपनयनं,** विवाहो मध्यम उत्तरफल्गुन्यां, **विवाहः** पूर्वयात्रा च हस्ते, कर्णवेधः, गृहारंभप्रवेशौ, द्विरागमनम् ।

मई ५, **प्रदोष** १३ व्रतं, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, **विवाहो** दिवारात्रौ, **मुण्डनं,** कर्णवेधः, **द्विरागमनं,** गृहप्रवेशः, पूर्वदक्षिणयात्रा ।

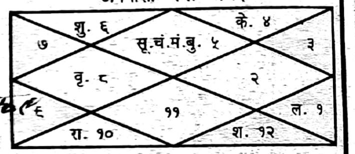
प्रदोष १४ व्रतं, **नरसिंहावतारः,** नरसिंह १४ व्रतं प्रदोषः घं. ८ मि. ७ यावद्रात्रौ, नरहरिपूजनदर्शनादिकं, **मिथुने शुक्रः** ००।३१, ◆

षाण्मासिकरविव्रतविसर्गः, भ. ४।४२ उ. ३६।०७ या., **विवाहो** द्विरागमनं दक्षिणयात्रा च पूर्णिमायाम्।

वैशाखी १५ स्नानदानादिः, कच्छपावतारः, बुद्धावतारः, **बुद्ध** (२६३९) **जयन्ती, विवाहः** कर्णवेधो **द्विरागमनं** पश्चिमदक्षिणयात्रा च स्वात्यां, **गृहारंभः** पूर्णिमायाम् ।

१ रवौ वल्ली ८।३६।४।२७

अयनांशाः २२।४४।२३

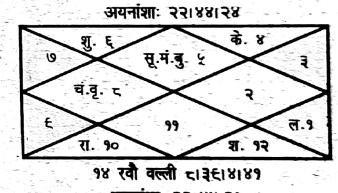


ति. दि. | मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	०।१८।३५।४५	०।१६।५७।१०	३।१६।१८।४७	१।१६।११।२५	७।८।३१।३७	११।१७।१९।३३	४५।५६	७।०२	८।५८	११।११	१३।२९	१५।४५	१८।००	२०।१७	२२।३४	०।३९	२।२५	३।५६	५।२५
२ चं.	०।१९।१९।१६	०।१८।३२।०९	३।१६।२०।४२	१।१७।१९।३८	७।८।२७।५६	११।१७।१६।२२	४५।५८	६।५८	८।५४	११।०७	१३।२५	१५।४१	१७।५६	२०।१३	२२।३०	०।३५	२।२१	३।५२	५।२१
३ मं.	०।२०।२।५१	०।२०।७।०८	३।१६।२२।३७	१।१८।२७।५१	७।८।२४।१५	११।१७।१३।११	४६।००	६।५४	८।५०	११।०३	१३।२१	१५।३७	१७।५२	२०।०९	२२।२६	०।३१	२।१७	३।४८	५।१७
४ बु.	०।२०।४६।२६	०।२१।४२।०६	३।१६।२४।३२	१।१९।३६।०४	७।८।२०।३४	११।१७।१०।००	४६।०२	६।५१	८।४७	११।००	१३।१८	१५।३४	१७।४९	२०।०६	२२।२३	०।२८	२।१४	३।४५	५।१४
५ बृ.	०।२१।३०।०१	०।२३।१७।०४	३।१६।२६।२७	१।२०।४४।१६	७।८।१६।५३	११।१७।६।४९	४६।०४	६।४७	८।४३	१०।५६	१३।१४	१५।३०	१७।४५	२०।०२	२२।१९	०।२४	२।१०	३।४१	५।१०
६ शु.	०।२२।१३।३५	०।२४।५२।०२	३।१६।२८।२१	१।२१।५२।२८	७।८।१३।१३	११।१७।३।३८	४६।०६	६।४३	८।३९	१०।५२	१३।१०	१५।२६	१७।४१	१९।५८	२२।१५	०।२०	२।०६	३।३७	५।०६
७ श.	०।२२।५७।०९	०।२६।२७।००	३।१६।३०।१५	१।२३।००।४०	७।८।९।३३	११।१७।००।२७	४६।०७	६।३९	८।३५	१०।४८	१३।०६	१५।२२	१७।३७	१९।५४	२२।११	०।१६	२।०२	३।३३	५।०२
८ र.	०।२३।४०।४३	०।२८।१।५८	३।१६।३२।०६	१।२४।८।५२	७।८।५।५३	११।१६।५७।१७	४६।०८	६।३५	८।३१	१०।४४	१३।०२	१५।१८	१७।३३	१९।५०	२२।०७	०।१२	१।५८	३।२९	४।५८
९ च.	०।२४।२४।०८	०।२९।२९।३५	३।१६।३६।०१	१।२५।१५।५५	७।७।१।३०	११।१६।५४।०६	४६।१०	६।३२	८।२८	१०।४१	१२।५९	१५।१५	१७।३०	१९।४७	२२।०४	०।०९	१।५५	३।२६	४।५५
१० म.	०।२५।७।२५	१।०।४१।१२	३।१६।३६।५२	१।२६।२२।५८	७।७।५७।०७	११।१६।५०।५५	४६।१२	६।२८	८।२४	१०।३७	१२।५५	१५।११	१७।२६	१९।४३	२२।००	०।०५	१।५१	३।२२	४।५१
११ बु.	०।२५।५०।४६	१।२।००।४९	३।१६।४३।४३	१।२७।३०।०१	७।७।५२।४४	११।१६।४७।४४	४६।१४	६।२४	८।२०	१०।३३	१२।५१	१५।०७	१७।२२	१९।३९	२१।५६	०।०१	१।४७	३।१८	४।४७
१२ बृ.	०।२६।३४।०७	१।३।२०।२५	३।१६।४७।३४	१।२८।३७।०३	७।७।४८।२१	११।१६।४४।३३	४६।१५	६।२०	८।१६	१०।२९	१२।४७	१५।०३	१७।१८	१९।३५	२१।५२	२३।५७	१।४३	३।१४	४।४३
१३ शु.	०।२७।१७।२८	१।४।४०।०१	३।१६।५१।२५	१।२९।४४।०५	७।७।४३।५९	११।१६।४१।२२	४६।१६	६।१६	८।१२	१०।२५	१२।४३	१४।५९	१७।१४	१९।३१	२१।४८	२३।५३	१।३९	३।१०	४।३९
१३ श.	०।२८।००।४८	१।५।५९।३७	३।१६।५५।१६	२।००।५१।०७	७।७।३९।३७	११।१६।३८।१२	४६।१७	६।१२	८।०८	१०।२१	१२।३९	१४।५५	१७।१०	१९।२७	२१।४४	२३।४९	१।३५	३।०६	४।३५
१४ र.	०।२८।४४।०८	१।७।१९।१३	३।१६।५९।०७	२।१।५८।०९	७।७।३५।१५	११।१६।३५।०२	४६।१८	६।०९	८।०५	१०।१८	१२।३६	१४।५२	१७।०७	१९।२४	२१।४१	२३।४६	१।३२	३।०३	४।३२
१५ चं.	०।२९।२७।०२	१।८।१३।२०	३।२०।३।४६	२।३।३।४३	७।७।३०।४५	११।१६।३१।५१	४६।२०	६।०५	८।०१	१०।१४	१२।३२	१४।४८	१७।०३	१९।२०	२१।३७	२३।४२	१।२८	२।५९	४।२८

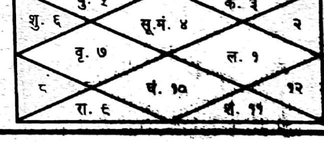
८ रवौ वल्ली ८।३६।४।३४

अयनांशाः २२।४४।२४



१४ रवौ वल्ली ८।३६।४।४१

अयनांशाः २२।४४।२५



विविधविषयाः- वैशाखशुक्लतृतीयायां **परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः-** जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। वैशाखशुक्लनवम्यां **जानकीनवमीव्रतं-** वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां सोमवासरे। प्रादुर्बभूव लोकानां हिताय जनकात्मजा । तत्र जानकीं संपूज्य **प्रणमेत्तन्मन्त्रः-** दशाननविनाशाय जाता धरणिसंभवा। मैथिली शीलसंपन्ना पातु नः पतिदेवता। **मूलवासः-** स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्ग वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। **अभुक्तमूलविचारः-** अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतोहि- मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः। सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्निममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः-** मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मंत्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। त्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

ग्रहस्थितिः- मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ बुधशुक्रौ, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वायवरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोस्तापाग्निभयवायवस्तन्मध्यभागे तापवातझंझावातोपलपातादयः।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. ५।५।१५ ई. तः दि. १८।५।१५ ई. या., दक्षिणेकालः, १२ तः पश्चिमेकाल:
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, १२ तो ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.	
१ मं.	६।१५	दि. ६।१०	वि. १४।५३	वि. ११।२५	व. ४२।२६	कौ. ६।१५	वृश्चिक	अहो.	०।२०।४५।२१	३२।४२	५।२८	६।३२	१५	२२	५	पश्चिमयात्रानुराधायां, ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्, वृषे कुजः ३२।२८।
२ बु.	६।३७	दि. ६।१८	अनु. १६।४८	वि. १२।१०	प. ३६।३८	ग. ६।३७	वृश्चिक	अहो.	०।२१।४३।१७	३२।४५	५।२७	६।३३	१६	२३	६	भ. ३६।१० उ., सूर्यवेधाद्विवाहो नैवानुराधायां, कर्णवेधो गृहारम्भश्चानुराधायां, **मुण्डनं** ज्येष्ठायां, **द्विरागमनं** पश्चिमयात्रा च द्वितीयायाम्।
३ वृ.	८।४२	दि. ८।५५	ज्ये. १७।२८	वि. १२।२५	शि. ३५।४७	वि. ८।४२	वृ.१७।२८	दि.१२।२५	०।२२।४१।१३	३२।४८	५।२६	६।३४	१७	२४	७	**आखुरथ** ४ व्रतं, गं. ११।२८ उ. २६।२८ या., भ. ८।४२ या., **मुण्डनं** पश्चिमोत्तरयात्रा च तृतीयायाम्।
४ शु.	६।३३	दि. ८।०३	मू. १६।५५	वि. १२।१२	सि. ३१।०१	बा. ६।३३	धनु	अहो.	०।२३।३६।०८	३२।५२	५।२६	६।३४	१८	२५	८	**विवाहो** द्विरागमनञ्च पंचम्यां मूले, पूर्वोत्तरयात्रा।
५ श.	३।२२	दि. ६।४६	पूषा. १५।२०	दि. ११।३३	सा. २५।२५	तै. ३।२२	ध.२८।४४	सं. ५।१६	०।२४।३७।०३	३२।५५	५।२५	६।३५	१९	२६	९	षष्ठीमानं ५५।५३, द. ति. ३।२२ उ. ५६।१५ या., भ. ५६।१५ उ.।
७ र.	५४।१९	रा. ३।०८	उषा. १२।५६	दि. १०।३४	शु. १९।१०	वि. ४६।४७	मकर	अहो.	०।२५।३४।५८	३२।५८	५।२४	६।३६	२०	२७	१०	भ. २६।४७ या., **विवाहो** दिवारात्रौ, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।
८ चं.	४८।४८	रा. १२।५५	श्र. ६।४६	दि. ६।१८	शु. १२।२०	बा. २१।३४	म.३७।५६	रा. ८।३४	०।२६।३२।४१	३३।०२	५।२४	६।३६	२१	२८	११	**कृत्तिकायां रविः** ५४।७, **पञ्चकारंभो** दिवा घं.९ मि. १८ उ., **विवाहः** श्रवणायां, गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायामष्टम्यां, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां ततः पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रेऽष्टम्याम्।
९ मं.	४२।५७	रा. १०।३४	ध. ६।०५	दि. ७।४६	ब्र. ०५।०५	तै. १५।५३	कुम्भ	अहो.	०।२७।३०।२४	३३।०५	५।२३	६।३७	२२	२९	१२	पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। ✱ वैशाखस्नानसमाप्तिः, **हरिद्वारे** कल्पवाससमाप्तिः, तिलेन पारणं, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १ मि. २१ उ.।
१० बु.	३६।४९	रा. ८।०६	श. ०२।०१	दि. ६।१०	ऐ. ४९।५१	ब. ०९।५३	कु.४३।५४	रा. १०।५६	०।२८।२८।०७	३३।०८	५।२२	६।३८	२३	३०	१३	पूर्वभाद्रमानं ५५।५१, भ. ६।५३ उ. ३६।४९ या., पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
११ वृ.	३०।३९	सं. ५।३८	उभा. ५३।४९	रा. २।५४	वि. ४२।१७	ब. ०३।४४	मीन	अहो.	०।२९।२५।५०	३३।११	५।२२	६।३८	२४	३१	१४	मासान्तः, **अपरा** ११ व्रतं सर्वेषां।
१२ शु.	२४।४४	दि. ३।१५	रे. ५०।००	रा. १।२१	प्री. ३४।५२	तै. २४।४४	मी.५०।००	रा. १।२१	१।०।२३।३३	३३।१४	५।२१	६।३९	२५	१	१५	**वृषे रविः** २२।९ मु. ३० फलं साम्यं, विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ११ मि. १ उ. घं. ५ मि. २५ यावद्दिने, **पुण्याहः, प्रदोष** १३ व्रतं, मं. ३८।० उ. ५३।० या., ✱
१३ श.	१९।११	दि. १।०१	अ. ४६।४३	रा. १२।०२	आ. २७।४६	व.१९।११	मेष	अहो.	१।१।२१।१६	३३।१७	५।२१	६।३९	२६	२	१६	मासादिः **प्रदोष** १४ व्रतं, भ १९।११ उ. ४६।४१ या., **वक्री बुधः** ४६।५४, (१३-१४ एको.)।
१४ र.	१४।१२	दि. ११।०१	भ. ४४।०७	रा. १०।५९	सौ. २१।१८	श. १४।१२	मे.५८:४१	रा. ४।४८	१।०२।१८।५८	३३।२०	५।२०	६।४०	२७	३	१७	**वटसावित्रीव्रतम्**।
३० चं.	१०।०४	दि. ६।२१	कृ. ४२।२१	रा. १०।१५	शो. १५।२५	ना. १०।०४	वृष	अहो.	१।०३।१६।३०	३३।२३	५।१९	६।४१	२८	४	१८	ज्यैष्ठी ३० स्नानदानादिः, **सोमवारीव्रतं** दिवा घं. ९ मि. २१ यावद्दिने, **विवाहो** दक्षिणयात्रा च रोहिण्याम्।

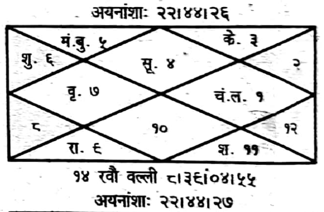
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा विनाडयन्तरं मतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ मं.	१।०।६।५६	१।६।०७।२७	३।२०।८।२५	२।४।६।१७	७।७।२६।१५	११।१६।२८।४०
२ बु.	१।०।५२।५०	१।१०।०१।३३	३।२०।१३।४०	२।५।१४।५१	७।७।२१।४५	११।१६।२५।२९
३ वृ.	१।१।३५।४४	१।१०।५५।३९	३।२०।१७।४३	२।६।२०।२४	७।७।१७।१५	११।१६।२२।१८
४ शु.	१।२।१८।३८	१।११।४९।४५	३।२०।२२।२२	२।७।२५।५७	७।७।१२।५५	११।१६।१९।०७
५ श.	१।३।१।३१	१।१२।४३।५१	३।२०।२७।१०	२।८।३१।३०	७।७।८।१५	११।१६।१५।५७
७ र.	१।३।४४।२४	१।१३।३७।५७	३।२०।३१।३८	२।९।३७।०३	७।७।३।४६	११।१६।१२।४७
८ चं.	१।४।२६।०६	१।१३।५७।०४	३।२०।३७।१५	२।१०।४१।०६	७।६।५९।०२	११।१६।८।३६
९ मं.	१।५।८।४८	१।१४।१६।१०	३।२०।४२।५२	२।११।४५।०८	७।६।५४।१८	११।१६।६।२५
१० बु.	१।५।५१।३०	१।१४।३५।१६	३।२०।४८।२८	२।१२।४९।१०	७।६।४९।३४	११।१६।३।१४
११ वृ.	१।६।३३।१२	१।१४।५४।२२	३।२०।५४।०४	२।१३।५३।१२	७।६।४४।५०	११।१६।००।०३
१२ शु.	१।७।१५।५४	१।१५।१३।२८	३।२०।५९।४०	२।१४।५७।१४	७।६।४०।०६	११।१५।५६।५२
१३ श.	१।८।००।३६	१।१५।३२।३४	३।२१।५।१६	२।१६।१।१६	७।६।३५।२३	११।१५।५३।४२
१४ र.	१।८।४३।१७	१।१५।२८।३७	३।२१।१०।५२	२।१७।५।१८	७।६।३०।४०	११।१५।५०।३२
३० चं.	१।९।२५।३०	१।१५।००।२५	३।२१।१६।०७	२।१८।७।३१	७।६।२५।५४	११।१५।४७।२१

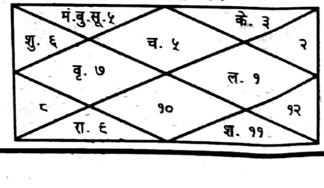
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	४६।२२	६।०१	७।५७	१०।१०	१२।२८	१४।४४	१६।५९	१९।१६	२१।३३	२३।३८	१।२४	२।५५	४।२४
२ बु.	४६।२४	५।५७	७।५३	१०।०६	१२।२४	१४।४०	१६।५५	१९।१२	२१।२९	२३।३४	१।२०	२।५१	४।२०
३ वृ.	४६।२६	५।५३	७।४९	१०।०२	१२।२०	१४।३६	१६।५१	१९।०८	२१।२५	२३।३०	१।१६	२।४७	४।१६
४ शु.	४६।२७	५।४९	७।४५	९।५८	१२।१६	१४।३२	१६।४७	१९।०४	२१।२१	२३।२६	१।१२	२।४३	४।१२
५ श.	४६।२८	५।४६	७।४२	९।५५	१२।१३	१४।२९	१६।४४	१९।०१	२१।१८	२३।२३	१।०९	२।४०	४।०९
७ र.	४६।२९	५।४२	७।३८	९।५१	१२।०९	१४।२५	१६।४०	१८।५७	२१।१४	२३।१९	१।०५	२।३६	४।०५
८ चं.	४६।३१	५।३८	७।३४	९।४७	१२।०५	१४।२१	१६।३६	१८।५३	२१।१०	२३।१५	१।०१	२।३२	४।०१
९ मं.	४६।३३	५।३४	७।३०	९।४३	१२।०१	१४।१७	१६।३२	१८।४९	२१।०६	२३।११	०।५७	२।२८	३।५७
१० बु.	४६।३५	५।३०	७।२६	९।३९	११।५७	१४।१३	१६।२८	१८।४५	२१।०२	२३।०७	०।५३	२।२४	३।५३
११ वृ.	४६।३७	५।२६	७।२२	९।३५	११।५३	१४।०९	१६।२४	१८।४१	२०।५८	२३।०३	०।४९	२।२०	३।४९
१२ शु.	४६।३८	५।२२	७।१८	९।३१	११।४९	१४।०५	१६।२०	१८।३७	२०।५४	२२।५९	०।४५	२।१६	३।४५
१३ श.	४६।३९	५।१८	७।१४	९।२७	११।४५	१४।०१	१६।१६	१८।३३	२०।५०	२२।५५	०।४१	२।१२	३।४१
१४ र.	४६।४०	५।१४	७।१०	९।२३	११।४१	१३।५७	१६।१२	१८।२९	२०।४६	२२।५१	०।३७	२।०८	३।३७
३० चं.	४६।४२	५।१०	७।०६	९।१९	११।३७	१३।५३	१६।०८	१८।२५	२०।४२	२२।४७	०।३३	२।०४	३।३३

७ रवौ वल्ली ८।३९।०४।४८
अयनांशाः २२।४४।२६



१४ रवौ वल्ली ८।३९।०४।५५
अयनांशाः २२।४४।२७



विधिविधानः- अमांयां **वटसावित्रीव्रतम्**- अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णी वापि मृण्मयीम्। सत्यवान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय **दद्यात्तन्मन्त्रः**- सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्राह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्। **कर्तिविनियमाः**- समित्पुष्पकुशादीनि ब्रह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः।। **सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः** - देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **काशीमाहात्म्यं**, स्कान्दे काशीखण्डे- **कैलाशादधिका** काशी काशी सर्वप्रकाशिका। कैलाशे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकरानि च। काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः।

ग्रहस्थितिः - मार्गी पश्चिमास्तः कुजः मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १३ तो वक्री, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम् - पक्षाद्यन्तभागयोस्तापाग्निकोपमेघचारादयस्तन्मध्यभागे तापाग्निभयझंझावातोपलपातादयः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. १९।५।१५ ई. तः दि. २।६।१५ ई. या., पश्चिमेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ मं.	०६।५०	दि. ८।०३	रो. ४१।३५	रा. ६।५७	अति. १०।१६	ब. ६।५०	वृष.	अहो.	१।४।१४।०२	३३।२६	५।१६	६।४१	२६	५	१६
२ बु.	०४।४१	दि. ७।१०	मृ. ४१।५६	रा. १०।६	सु. ६।०३	कौ.४।४१	वृ.११।१७	दि.१०।१	१।५।११।३४	३३।२६	५।१८	६।४२	३०	६	२०
३ वृ.	०३।४३	दि. ६।४७	आ. ४३।३७	रा. १०।४५	धृ. २।४७	ग. ३।४३	मिथुन	अहो.	१।६।६।०५	३३।३२	५।१८	६।४२	३१	७	२१
४ शु.	४।०३	दि. ६।५४	पुन. ४६।३२	रा. ११।५४	शू. ००।३०	वि. ४।०३	मि.३०।४६	सं. ५।३७	१।७।६।३६	३३।३४	५।१७	६।४३	१	८	२२
५ श.	५।४५	दि. ७।३५	पु. ५०।३४	रा. १।३१	वृ. ५८।५४	बा. ५।४५	कर्क	अहो.	१।८।४।०७	३३।३६	५।१७	६।४३	२	९	२३
६ र.	८।३२	दि. ८।४१	अश्ले.५५।४६	रा. ३।३४	ध्रु. ५६।२७	तै. ८।३२	क.५५।४६	रा. ३।३४	१।९।१।३८	३३।३८	५।१६	६।४४	३	१०	२४
७ चं.	१२।२६	दि. १०।१४	म. ६०।००	अहो.	व्या. ६०।००	व. १२।२६	सिंह	अहो.	१।९।५८।५८	३३।४०	५।१६	६।४४	४	११	२५
८ मं.	१६।५६	दि. १२।०३	म. १।४३	दि. ५।५७	व्या. ००।३५	ब. १६।५६	सिंह	अहो.	१।१०।५६।१८	३३।४२	५।१६	६।४४	५	१२	२६
९ बु.	२२।१०	दि. २।०७	पूफ. ८।१४	दि. ८।३३	ह. २।०७	कौ. २२।१०	सिं.१८।२१	दि. १२।३५	१।११।५३।३८	३३।४४	५।१५	६।४५	६	१३	२७
१० वृ.	२७।१२	दि. ४।८	उफ. १४।४८	दि. ११।१०	व. ३।५०	ग. २७।१२	कन्या	अहो.	१।१२।५०।५८	३३।४५	५।१५	६।४५	७	१४	२८
११ शु.	३१।४८	सं. ५।५८	ह. २१।०२	दि. १।४०	सि. ५।१५	वि. ३१।४८	कं. ५३।४६	रा. २।४७	१।१३।४८।१७	३३।४६	५।१५	६।४५	८	१५	२९
१२ श.	३५।४३	रा. ७।३२	चि. २६।३५	दि. ३।५३	व्य. ६।१४	ब. ३।४५	तुला	अहो.	१।१४।४५।३६	३३।४७	५।१५	६।४५	९	१६	३०
१३ र.	३८।२८	रा. ८।३७	स्वा. ३१।११	सं. ५।४२	व. ६।३१	कौ. ७।०६	तुला	अहो.	१।१५।४२।५५	३३।४८	५।१४	६।४६	१०	१७	३१
१४ चं.	४०।१९	रा. ६।१८	वि. ३४।४०	सं. ७।०६	प. ५।५३	ग. ६।१९	तु. १८।४८	दि. १२।४५	१।१६।४०।०६	३३।५०	५।१४	६।४६	११	१८	१
१५ मं.	४०।२९	रा. ६।२६	अनु. ३६।४६	रा. ७।५८	शि. ४।१७	वि. १०।१९	वृश्चिक	अहो.	१।१७।३७।१७	३३।५१	५।१४	६।४६	१२	१९	२

पश्चिमास्तो बुधः १७।६, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ समश्रृंगं फलं समर्घं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां द्वितीयायां तत उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।
रंभा ३, पंचाग्निव्रतं, **उपनयनं** तृतीयायां, **विवाहो** मृगशिरसि, **मुण्डनं**, कर्णविधः, उत्तरां विना यात्रा द्वितीयायाम्।
महाराणप्रतापजयन्ती, गणेश ४ व्रतं, द. ति. ३।४३ उ., भ. ३३।५३ उ.। * दक्षिणयात्रा पंचम्यां मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा।
गण्डयोगमानं ५८।४८, द. ति. ४।३ या., भ. ४।३ या., क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं पञ्चम्यां, **मुण्डनं** कर्णविधश्च पंचम्यां, *
पूर्वां विना यात्रा षष्ठ्यां पुष्ये।
गं. ४४।४६ उ. ५६।४६ या., **विवाहो** मघायाम्।
रोहिण्यां रविः ४७।५५, भ. १२।२६ उ. ४४।४१ या., **विवाहो दिवारात्रौ।**
पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, (८-९ एको.)। ☐ कर्णविधः, **मुण्डनं** पूर्वयात्रा च हस्ते, (१० एको.)।
विवाहः कर्णविधश्च दशम्याम्।
गंगादशहरा, गंगास्नानदानादिः, पृथिव्यां गंगावतरणं, **रामेश्वरप्रतिष्ठादिनं** तद्दर्शनञ्च, भ. ५९।३० उ., ~~उपनयनं~~, **विवाह** उत्तरफल्गुन्यां, हस्ते केतुवेधाद्विवाहो मध्यमः, ☐
नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः, निर्जला ११ व्रतं सर्वेषां, भ. ३१।४८ या., **उपनयनं**, एकादशीव्रतोद्यापनं, हस्ते केतुवेधाद्विवाहो मध्यमः, **विवाहश्चित्रायां, मुण्डनं**, कर्णविधः, पूर्वदक्षिणयात्रैकादश्याम्।
त्रिविक्रम १२, तिलेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **कर्के शुक्रः** २८।३२, पश्चिमदक्षिणयात्रा।
विवाहो दक्षिणयात्रा च स्वात्याम्।
जून ६, प्रदोष १४ व्रतं, भ. ४०।९ उ., **विवाहः** पश्चिमोत्तरयात्रा च पूर्णिमायाम्।
ज्यैष्ठी १५ स्नानदानादिः, **साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, कबीरजयन्ती**, भ. १०।१९ या., पश्चिमयात्रा पूर्णिमायाम्।

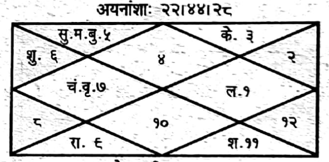
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ मं.	१।१०।७।४३	१।१४।३२।१३	३।२१।२५।२२	२।१९।६।४४	७।६।२१।८	११।१५।४४।१०
२ बु.	१।१०।४६।५५	१।१४।४।०१	३।२१।३२।३७	२।२०।११।५७	७।६।१६।२३	११।१५।४०।५९
३ वृ.	१।११।३२।०७	१।१३।३५।४६	३।२१।३९।५१	२।२१।१४।१०	७।६।११।३८	११।१५।३७।४८
४ शु.	१।१२।१४।१९	१।१३।७।३७	३।२१।४७।०५	२।२२।१६।२२	७।६।६।५३	११।१५।३४।३७
५ श.	१।१२।५६।३१	१।१२।३९।२६	३।२१।५४।१९	२।२३।१८।३४	७।६।२।०८	११।१५।३१।२६
६ र.	१।१३।३८।४३	१।१२।११।१५	३।२२।१।३३	२।२४।२०।४६	७।५।५७।२३	११।१५।२८।१६
७ चं.	१।१४।२०।४६	१।११।२४।४४	३।२२।६।२९	२।२५।२०।२१	७।५।५२।४५	११।१५।२५।०५
८ मं.	१।१५।२।४९	१।१०।३८।१४	३।२२।१७।२४	२।२६।१९।५६	७।५।४८।०७	११।१५।२१।५४
९ बु.	१।१५।४४।५२	१।९।५१।४४	३।२२।२५।१९	२।२७।१९।३१	७।५।४३।३०	११।१५।१८।४३
१० वृ.	१।१६।२६।५५	१।९।५।१४	३।२२।३३।१४	२।२८।१९।०६	७।५।३८।५३	११।१५।१५।३२
११ शु.	१।१७।८।५८	१।८।१८।४४	३।२२।४१।०९	२।२९।१८।४०	७।५।३४।१६	११।१५।१२।२१
१२ श.	१।१७।५१।०१	१।७।३२।१४	३।२२।४९।०४	३।०।१८।०६	७।५।२९।३९	११।१५।९।११
१३ र.	१।१८।३३।०३	१।६।४५।४४	३।२२।५६।५९	३।१।१७।४८	७।५।२५।०२	११।१५।६।०१
१४ चं.	१।१९।१४।४७	१।६।२८।२५	३।२३।५।५३	३।२।१४।३०	७।५।२०।१८	११।१५।२।५०
१५ मं.	१।१९।५६।३०	१।६।११।०६	३।२३।१४।४६	३।३।११।१२	७।५।१५।३४	११।१४।५९।३९

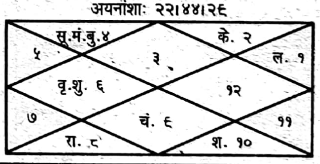
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	४६।४४	५।०६	७।०२	९।१५	११।३३	१३।४९	१६।०४	१८।२१	२०।३८	२२।४३	०।२९	२।००	३।२९
२ बु.	४६।४५	५।०२	६।५८	९।११	११।२९	१३।४५	१६।००	१८।१७	२०।३४	२२।३९	०।२५	१।५६	३।२५
३ वृ.	४६।४६	४।५८	६।५४	९।०७	११।२५	१३।४१	१५।५६	१८।१३	२०।३०	२२।३५	०।२१	१।५२	३।२१
४ शु.	४६।४७	४।५४	६।५०	९।०३	११।२१	१३।३७	१५।५२	१८।०९	२०।२६	२२।३१	०।१७	१।४८	३।१७
५ श.	४६।४८	४।५०	६।४६	८।५९	११।१७	१३।३३	१५।४८	१८।०५	२०।२२	२२।२७	०।१३	१।४४	३।१३
६ र.	४६।४९	४।४६	६।४२	८।५५	११।१३	१३।२९	१५।४४	१८।०१	२०।१८	२२।२३	०।०९	१।४०	३।०९
७ चं.	४६।५०	४।४२	६।३८	८।५१	११।०९	१३।२५	१५।४०	१७।५७	२०।१४	२२।१९	०।०५	१।३६	३।०५
८ मं.	४६।५१	४।३८	६।३४	८।४७	११।०५	१३।२१	१५।३६	१७।५३	२०।१०	२२।१५	०।०१	१।३२	३।०१
९ बु.	४६।५२	४।३४	६।३०	८।४३	११।०१	१३।१७	१५।३२	१७।४९	२०।०६	२२।११	२३।५७	१।२८	२।५७
१० वृ.	४६।५३	४।३०	६।२६	८।३९	१०।५७	१३।१३	१५।२८	१७।४५	२०।०२	२२।०७	२३।५३	१।२४	२।५३
११ शु.	४६।५४	४।२६	६।२२	८।३५	१०।५३	१३।०९	१५।२४	१७।४१	१९।५८	२२।०३	२३।४९	१।२०	२।४९
१२ श.	४६।५४	४।२२	६।१८	८।३१	१०।४९	१३।०५	१५।२०	१७।३७	१९।५४	२१।५९	२३।४५	१।१६	२।४५
१३ र.	४६।५४	४।१८	६।१४	८।२७	१०।४५	१३।०१	१५।१६	१७।३३	१९।५०	२१।५५	२३।४१	१।१२	२।४१
१४ चं.	४६।५५	४।१४	६।१०	८।२३	१०।४१	१२।५७	१५।१२	१७।२९	१९।४६	२१।५१	२३।३७	१।०८	२।३७
१५ मं.	४६।५६	४।१०	६।०६	८।१९	१०।३७	१२।५३	१५।०८	१७।२५	१९।४२	२१।४७	२३।३३	१।०४	२।३३

६ रवौ वल्ली ८।३९।५।०२
अयनांशाः २२।४४।२८



१३ रवौ वल्ली ८।३९।५।०९
अयनांशाः २२।४४।२९



विविधविषयाः- ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि, वामनपुराणे- उदकुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च।। **गंगादशहरा**, वाराहे- दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा।। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता। **दशहरायां** दशयोगाः स्कान्दे-ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या। ज्येष्ठस्य मलमासत्वे द्वितीयज्येष्ठशुक्लदशम्यामेव गंगादशहरा। **दशपापानि**- पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्।। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता।।

ग्रहस्थितिः - मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, वक्री पश्चिमोदितो बुधः १ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम् - पक्षादिभागे तापाग्निकोपझंझावातोपलपातादयस्तदुत्तरार्द्धभागे तापग्निभयमेघचारादयः।

प्रथमाषाढकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. ३।६।१५ ई. तः दि. १६।६।१५ ई. या., पश्चिमेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ३० तौऽशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ बु.	३६।३२	रा. ६।०३	ज्ये. ३७।४३	रा. ८।१६	सि. १।४२	बा. १०।१	वृ. ३७।४३	रा. ८।१६	१।१८।३४।२८	३३।५२	५।१४	६।४६	१३	२०	३
२ वृ.	३७।२१	रा. ८।०६	मू. ३७।२६	रा. ८।११	शु. ५३।३२	तै. ८।२६	धनु	अहो.	१।१९।३१।३६	३३।५३	५।१३	६।४७	१४	२१	४
३ शु.	३४।०६	सं. ६।५३	पूषा. ३६।०२	रा. ७।३८	शु. ४८।८	व. ५।४५	ध. ५१।५३	रा. १।५८	१।२०।२८।५०	३३।५४	५।१३	६।४७	१५	२२	५
४ श.	२९।५६	दि. ५।१३	उषा. ३३।५१	सं. ६।४५	ब्र. ४२।४	ब. २।४	मकर	अहो.	१।२१।२६।०१	३३।५६	५।१३	६।४७	१६	२३	६
५ र.	२५।००	दि. ३।१३	श्र. ३०।४७	सं. ५।३२	ऐ. ३५।२३	तै. २५।०	म.५८।५९	रा. ४।४६	१।२२।२३।११	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२४	७
६ चं.	१९।२८	दि. १२।५९	ध. २७।११	दि. ४।४	वै. २८।११	व. १९।२८	कुम्भ	अहो.	१।२३।२०।१४	३३।५८	५।१२	६।४८	१८	२५	८
७ मं.	१३।३०	दि. १०।३६	श. २३।१२	दि. २।२९	वि. २०।४५	ब. १३।३०	कुम्भ	अहो.	१।२४।१७।१७	३४।००	५।१२	६।४८	१९	२६	९
८ बु.	०७।२२	दि. ८।०६	पूभा. १९।०३	दि. १२।४९	प्री. १३।८	कौ. ७।२२	कुं. ५।१	दि. ७।१२	१।२५।१४।२०	३४।०२	५।१२	६।४८	२०	२७	१०
९ वृ.	०१।१३	प्रा. ५।४०	उभा. १४।५४	दि. ११।९	आ. ५।३१	ग. १।१३	मीन	अहो.	१।२६।११।२३	३४।०३	५।११	६।४९	२१	२८	११
११ शु.	४९।३६	रा. १।०१	रे. ११।०२	दि. ९।३६	शो. ५०।५९	ब. २१।४२	मी. ११।२	दि. ९।३६	१।२७।०८।२६	३४।०४	५।११	६।४९	२२	२९	१२
१२ श.	४४।३२	रा. ११।००	अ. ०७।३६	दि. ८।१३	अति.४४।३१	कौ. १७।४	मेष	अहो.	१।२८।०५।२९	३४।०५	५।११	६।४९	२३	३०	१३
१३ र.	४०।१८	रा. ९।१८	भ. ०४।४९	दि. ७।७	सु. ३८।२३	ग. १२।२८	मे. १९।२०	दि. १२।५५	१।२९।०२।३१	३४।०६	५।११	६।४९	२४	३१	१४
१४ चं.	३६।५६	रा. ७।५७	कृ. ०२।५३	दि. ६।२०	धृ. ३३।८	वि. ८।३७	वृष	अहो.	१।२९।५९।२८	३४।०८	५।११	६।४९	२५	३२	१५
३० मं.	३४।३९	सं. ७।०४	रो. ०१।४९	दि. ५।५६	शू. २८।४२	च. ५।४७	वृ. ३१।५३	सं. ५।५७	२।००।५६।२५	३४।०९	५।१२	६।४८	२६	१	१६

साध्ययोगमानं ५६।२४, विल्वमाषाढके त्यजेत्, गं. ३०।४३ उ. ४६।४३ या., **विवाहो मूले,** पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले ।

पूर्वोदितो बुधः ३०।२२, **विवाहो** मूले, पूर्वोत्तरयात्रा, **मैथिलवैवाहिकसमारंभः** (सौराठससौलयोः) ।

विघ्नराज ४ व्रतं, द. ति. ३४।९ उ., भ. ५।४५ उ. ३४।९ या., पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायाम् ।

द. ति. २९।९ या.। ◗ गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायां, पश्चिमां विना यात्रा पंचम्याम् ।

पंचकारंभः सायं घं. ५ मि. ३२ उ., **मघायां सिंहे मध्यमो गुरुः** ६।५८ तत एव **सौम्यनामा** त्रिचत्वारिंशन्मध्यमगुरुसंवत्सरारंभः, **विवाहः** श्रवणायां, ◗

मृगशिरायां रविः ४६।४५, भ. १९।२८ उ. ४६।२९ या., मार्गी बुधः १।४, गुरुवेधाद्विवाहो मध्यमो धनिष्ठायां, (६-७ एको.), पश्चिमयात्रा षष्ठ्याम् ।

पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे । ○ **मैथिलवैवाहिक समासमाप्तिः** (सौराठससौलयोः) ।

।।००।।

सौभाग्ययोगमानं ५२।३५, दशमीमानं ५३।५८, गं. ५६।२ उ., भ. २८।१२ उ. ५५।११ या., **विवाहो रेवत्यां,** उत्तरभाद्रे राहुवेधाद्विवाहो मध्यमो दशम्यां, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम् ।

योगिनी ११ व्रतं स्मार्त्तानां, **पञ्चकान्तो दिवा** घं. ९ मि. ३६ उ., गं. १४।२ या., **विवाहो** दिवारात्रौ, उत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्रैकादश्यां, ○

यवचूर्णेन पारणं, योगिनी ११ व्रतं वैष्णवानां, पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्।

प्रदोष १३ व्रतं, भ. ४०।१८ उ.।

मिथुने रविः ४७।३९ मु. ४५ फलं समर्घं, मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतं, भ. ८।३७ या.।

षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि.० यावद्दिने, **पुण्याहः,** आषाढी ३० स्नानदानादिः, **भौमवती** ३० गंगास्नानं कोटिसूर्यग्रहणसमफलदं, **मलमासारंभः** अशुद्धारम्भश्च ३४।३९ उ. ।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बु.	१।२०।३८।१३	१।५।५३।४७	३।२३।२३।३९	३।०४।०७।५४	७।५।१०।५०	११।१४।५६।२८
२ वृ.	१।२१।१९।५६	१।५।३६।२९	३।२३।३२।३२	३।०५।०४।३६	७।५।०६।०६	११।१४।५३।१७
३ शु.	१।२२।०१।३९	१।५।१९।११	३।२३।४१।२५	३।०६।०१।१८	७।५।०१।२२	११।१४।५०।०६
४ श.	१।२२।४३।२२	१।५।०१।५३	३।२३।५०।१८	३।०६।५८।००	७।४।५६।३८	११।१४।४६।५६
५ र.	१।२३।२५।०५	१।४।४४।३५	३।२३।५९।११	३।०७।५४।४१	७।४।५१।५५	११।१४।४३।४६
६ चं.	१।२४।०६।३२	१।४।४२।१३	३।२४।०८।५७	३।०८।४७।०९	७।४।४७।३५	११।१४।४०।३५
७ मं.	१।२४।४७।५९	१।५।१४।२९	३।२४।१८।४३	३।०९।३९।३७	७।४।४३।१५	११।१४।३७।२४
८ बु.	१।२५।२९।२६	१।५।४६।४५	३।२४।२८।२९	३।१०।३२।०५	७।४।३८।५५	११।१४।३४।१३
९ वृ.	१।२६।१०।५३	१।६।१९।०१	३।२४।३८।१५	३।११।२४।३३	७।४।३४।३५	११।१४।३१।०२
११ शु.	१।२६।५२।२०	१।६।५१।१७	३।२४।४८।०१	३।१२।१७।०१	७।४।३०।१५	११।१४।२७।५१
१२ श.	१।२७।३३।४६	१।७।२३।३३	३।२४।५७।४६	३।१३।०९।२९	७।४।२५।५५	११।१४।२४।४१
१३ र.	१।२८।१५।१२	१।७।५५।५०	३।२५।०७।३१	३।१४।०१।५६	७।४।२१।३५	११।१४।२१।३१
१४ चं.	१।२८।५६।२१	१।८।५७।५४	३।२५।१७।५६	३।१४।४९।२८	७।४।१७।३४	११।१४।१८।२०
३० मं.	१।२९।३७।३०	१।९।५९।५८	३।२५।२८।२७	३।१५।३७।००	७।४।१३।३३	११।१४।१५।०९

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	४६।५७	४।०६	६।०२	८।१५	१०।३३	१२।४९	१५।०४	१७।२१	१९।३८	२१।४३	२३।२९	१।००	२।२९
२ वृ.	४६।५८	४।०२	५।५८	८।११	१०।२९	१२।४५	१५।००	१७।१७	१९।३४	२१।३९	२३।२५	०।५६	२।२५
३ शु.	४६।५८	३।५८	५।५४	८।०७	१०।२५	१२।४१	१४।५६	१७।१३	१९।३०	२१।३५	२३।२१	०।५२	२।२१
४ श.	४६।५८	३।५४	५।५०	८।०३	१०।२१	१२।३७	१४।५२	१७।०९	१९।२६	२१।३१	२३।१७	०।४८	२।१७
५ र.	४६।५८	३।५०	५।४६	७।५९	१०।१७	१२।३३	१४।४८	१७।०५	१९।२२	२१।२७	२३।१३	०।४४	२।१३
६ चं.	४६।५९	३।४६	५।४२	७।५५	१०।१३	१२।२९	१४।४४	१७।०१	१९।१८	२१।२३	२३।०९	०।४०	२।०९
७ मं.	४७।००	३।४२	५।३८	७।५१	१०।०९	१२।२५	१४।४०	१६।५७	१९।१४	२१।१९	२३।०५	०।३६	२।०५
८ बु.	४७।०१	३।३८	५।३४	७।४७	१०।०५	१२।२१	१४।३६	१६।५३	१९।१०	२१।१५	२३।०१	०।३२	२।०१
९ वृ.	४७।०२	३।३४	५।३०	७।४३	१०।०१	१२।१७	१४।३२	१६।४९	१९।०६	२१।११	२२।५७	०।२८	१।५७
११ शु.	४७।०३	३।३०	५।२६	७।३९	०९।५७	१२।१३	१४।२८	१६।४५	१९।०२	२१।०७	२२।५३	०।२४	१।५३
१२ श.	४७।०३	३।२६	५।२२	७।३५	०९।५३	१२।०९	१४।२४	१६।४१	१८।५८	२१।०३	२२।४९	०।२०	१।४९
१३ र.	४७।०३	३।२२	५।१८	७।३१	०९।४९	१२।०५	१४।२०	१६।३७	१८।५४	२०।५९	२२।४५	०।१६	१।४५
१४ चं.	४७।०४	३।१८	५।१४	७।२७	०९।४५	१२।०१	१४।१६	१६।३३	१८।५०	२०।५५	२२।४१	०।१२	१।४१
३० मं.	४७।०५	३।१४	५।१०	७।२३	०९।४१	११।५७	१४।१२	१६।२९	१८।४६	२०।५१	२२।३७	०।०८	१।३७

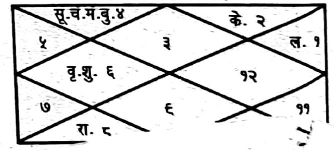
५ रवौ वल्ली ८।३९।५।१६

अयनांशाः २२।४४।३०



१३ रवौ वल्ली ८।३९।५।२३

अयनांशाः २२।४४।३१



विविधविषयाः- ग्रहस्थितिवशेन **वृष्टिविचारः**- बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्।। पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगाः।। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते ।। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे ।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।। **सूर्यनक्षत्राणि** - रोहिणि-मृगशिरा-पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाती-विशाखाऽनुराधा-ज्येष्ठा मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **एतत्फलम्**- चन्द्रे सूर्यर्क्षगे **वृष्टिः सूर्ये** चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणां **पुरुषादिसंज्ञा** - मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादित्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः।

ग्रहस्थितिः - मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः २ तः पूर्वोदितः ६ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम् - पक्षादिभागे झंझावातोपलपाततापमेघचारादयस्तदुत्तरार्द्धे तापाग्निकोपखण्डवृष्टयः।

प्रथमाषाढशुक्लपक्षः (मलमासः)

शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. १७।६।१५ ई. तः दि. २।७।१५ ई. या., पश्चिमेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	३३।३४	सं. ६।३६	मृ. १।५६	प्रा. ५।५६	गं. २५।१५	कि. ४।०२	मिथुन	अहो	२।१५।३।२२	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	२	१७
२ वृ.	३३।४५	सं. ६।४०	आ. ३।१५	प्रा. ६।२८	वृ. २२।४८	बा. ३।४०	मि.५०।१२	रा. १।१५	२।२।५०।१९	३४।११	५।१०	६।५०	२८	३	१८
३ शु.	३५।१९	सं. ७।१८	पुन. ५।५०	दि. ७।३०	ध्रु. २१।२५	तै. ४।३२	कर्क	अहो	२।३।४७।१६	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	४	१९
४ श.	३७।५६	रा. ८।१९	पु. ६।४०	दि. ६।०१	व्या. २०।५२	व. ६।३८	कर्क	अहो	२।४।४४।१३	३४।१३	५।९	६।५१	३०	५	२०
५ र.	४१।४३	रा. ६।५०	अश्ले. १४।३६	दि. १०।५६	ह. २१।१८	ब. ६।०८	क.१४।३६	दि. १०।५६	२।५।४१।०९	३४।१४	५।९	६।५१	३१	६	२१
६ चं.	४६।१३	रा. ११।३८	म. २०।२०	दि. १।१७	व. २२।२१	कौ. १३।५८	सिंह	अहो	२।६।३८।०२	३४।१३	५।१०	६।५०	१	७	२२
७ मं.	५१।१६	रा. १।४०	पूफ. २६।४२	दि. ३।५१	सिं. २३।५१	ग. १८।४५	सिं.४३।२१	रा. १०।३०	२।७।३४।५५	३४।१२	५।१०	६।५०	२	८	२३
८ बु.	५६।१७	रा. ३।४१	उफ. ३३।१८	सं. ६।२९	व्य. २५।३५	वि. २३।४७	कन्या	अहो	२।८।३१।४८	३४।११	५।१०	६।५०	३	९	२४
९ वृ.	६०।००	अहो.	ह. ३९।३८	रा. ६।०१	व. २७।०६	बा. २८।३७	कन्या	अहो	३।९।२८।४१	३४।१०	५।१०	६।५०	४	१०	२५
९ शु.	००।५६	प्रा. ५।३२	चि. ४५।१८	रा. ११।१७	प. २८।११	कौ. ०।५६	कं. १२।२८	दि. १०।१९	२।१०।२५।३४	३४।१०.	५।१०	६।५०	५	११	२६
१० श.	०४।४८	दि. ७।०५	स्वा. ५०।५	रा. १।१२	शि. २८।३८	ग. ४।४८	तुला	अहो	२।११।२२।२६	३४।१०	५।१०	६।५०	६	१२	२७
११ र.	०७।३६	दि. ८।१२	वि. ५३।४७	रा. २।४१	सि. २८।०९	वि. ७।३६	तु. ३७।५२	रा. ८।१९	२।१२।१९।१८	३४।१०	५।१०	६।५०	७	१३	२८
१२ चं.	६।२१	दि. ८।५४	अनु. ५६।१४	रा. ३।४०	सा. २६।४८	बा. ६।२१	वृश्चिक	अहो	२।१३।१६।०९	३४।०८	५।१०	६।५०	८	१४	२९
१३ मं.	६।४२	दि. ६।०४	ज्ये. ५७।२२	रा. ४।०८	शु. २४।२५	तै. ६।४२	वृ. ५७।२२	रा. ४।८	२।१४।१३।००	३४।०६	५।११	६।४९	९	१५	३०
१४ बु.	८।४६	दि. ८।४१	मू. ५७।२१	रा. ४।०७	शु. २१।००	व. ८।४६	धनु.	अहो	२।१५।६।५१	३४।०४	५।११	६।४९	१०	१६	१
१५ वृ.	६।३९	दि. ७।५२	पूषा. ५६।०९	रा. ३।४०	ब्र. १६।३६	ब. ६।३९	ध. १०।३९	दि. ६।२८	२।१६।६।४२	३४।०२	५।१२	६।४८	११	१७	२

- मासादिः, **मलमासे स्त्रीणां यात्रा न प्रशस्ता, मिथुने कुजः** १९।५४।
- चन्द्रदर्शनं मु. ४५ समशृंगं फलं समर्घं, पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे पुनर्वसौ ततः पश्चिमोत्तरयात्रा।
- उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
- गणेश ४ व्रतं, भ. ६।३८ उ. ३७।५६ या., पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
- गं. ३।३६ उ. १८।३६ या.।
- **आर्द्रायां रविः** ४९।१० स्त्रीस्त्रीसूर्चयोगो मीनलग्नं मूषकवाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन तापाभ्रचारझंझावातयोगः, उत्तरयात्रा षष्ठ्यां पूर्वफल्गुन्याम्।
- द. ति. ५१।१६ उ., भ. ५१।१६ उ., पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
- द. ति. ५६।१७ या., भ. २३।४७ या.।
- त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।
- पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा।
- भ. ३६।१२ उ., पश्चिमदक्षिणयात्रैकादश्यां स्वात्याम्।
- कमला ११ व्रतं सर्वेषां, भ. ७।३६ या., उत्तरयात्रानुराधायाम्।
- कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।
- प्रदोष १४ व्रतं, गं. ५१।२२ उ., पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले।
- जुलाई ७, गं. ६।२२ या., भ. ८।४६ उ. ३७।४२ या., मिथुने बुधः ४६।१०, पूर्वयात्रा पूर्णिमायाम्।
- प्रथमाषाढी १५ स्नानदानादिः, पूर्वोत्तरयात्रा धनुःस्थे चन्द्रे ततः पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे।

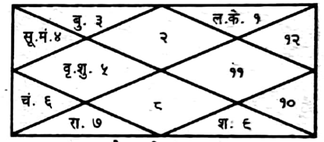
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बु.	२।०।१८।३९	१।११।२।२	३।२५।३८।५५	३।१६।२४।३२	७।४।६।३२	११।१४।११।५८
२ वृ.	२।०।५६।४७	१।१२।४।०६	३।२५।४६।२३	३।१७।१२।०४	७।४।५।३१	११।१४।८।४७
३ शु.	२।१।४०।५५	१।१३।६।१०	३।२५।५६।५१	३।१७।५९।३६	७।४।१।३०	११।१४।५।३६
४ श.	२।२।२२।०३	१।१४।८।१४	३।२६।१०।१९	३।१८।४७।०८	७।३।५७।३०	११।१४।२।२५
५ र.	२।३।३।११	१।१५।१०।१९	३।२६।२०।४७	३।१९।३४।३९	७।३।५३।३०	११।१३।५९।१५
६ चं.	२।३।४४।००	१।१६।३४।४७	३।२६।३१।५४	३।२०।१९।१४	७।३।४९।५३	११।१३।५६।०४
७ मं.	२।४।२४।४९	१।१७।५९।१५	३।२६।४३।०१	३।२०।५७।४९	७।३।४६।१६	११।१३।५२।५३
८ बु.	२।५।५।३८	१।१९।२३।४३	३।२६।५४।०८	३।२१।३६।२४	७।३।४२।३९	११।१३।४९।४२
९ वृ.	२।५।४६।२७	१।२०।४८।१०	३।२७।५।१५	३।२२।२०।५९	७।३।३९।०२	११।१३।४६।३१
९ शु.	२।६।२७।१६	१।२२।१२।३७	३।२७।१६।२१	३।२३।२।३४	७।३।३५।२५	११।१३।४३।२०
१० श.	२।७।८।०४	१।२३।३७।०४	३।२७।२७।२७	३।२३।४४।०९	७।३।३१।४८	११।१३।४०।१०
११ र.	२।७।४८।५२	१।२५।१।३१	३।२७।३८।३३	३।२४।२५।४३	७।३।२८।११	११।१३।३७।००
१२ चं.	२।८।२९।२४	१।२६।३९।३२	३।२७।५०।१५	३।२४।५८।२४	७।३।२५।०१	११।१३।३३।४९
१३ मं.	२।९।९।५६	१।२८।१७।३३	३।२८।१।५६	३।२५।३१।०५	७।३।२१।५२	११।१३।३०।३८
१४ बु.	२।९।५०।२८	१।२९।५५।३४	३।२८।१३।३७	३।२६।३।४६	७।३।१८।४३	११।१३।२७।२७
१५ वृ.	२।१०।३१।००	२।१।३३।३५	३।२८।२५।१८	३।२६।३६।२७	७।३।१५।३४	११।१३।२४।१६

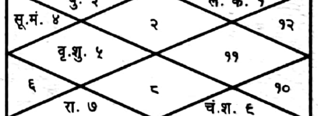
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	४७।०६	३।१०	५।०६	७।१९	६।३७	११।५३	१४।०८	१६।२५	१८।४३	२०।४७	२२।३३	०।०४	१।३३
२ वृ.	४७।०७	३।०६	५।०२	७।१५	६।३३	११।४९	१४।०४	१६।२१	१८।३८	२०।४३	२२।२९	०।००	१।२९
३ शु.	४७।०७	३।०२	४।५८	७।११	६।२९	११।४५	१४।००	१६।१७	१८।३४	२०।३९	२२।२५	२३।५६	१।२५
४ श.	४७।०७	२।५८	४।५४	७।०७	६।२५	११।४१	१३।५६	१६।१३	१८।३०	२०।३५	२२।२१	२३।५२	१।२१
५ र.	४७।०७	२।५४	४।५०	७।३	६।२१	११।३७	१३।५२	१६।०९	१८।२६	२०।३१	२२।१७	२३।४८	१।१७
६ चं.	४७।०६	२।५०	४।४६	६।५९	६।१७	११।३३	१३।४८	१६।०५	१८।२२	२०।२७	२२।१३	२३।४४	१।१३
७ मं.	४७।०६	२।४६	४।४२	६।५५	६।१३	११।२९	१३।४४	१६।०१	१८।१८	२०।२३	२२।०९	२३।४०	१।०९
८ बु.	४७।०६	२।४१	४।३७	६।५०	६।०८	११।२४	१३।३९	१५।५६	१८।१३	२०।१८	२२।०४	२३।३५	१।०४
९ वृ.	४७।०५	२।३७	४।३३	६।४६	६।०४	११।२०	१३।३५	१५।५२	१८।०९	२०।१४	२२।००	२३।३१	१।००
९ शु.	४७।०५	२।३३	४।२९	६।४२	६।००	११।१६	१३।३१	१५।४८	१८।०५	२०।१०	२१।५६	२३।२७	०।५६
१० श.	४७।०५	२।२९	४।२५	६।३८	८।५६	११।१२	१३।२७	१५।४४	१८।०१	२०।०६	२१।५२	२३।२३	०।५२
११ र.	४७।०५	२।२५	४।२१	६।३४	८।५२	११।०८	१३।२३	१५।४०	१७।५७	२०।०२	२१।४८	२३।१९	०।४८
१२ चं.	४७।०४	२।२१	४।१७	६।३०	८।४८	११।०४	१३।१९	१५।३६	१७।५३	१९।५८	२१।४४	२३।१५	०।४४
१३ मं.	४७।०३	२।१७	४।१३	६।२६	८।४४	११।००	१३।१५	१५।३२	१७।४९	१९।५४	२१।४०	२३।११	०।४०
१४ बु.	४७।०२	२।१३	४।०९	६।२२	८।४०	१०।५६	१३।११	१५।२८	१७।४५	१९।५०	२१।३६	२३।०७	०।३६
१५ वृ.	४७।०१	२।०९	४।०५	६।१८	८।३६	१०।५२	१३।०७	१५।२४	१७।४१	१९।४६	२१।३२	२३।०३	०।३२

५ रवौ वल्ली ८।३६।५।३०
अयनांशाः २२।४४।३२



११ रवौ वल्ली ८।३६।५।३७
अयनांशाः २२।४४।३३



विविधविषयः– मलमासे कर्त्तव्याकर्त्तव्यविचारस्तत्र **बृहस्पतिः** – नित्यनैमित्तिकं कुर्यात्प्रयतः सन् मलिम्लुचे। तीर्थस्थानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव च।। गर्भे वार्द्धुषिकृत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु। सपिण्डीकरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः।। तत्र नित्यं सन्ध्यावन्दनादि, नैमित्तकं ग्रहशान्त्यादिनिमित्तकस्नानादि, तीर्थस्नानं द्वितीयाद्यावृत्ति, गजच्छायेति ग्रहणनिमित्तकश्राद्धं, प्रेतस्नानं मरणनिमित्तकस्नानं, गर्भाधानजातकर्मर्णप्रयोग– मृतनरपिण्डकर्मसपिण्डीकरणानि च मलमासेऽपि कर्त्तव्यानि। तदतिरिक्तान्याग्न्याधान– यज्ञदानव्रतचूडाकरणोपनयन-वेदारंभसमावर्तनमहादानवापीकूपतडागदेवालयारंभादिकार्याणि त्याज्यानि। **मलमासे दानाधि-** विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं हरिं कृष्णमधोक्षजम्।.केशवं माधवं राममच्युतं पुरुषोत्तमम्। गोविन्दं वामनं श्रीशं श्रीकान्तं विश्वसाक्षिणम्। नारायणं मधुरिपुमनिरुद्धं त्रिविक्रमम्। वासुदेवं जगद्योनिमनन्तं शेषशायिनम्। संकर्षणं च प्रद्युम्नं दैत्यारिं विश्वतोमुखम्।। जनार्दनं धरावासं दामोदरमघार्दनम्। श्रीपतिञ्च त्रयस्त्रिंशदुद्दिश्य प्रतिनामभिः।। त्रयस्त्रिंशदपूपानि कांस्यपात्रे निधाय च। सघृतं सहिरण्यं च ब्राह्मणाय निवेदयेत्।। प्राप्नुयात्तेन लक्ष्मीं पुत्रपौत्रादिसम्पदः।

ग्रहस्थितिः – मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, मार्गिणौ पूर्वोदितौ बुधगुरू, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम् – पक्षादिभागे वाताभ्रचारतापाग्निभयच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे तापाग्निरोगभयझंझावातादयः।

द्वितीयाषाढकृष्णपक्षः (मलमासः)

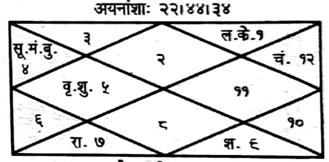
शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. ३।७।१५ ई. तः दि. १६।७।१५ ई. या., पश्चिमेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अगुद्धः, ३० तः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि	सू.अ. घं. मि	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.	
१ शु.	३।२७	दि. ६।३५	उषा. ५४।०८	रा. २।५१	ऐ. ११।२२	कौ. ३।२७	मकर	अहो.	२।१७।३।३३	३४।००	५।१२	६।४८	१२	१८	३	द्वितीयामानं ५५।५३, पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम्।
३ श.	५४।२३	रा. २।५७	श्र. ५१।१४	रा. १।४२	वै. ५।२५	व. २६।५२	मकर	अहो.	२।१८।००।२३	३३।५६	५।१२	६।४८	१३	१९	४	विष्कंभमानं ५३।२५,पंञ्चकारंभो रात्रौ घं. १ मि. ४२ उ., भ. २६।५२ उ. ५४।२३ या., पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्।
४ र.	४८।५०	रा. १२।४४	ध. ४७।४३	रा. १२।१७	प्री. ५१।४१	ब. २१।३७	म.१९।२९	दि. ११००	२।१८।५७।१३	३३।५८	५।१२	६।४८	१४	२०	५	गणेश ४ व्रतम्।
५ चं.	४२।५४	रा. १०।२३	श. ४३।४७	रा. १०।४४	आ. ४४।१६	कौ. १५।५२	कुम्भ	अहो.	२।१९।५४।०५	३३।५७	५।१३	६।४७	१५	२१	६	पुनर्वसौ रविः ५३।१३ पुंस्त्रीसूचंयोगो वृषलग्नं गजवाहनं नीरानाड़ीपतिशुक्रस्तेन तापझंझावातयोगः, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
६ मं.	३६।४१	रा. ७।५३	पूभा. ३६।४०	रा. ६।०५	सौ. ३६।४१	ग. ६।४७	कु.२५।४१	दि. ३।२९	२।२०।५०।५७	३३।५६	५।१३	६।४७	१६	२२	७	भ. ३६।४१ उ.।
७ बु.	३०।२९	सं. ५।२५	उभा. ३५।२९	सं. ७।२५	शो. २९।००	वि. ३।२९	मीन	अहो.	२।२१४७।४९	३३।५५	५।१३	६।४७	१७	२३	८	द. ति. ३०।२९ उ., भ ३।२९ या.।
८ वृ.	२४।२८	दि. ३।००	रे. ३१।२९	सं. ५।४९	अति. २१।३२	कौ. २४।२८	मी.३१।२९	सं. ५।४९	२।२२।४४।४०	३३।५४	५।१३	६।४७	१८	२४	९	पञ्चकान्तः सायं घं. ५ मि. ४९ उ., द. ति. २४।२८ या., गं. १९।२९ उ. ३४।२९ या., पूर्वास्तो बुधः ४।१।
९ शु.	१८।४९	दि. १२।४५	अ. २७।५६	दि. ४।२३	सु. १४।२०	ग. १८।४९	मेष	अहो.	२।२३।४१।३१	३३।५३	५।१३	६।४७	१९	२५	१०	**मघायां सिंहे गुरुः** ४०।५१, भ. ४६।१५ उ., मघायां सिंहे शुक्रः ४१।१३, पश्चिमां विना यात्राश्विन्यां, (९-१० एको.)।
१० श.	१३।४१	दि. १०।४२	भ. २४।५७	दि. ३।१३	धृ. ०७।३५	वि. १३।४१	मे.३९।२५	रा. ६।००	२।२४।३८।२२	३३।५२	५।१४	६।४६	२०	२६	११	भ. १३।४१ या.।
११ र.	०९।२१	दि. ८।५८	कृ. २२।५०	दि. २।२२	शू. ०१।२८	बा. ९।२१	वृष	अहो.	२।२५।३५।१३	३३।५२	५।१४	६।४६	२१	२७	१२	गण्डयोगमानं ५४।३४, पद्मा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
१२ चं.	०५।५२	दि. ७।३५	रो. २१।१३	दि. १।५१	वृ. ५१।२६	तै. ५।५२	वृ. ५१।२१	रा. १।४६	२।२६।३२।८	३३।५०	५।१४	६।४६	२२	२८	१३	कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि।
१३ मं.	०३।२९	दि. ६।३८	मृ. २१।२१	दि. १।४६	ध्रु. ४७।४६	व. ३।२९	मिथुन	अहो.	२।२७।२९।०३	३३।४८	५।१४	६।४६	२३	२९	१४	प्रदोष १४ व्रतं, भ. ३।२९ उ. ३२।५३ या., उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।
१४ बु.	०२।१६	दि. ६।०९	आ. २२।२१	दि. २।११	व्या. ४५।०७	श. २।१६	मिथुन	अहो.	२।२८।२५।५८	३३।४६	५।१५	६।४५	२४	३०	१५	॥००॥
३० वृ.	०२।२१	दि. ६।११	पुन. २४।३६	दि. ३।०७	ह. ४३।२९	ना. २।२१	मि. ६।३५	दि. ६।०५	२।२९।२२।५३	३३।४५	५।१५	६।४५	२५	३१	१६	मासान्तः, द्वितीयाषाढी ३० स्नानदानादिः, मलमासान्तः शुद्धारंभश्च २।२१ उ.।

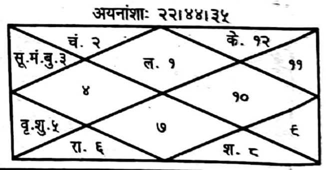
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	२।११।११।३२	२।३।११।३६	३।२८।३६।५९	३।२७।६।०८	७।३।१२।२५	११।१३।२१।०५	४७।००	२।०५	४।०१	६।१४	८।३२	१०।४८	१३।०३	१५।२०	१७।३७	१९।४२	२१।२८	२२।५९	०।२८
३ श.	२।११।५२।०३	२।४।४९।३७	३।२८।४८।४०	३।२७।४१।४८	७।३।६।१६	११।१३।१७।५५	४६।५९	२।०१	३।५७	६।१०	८।२८	१०।४४	१२।५९	१५।१६	१७।३३	१९।३८	२१।२४	२२।५५	०।२४
४ र.	२।१२।३२।३४	२।६।२७।३७	३।२९।००।२१	३।२८।१४।२८	७।३।६।०७	११।१३।१४।४५	४६।५९	१।५७	३।५३	६।०६	८।२४	१०।४०	१२।५५	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।२०	२२।५१	०।२०
५ चं.	२।१३।१२।४९	२।८।१३।३८	३।२९।१२।३२	३।२८।३५।५९	७।३।३।३१	११।१३।११।३४	४६।५८	१।५३	३।४९	६।०२	८।२०	१०।३६	१२।५१	१५।०८	१७।२५	१९।३०	२१।१६	२२।४७	०।१६
६ मं.	२।१३।५३।०४	२।९।५९।३९	३।२९।२४।४३	३।२८।५७।३०	७।३।००।५५	११।१३।८।२३	४६।५७	१।४९	३।४५	५।५८	८।१६	१०।३२	१२।४७	१५।०४	१७।२१	१९।२६	२१।१२	२२।४३	०।१२
७ बु.	२।१४।३३।१९	२।११।४५।३९	३।२९।३६।५४	३।२९।१९।०१	७।२।५८।१९	११।१३।५।१२	४६।५६	१।४५	३।४१	५।५४	८।१२	१०।२८	१२।४३	१५।००	१७।१७	१९।२२	२१।०८	२२।३९	०।०८
८ वृ.	२।१५।१३।३४	२।१३।३१।३९	३।२९।४९।०४	३।२९।४०।३२	७।२।५५।४३	११।१३।२।०१	४६।५६	१।४१	३।३७	५।५०	८।०८	१०।२४	१२।३९	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१।०४	२२।३५	०।०४
९ शु.	२।१५।५३।४९	२।१५।१७।३९	४।००।१।१४	४।०।०२।०३	७।२।५३।०८	११।१२।५८।५०	४६।५६	१।३७	३।३३	५।४६	८।०४	१०।२०	१२।३५	१४।५२	१७।०९	१९।१४	२१।००	२२।३१	०।००
१० श.	२।१६।३४।०४	२।१७।०३।३९	४।०।१३।२४	४।०।२३।३४	७।२।५०।३३	११।१२।४४।४०	४६।५६	१।३२	३।२८	५।४१	७।५९	१०।१५	१२।३०	१४।४७	१७।०४	१९।०९	२०।५५	२२।२९	२३।५५
११ र.	२।१७।१४।१९	२।१८।४९।३९	४।०।२५।३४	४।०।४५।०५	७।२।४७।५८	११।१२।५२।३०	४६।५६	१।२८	३।२४	५।३७	७।५५	१०।११	१२।२६	१४।४३	१७।००	१९।०५	२०।५१	२२।२२	२३।५१
१२ चं.	२।१७।५४।१५	२।२०।३९।४५	४।०।३७।५९	४।०।५१।५४	७।२।४६।०८	११।१२।४९।१९	४६।५५	१।२४	३।२०	५।३३	७।५१	१०।०७	१२।२२	१४।३९	१६।५६	१९।०१	२०।४७	२२।१८	२३।४७
१३ मं.	२।१८।३४।१०	२।२२।२९।५१	४।०।५०।२४	४।०।५८।४३	७।२।४४।१८	११।१२।४६।०८	४६।५४	१।२०	३।१६	५।२९	७।४७	१०।०३	१२।१८	१४।३५	१६।५२	१८।५७	२०।४३	२२।१४	२३।४३
१४ बु.	२।१९।१४।०५	२।२४।१९।५७	४।१।२।४९	४।१।५।३२	७।२।४२।२८	११।१२।४२।५७	४६।५३	१।१६	३।१२	५।२५	७।४३	९।५९	१२।१४	१४।३१	१६।४८	१८।५३	२०।३९	२२।१०	२३।३९
३० वृ.	२।१९।५४।००	२।२६।१०।०३	४।१।१५।१३	४।१।१२।२१	७।२।४०।३८	११।१२।३९।४६	४६।५२	१।१२	३।०८	५।२१	७।३९	९।५५	१२।१०	१४।२७	१६।४४	१८।४९	२०।३५	२२।०६	२३।३५

४ रवौ वल्ली ८।३९।५।४४
अयनांशाः २२।४४।३४



११ रवौ वल्ली ८।३९।५।५१
अयनांशाः २२।४४।३५



विविधविषयाः- **मलमासे** विशिष्टकर्तव्यम् - मलमासे राजगिरौ (पाटलिपुत्रसविधे) वासः परमपुण्यप्रदः। गैरिकानद्यां (नेपालदेशे) स्नानमपि मासेऽस्मिन् महापुण्यप्रदम्। **मलमासविमर्शः**- सूर्यसंक्रान्तिविहीनशुक्लादिचान्द्रमासोऽधिमासः सूर्यसंक्रान्तिद्वययुक्तशुक्लादिचान्द्रमासश्च क्षयाख्यो मासः। तथा हि कमलाकरः - असंक्रान्तिमासो हि चान्द्रोऽधिमासो द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यस्तदानीम्। क्षयाख्यः कदाचित्ततः प्राक् च पश्चादवश्यं हि तत्राधिमासद्वयं स्यात्। तत्र क्षयमासवति वर्षे क्षयमासात्पूर्वं पश्चाच्च मासत्रयान्तरेऽधिमासद्वयं जायते। अधिमासद्वयमित्यसंक्रान्तमासद्वयमसंक्रान्तिमासोऽधिमास इति लक्षणेन केवलमसंक्रान्तमासद्वयमेव भवति, न तूभयत्र मासवृद्धिः, मासवृद्धेरधिशेषोद्भवमासासन्नकालसापेक्षत्वात्। तेन तद्वर्षे पूर्वाधिमासस्य त्रिंशत्तिथ्यात्मकस्यासंक्रान्तत्वादधिमासत्वमिति मासवृद्ध्यभाव एव ज्यौतिषलक्षणसंगतिः। तथा चाधिशेषरूपकालाधिक्यवशाच्चोत्तरासंक्रान्ताधिमासे एव मासवृद्धिः, यथोक्तलक्षणसन्निकटत्वात्। अत्रेदं ध्येयं सावनदिनप्रविष्टे चान्द्रदिने तिथिक्षयः, चान्द्रमासप्रविष्टे सौरमासे क्षयमास इत्युभौ भिन्नपदार्थौ अतो मध्यममानसिद्धो व्यवहारबहिर्भूतः प्रथमः स्पष्टमानसिद्धो व्यवहारविहितश्च द्वितीयोऽधिमासः। तत्रासंक्रान्तोऽवृद्धिमदधिमासः एकः असंक्रान्तो वृद्धिमदधिमासश्चापर इति स्पष्टमानसिद्धोऽप्यधिमासो द्विविध इति। अत्र अधिशेषोद्भवकालाधिक्यवशाज्जायमान असंक्रान्तो वृद्धिमदधिमासः २७ तः ३९ मासाभ्यन्तरे पततीति यः सभो मासेऽस्मिन्नाषाढ इति।

ग्रहस्थितिः - मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ८ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम् - पक्षादिभागे वातमेघचारतापझंझावातोपलपातादयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातमेघच्छायातापादयः।

द्वितीयाषाढशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३७, संवत् २०७२, सन् १४२२ साल, दि. १७।७।१५ ई. तः ३१।७।१५ ई. या., पश्चिमेकालः । वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम् । शुद्धः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमेदितः शुक्रः ४ तो वक्री,

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू.अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ शु.	३।४७	प्रा. ६।४६	पु. २८।१२	सं. ४।३२	व. ४२।४६	ब. ३।४७	कर्क	अहो.	३।०।१६।४७	३३।४४	५।१५	६।४५	२६	१	१७
२ श.	६।१८	प्रा. ७।४६	अश्ले. ३२।५३	सं. ६।२४	वै. ४३।०१	कौ. ६।१८	क. ३२।५३	सं. ६।२४	३।१।१६।४१	३३।४३	५।१५	६।४५	२७	२	१८
३ र.	६।५६	दि. १०।१६	म. ३८।२६	रा. ८।४०	व्य. ४४।००	ग. ६।५६	सिंह	अहो.	३।२।१३।३५	३३।४२	५।१६	६।४४	२८	३	१९
४ चं.	१४।२६	दि. ११।०२	पूफ. ४४।४४	रा. ११।१०	व. ४५।२५	वि. १४।२६	सिंह	अहो.	३।३।१०।३४	३३।४०	५।१६	६।४४	२९	४	२०
५ मं.	१९।२५	दि. १।०२	उफ. ५१।२८	रा. १।५१	प. ४७।०५	बा. १९।२५	सिं. १।२५	प्रा. ५।५०	३।४।७।३३	३३।३८	५।१६	६।४४	३०	५	२१
६ बु.	२४।२७	दि. ३।०४	ह. ५७।४१	रा. ४।२१	शि. ४८।४०	तै. २४।२७	कन्या	अहो.	३।५।४।३३	३३।३६	५।१७	६।४३	३१	६	२२
७ बृ.	२९।०६	सं. ४।५५	चि. ६०।००	अहो.	सि. ४९।५३	व. २९।६	कं. ३०।३७	सं. ५।३२	३।६।१।३३	३३।३४	५।१७	६।४३	१	७	२३
८ शु.	३३।०४	सं. ६।३२	चि. ३।३२	प्रा. ६।४३	सा. ५०।२७	वि. १०।५	तुला	अहो.	३।६।५८।३३	३३।३२	५।१८	६।४२	२	८	२४
९ श.	३५।५७	रा. ७।३८	स्वा. ८।३५	दि. ८।४४	शु. ५०।१८	बा. ४।३१	तु. ५६।२६	रा. ३।५४	३।७।५५।३३	३३।३१	५।१८	६।४२	३	९	२५
१० र.	३७।५०	रा. ८।२६	वि. १२।२८	दि. १०।१७	शु. ४८।५६	तै. ७।२४	वृश्चिक	अहो.	३।८।५२।३३	३३।३०	५।१८	६।४२	४	१०	२६
११ चं.	३८।१८	रा. ८।३८	अनु. १५।१२	दि. ११।२४	ब्र. ४६।४६	व. ८।०४	वृश्चिक	अहो.	३।९।४९।४०	३३।२७	५।१९	६।४१	५	११	२७
१२ मं.	३७।२८	रा. ८।१८	ज्ये. १६।४०	दि. ११।५९	ऐ. ४३।२३	ब. ७।५३	वृ. १६।४०	दि. ११।५९	३।१०।४६।४७	३३।२४	५।१९	६।४१	६	१२	२८
१३ बु.	३५।२७	रा. ७।३१	मू. १६।५३	दि. १२।०५	वै. ३८।०७	कौ. ६।२८	धनु	अहो.	३।११।४३।५४	३३।२१	५।२०	६।४०	७	१३	२९
१४ बृ.	३२।२०	सं. ६।१६	पूषा. १५।५७	दि. ११।४३	वि. ३४।०१	ग. ३।५४	ध. ३०।२८	सं. ५।३२	३।१२।४१।०१	३३।१८	५।२०	६।४०	८	१४	३०
१५ शु.	२८।१७	दि. ४।४०	उषा. १४।०४	दि. १०।५९	प्री. २८।०९	वि. ०।१८	मकर	अहो.	३।१३।३८।०८	३३।१५	५।२१	६।३९	९	१५	३१

मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमेदितः शुक्रः ४ तो वक्री, याम्यायनारंभः २५।५९ उ., ग्रीष्मनवरात्रारंभः, ❑

कर्के रविः २५।५९ मु. ३० फलं साम्यं, याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ९ मि. १५ उ. घं. ३ मि. ३९ यावद्दिने, पुण्याहः, ❑ कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, चन्द्रदर्शनं मु. ३० समशृंगं फलं साम्यम्।

मासादिः, जगन्नाथरथयात्रा, समुद्रस्नानं जगन्नाथदर्शनञ्च, गं. २१।५३ उ. ३६।५३ या., कर्के बुधः ५२।१०।

गणेश ४ व्रतं, करमूले पुलिकमूलबन्धनं, भ. ४२।१३ उ.।

पुष्ये रविः ५६।४५ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगो मिथुनलग्नं शिखिवाहनं नीरानाड़ीपतिश्शुक्रस्तेन वातमेघचारवृष्टियोगः, वक्री शुक्रः ७।२०, गृहप्रवेशो रात्रौ घं. ११ मि. १० उ. घं. ३ मि. ५८ या., ✱

द. ति. १९।२५ उ., (६ एको.)। ✱ भ.१४।२६ या., उत्तरयात्रा पंचम्यां पूर्वफल्गुन्याम्।

द. ति. २४।२७ या., गृहप्रवेशः पूर्वदक्षिणयात्रा च सप्तम्याम्।

भ. २९।६ उ., गृहप्रवेशः सप्तम्यां, पूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा, (७ एको.)।

भ. १।५ या., दक्षिणयात्रा।

पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।

रैवतमन्वादिः, करमूले पुलिकमूलबन्धनं, उत्तरयात्रा दशम्यामनुराधायाम्।

हरिशयन ११ व्रतं सर्वेषां, चातुर्मास्यव्रतारंभः, भ. ८।४ उ. ३८।८ या., वक्रात्कर्के शुक्रः, ३५।६, गृहारंभप्रवेशौ अनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रैकादश्याम्।

वासुदेव १२ यवचूर्णेन पारणं, गं. १०।४० उ. २५।४० या., पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले।

प्रदोष १३-१४ व्रतं, गृहप्रवेशो मूले।

भ. ३२।२० उ., मार्गी शनिः ३४।१९।

आषाढी १५ गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं, चाक्षुषमन्वादिः, १४२३ सालसंज्ञकवर्षारंभः पूर्णान्तात्, भ. ०।१८ या., गृहारंभः पूर्णिमायां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।

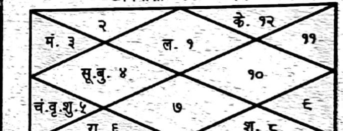
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ शु.	२।२०।३३।५५	२।२८।०।०९	४।१।२७।३७	४।१।१९।१०	७।२।३८।४८	११।१२।३६।३५
२ श.	२।२१।१३।५०	२।२९।५०।१२	४।१।४०।०१	४।१।२५।५८	७।२।३६।५९	११।१२।३३।२५
३ र.	२।२१।५३।४५	३।१।४०।२०	४।१।५२।२५	४।१।३२।४६	७।२।३५।१०	११।१२।३०।१५
४ चं.	२।२२।३३।२४	३।३।३२।०४	४।२।५।११	४।१।३४।२७	७।२।३४।०५	११।१२।२७।०४
५ मं.	२।२३।१३।०३	३।५।२३।४८	४।२।१७।५७	४।१।३२।४२	७।२।३३।०१	११।१२।२३।५३
६ बु.	२।२३।५२।४२	३।७।१५।३२	४।२।३०।४३	४।१।१८।२४	७।२।३१।५७	११।१२।२०।४२
७ बृ.	२।२४।३२।२१	३।९।७।१५	४।२।४३।२९	४।१।४।०६	७।२।३०।५३	११।१२।१७।३१
८ शु.	२।२५।१२।००	३।१०।५८।५८	४।२।५६।१५	४।०।४९।४८	७।२।२९।४९	११।१२।१४।२०
९ श.	२।२५।५१।३८	३।१२।५०।४१	४।३।९।००	४।०।३५।३०	७।२।२८।४५	११।१२।११।०९
१० र.	२।२६।३१।१६	३।१४।४२।२४	४।३।२१।४५	४।०।२१।१२	७।२।२७।४१	११।१२।०७।५९
११ चं.	२।२७।१०।३७	३।१६।३२।५०	४।३।३४।५२	३।२९।५४।५५	७।२।२७।०४	११।१२।४।४८
१२ मं.	२।२७।४९।५८	३।१८।२३।१६	४।३।४७।५९	३।२९।२८।३९	७।२।२६।२७	११।१२।१।३७
१३ बु.	२।२८।२९।१९	३।२०।१३।४२	४।४।१।०६	३।२९।२।२३	७।२।२५।५०	११।११।५८।२६
१४ बृ.	२।२९।८।४०	३।२२।४।०७	४।४।१४।१३	३।२८।३६।०७	७।२।२५।१३	११।११।५५।१५
१५ शु.	२।२९।४८।०१	३।२३।५४।३२	४।४।२७।२०	३।२८।९।५१	७।२।२५।१९	११।११।५२।०४

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध.अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	४६।५१	१।०८	३।०४	५।१७	७।३५	९।५१	१२।०६	१४।२३	१६।४०	१८।४५	२०।३१	२२।०२	२३।३१
२ श.	४६।५१	१।०४	३।००	५।१३	७।३१	९।४७	१२।०२	१४।१९	१६।३६	१८।४१	२०।२७	२१।५८	२३।२७
३ र.	४६।५१	१।००	२।५६	५।०९	७।२७	९।४३	११।५८	१४।१५	१६।३२	१८।३७	२०।२३	२१।५४	२३।२३
४ चं.	४६।५०	०।५६	२।५२	५।०५	७।२३	९।३९	११।५४	१४।११	१६।२८	१८।३३	२०।१९	२१।५०	२३।१९
५ मं.	४६।४९	०।५२	२।४८	५।०१	७।१९	९।३५	११।५०	१४।०७	१६।२४	१८।२९	२०।१५	२१।४६	२३।१५
६ बु.	४६।४८	०।४८	२।४४	४।५७	७।१५	९।३१	११।४६	१४।०३	१६।२०	१८।२५	२०।११	२१।४२	२३।११
७ बृ.	४६।४७	०।४४	२।४०	४।५३	७।११	९।२७	११।४२	१३।५९	१६।१६	१८।२१	२०।०७	२१।३८	२३।०७
८ शु.	४६।४६	०।४०	२।३६	४।४९	७।०७	९।२३	११।३८	१३।५५	१६।१२	१८।१७	२०।०३	२१।३४	२३।०३
९ श.	४६।४५	०।३५	२।३१	४।४४	७।०२	९।१८	११।३३	१३।५०	१६।०७	१८।१२	१९।५८	२१।२९	२२।५८
१० र.	४६।४५	०।३१	२।२७	४।४०	६।५८	९।१४	११।२९	१३।४६	१६।०३	१८।०८	१९।५४	२१।२५	२२।५४
११ चं.	४६।४३	०।२७	२।२३	४।३६	६।५४	९।१०	११।२५	१३।४२	१५।५९	१८।०४	१९।५०	२१।२१	२२।५०
१२ मं.	४६।४१	०।२३	२।१९	४।३२	६।५०	९।०६	११।२१	१३।३८	१५।५५	१८।००	१९।४६	२१।१७	२२।४६
१३ बु.	४६।३९	०।१९	२।१५	४।२८	६।४६	९।०२	११।१७	१३।३४	१५।५१	१७।५६	१९।४२	२१।१३	२२।४२
१४ बृ.	४६।३८	०।१५	२।११	४।२४	६।४२	८।५८	११।१३	१३।३०	१५।४७	१७।५२	१९।३८	२१।०९	२२।३८
१५ शु.	४६।३७	०।११	२।०७	४।२०	६।३८	८।५४	११।०९	१३।२६	१५।४३	१७।४८	१९।३४	२१।०५	२२।३४

३ रवौ वल्ली ८।३९।५।५८
अयनांशाः २२।४४।३६



१० रवौ वल्ली ८।३९।६।५
अयनांशाः २२।४४।३७



विविधविषयः – आषाढे शकुनविचारः– आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं प्रजापीडा चोत्तराषाढे। आषाढशुक्लद्वितीयायां **जगन्नाथरथयात्रा** तद्दिने रथस्थरामावलोकनेन नैव विपद्यते। पूर्णिमायां **वायुपरीक्षणम्**– तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायुषु धान्योत्पत्तिः प्रजासुखञ्च जायते तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले **पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः**- शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेदित्यनेन चातुर्मास्यनन्तरं तस्य करान्मुक्तिः । आर्द्रानक्षत्रस्थे सूर्ये **पायसभोजनमहत्त्वम्**– आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरमत्र पायसमिति ।

ग्रहस्थितिः – मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ४ तो वक्री, वक्री पूर्वोदितः शनिः १४ तो मार्गी।

वातावरणम् – पक्षादिभागे मेघचारवायुखण्डवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धे वायुमेघचारवृष्टयः।

ग्रहाणां दानादिपदार्थाः

ग्रहः	पदार्थाः
सूर्यः	माणिक्य, गोधूम, गुड़, ताम्र, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, रक्तवस्त्र, सुवर्ण, केसर, मूँगा, सवत्सगौ, लाजा, जप७०००
चन्द्रः	वंशपात्र, श्वेततण्डुल, श्वेतवस्त्र, श्वेतपुष्प, श्वेतचन्दन, दधि, शंख, सिता, चांदी, कर्पूर, श्वेतवृषभ, घृत, कूठ, मोती, जप११०००
मङ्गलः	विद्रुम, भूमि, मसूरद्विदल, रक्तवृषभ, गुड़, ताम्र, रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, सुवर्ण, केशर, कस्तूरी, बला, जप१००००
बुधः	कांस्य, हरितवस्त्र, हरितपुष्प, कूर्पर, शंख, फल, मुद्ग, गजदन्त, घृत, सोना, मोथा, मणि, षड्रसभोजन, पन्ना, जप८०००
गुरुः	पीतधान्य, पीतवस्त्र, पीतपुष्प, पीतचन्दन, सोना, घृत, पीतफल, दधि, पोखराज, अश्व, मधु, पुस्तक, छत्र, भूमि, शक्कर, हरिद्रा, जप१६०००
शुक्रः	श्वेततण्डुल, श्वेतचित्रवस्त्र, श्वेतचन्दन, घी, सोना, रजत, स्फटिक, दधि, शंख, गोधूम, शक्कर, सुगन्धद्रव्य, श्वेताश्व, भूमि, श्वेतगौ, हीरा, जप११०००
शनिः	माषान्न, तैल, कृष्णतिल, कृष्णवस्त्र, कृष्णपुष्प, कंबल, उपानह, कस्तूरी, सोना, लौह, कुल्थी, महिषी, छत्र, कृष्णधेनु, कज्जल, शमी, नीलम, जप२३०००
राहुः	गोमेद, तिल, तुरग, माषान्न, नीलवस्त्र, नीलपुष्प, तिलतैल, सप्तधान्य, लौह, सुवर्ण, कृष्णपुष्प, कम्बल, शस्त्र, छाग, लाजावर्त, जप१८०००
केतुः	माषान्न, कम्बल, कस्तूरी, तिलतैल, कृष्णवस्त्रादि, सुवर्ण, लौह, छाग, खड्ग, कस्तूरी, वैदूर्यमणि, उपानह, कृष्णतिल, लाजावर्त, जप७०००

ग्रहाणां दानरत्नधारणजपादिकालः-सूर्यादीनाञ्च यद्दानं जपहोमार्चनादिकम् । तेषां वारे प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि । कन्यामीनपत्यो राहुकेत्वोर्जपादिकं शनौ बुधे वा कार्यम् । धर्मप्रशंसा-धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः । धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ।।

विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम्

सूर्यदशावर्ष ६	चन्द्रदशावर्ष १०	भौमदशावर्ष ७	राहुदशावर्ष १८	गुरुदशावर्ष १६	शनिदशावर्ष १९	बुधदशावर्ष १७	केतुदशावर्ष ७	शुक्रदशावर्ष २०
कृ. उफ. उषा	रोहि. ह. श्रवणा	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. शत	पुन. वि. पूभा	पुष्य. अनु. उभा	आश्ले. ज्ये. रेव.	मघा.मू.अश्वि	पूफ. पूषा. भर
अन्तर्दशा १८	अन्तर्दशा ३०	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ५४	अन्तर्दशा ४८	अन्तर्दशा ५७	अन्तर्दशा ५१	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ६०
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
सू. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	वृ. २ १ १८	श. ३ ० ०३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	वृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ०६	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	सू. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	वृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	वृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	सू. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
वृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	सू. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	सू. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	म. ० ११ २७	रा. १ ० १८	वृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	सू. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	वृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	वृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	सू. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	वृ. २ ६ १२	श. २ ८ ०९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम्

मंगला १ श्र.आ.चि.	पिंगला २ ध.पुन.स्वा.	धान्या ३ श.पु.वि.	भ्रामरी ४ अ.आश्ले. अनु.पूभा.	भद्रिका ५ भर.म.ज्ये.उभा	उल्का ६ कृ.पूफ.मू.रे	सिद्धा ७ रो.उफ.पूषा	संकटा ८ मृ.ह.उषा
मा.१२चं	मा.२४ सू.	मा. ३६वृ.	मा ४८मं	मा. ६०बु.	मा. ७२श.	मा. ८४शु.	मा.९६के.
मं. ०।१०	पि. १।१०	धा. ३।०	भ्रा. ५।१०	भ. ८।१०	उ. १२।०	सि. १६।१०	सं. २१।१०
पि. ०।२०	धा. २।००	भ्रा. ४।०	भ. ६।२०	उ. १०।०	सि. १४।०	सं. १८।२०	मं. २।२०
धा. १।०	भ्रा. २।२०	भ. ५।०	उ. ८।०	सि. ११।२०	सं. १६।०	मं. २।१०	पि. ५।१०
भ्रा. १।१०	भ. ३।१०	उ. ६।०	सि. ९।१०	सं. १३।१०	मं. २।०	पि. ४।२०	धा. ८।००
भ. १।२०	उ. ४।०	सि. ७।०	सं. १०।२०	मं. १।२०	पि. ४।०	धा. ७।०	भ्रा. १०।२०
उ. २।०	सि. ४।२०	सं. ८।०	मं. १।१०	पि. ३।१०	धा. ६।०	भ्रा. ९।१०	भ. १३।१०
सिं. २।१०	सं. ५।१०	मं. १।०	पि. २।२०	धा. ५।०	भ्रा. ८।०	भ. ११।२०	उ. १६।०
स. २।२०	मं. ०।२०	पि. २।००	धा. ४।००	भ्रा. ६।२०	भ. १०।०	उ. १४।०	सि. १८।२०

योगिनीदशाभुक्तभोग्यानयनम्

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात् । मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः । ततो विशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम् ।

योगिनीशान्तिमन्त्राः

मङ्गला-ऊँ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा । पिङ्गला-ओं ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा । धान्या-ओं श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा । भ्रामरी-ऊँ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा । भद्रिका-ऊँ भ्रदिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा । उल्का-ओं उल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा । सिद्धा-ओं ह्रौं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा । सङ्कटा-ओं ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा ।

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नामग्रामदिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, वृहस्पति, राहु, शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति ।। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम् । अतएव स्ववर्गमित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शत्रुदिग्गृहवासश्च हानिकर इति ।

गरुडादिवर्गचक्रम्

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	मूषक	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

अंगस्फुरणफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	वक्षसि	सुखम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
ललाटे	पदलाभः	हृदये	इष्टसिद्धिः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
स्कन्धे	भोगः	कटिदेशे	प्रमोदः	पृष्ठे	पराजयः
भ्रूमध्ये	सुखम्	नाभौ	स्त्रीनाशः	मुखे	मधुरभोजनं
भ्रूवोः	सुखम्	कटिपार्श्वे	प्रीतिः	कपोलौ	व्यभिचारः
कपाले	शुभम्	आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	बाहौ	प्रियलाभः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	भगे	पतिसमागमः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	धनम्	कुक्षौ	प्रीतिः	वस्तिदेशे	उन्नतिः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरे	धनम्	उरसी	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	लिङ्गे	स्त्रीसमागमः	जानुन्योः	भयम्
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	गुदे	वाहनाप्तिः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
नेत्रापांगे	स्त्रीलाभः	वृषणौ	पुत्रलाभः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
नासिकयोः	सुखम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः	पादतले	पराक्रमः
हस्ते	धनलाभः	हनौ	भयम्	पादयोः	हानिः

नेत्रस्फुरणफलम्- नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः । नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत् संगरेऽभद्रहेतुः वामे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम् । एतानि फलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि, स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि ।

शतपदचक्रम्

नक्षत्रवर्णाः	चु. चे चो. ल. अश्विनी	लि. लु ले. लो भरणी	अ. इ. उ. ए. कृत्तिका	ओ. ब. वि. बु. रोहिणी	वे. वो. क. कि. मृगशिरा	कु. घ. ङ. छ. आर्द्रा	के. को. ह. हि. पुनर्वसु	हु. हे. हो. ड. पुष्य	डि. डु. डे. डो. आश्लेषा	म. मि. मु. मे. मघा	मो. ट. टि. टु. पूफ	टे. टो. प. पि. उफ	पु. ष. ण. ठ. हस्त	पे. पो. र. रिं चित्रा
राशि	मेष	मेष	मे१वृ३	वृष	वृ२मि२	मिथुन	मि३क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं१कं३	कन्या	कं२तु२
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	च२म२	मनुष्य	म३ज१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व१म३	मनुष्य	मनुष्य
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य
हंसक	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो
राशीश	मंगल	मंगल	मं१शु३	शुक्र	शु२बु२	बुध	बु३च१	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सू१बु३	बुध	बु२शु२
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य

नक्षत्रवर्णाः	रु. रे. रो. त. स्वाती	ति. तु. ते. तो. विशाखा	न. नि. नु. ने. अनुराधा	नो. य. यि. यु. ज्येष्ठा	ये. यो. भ. भि. मूल	भु. ध. फ. ढ़ पूषा	भे. भो. ज. जि. उषा.	खि. खु. खे. खो. श्रवणा	ग. गि. गु. गे. धनिष्ठा	गो. स. सि. सु. शतभिषा	से. सो. द. दि. पूभा.	दु. थ. झ. ञ. उभा.	दे. दो च. चि रेवती
राशि	तुला	तु३वृ१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध१म३	मकर	म२कुं२	कुम्भ	कु३मी१	मीन	मीन
वर्ण	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र
वश्य	मनुष्य	म३की१	कीट	कीट	मनुष्य	म।।च३।।	चतुष्पद	च१।।ज२।।	ज२म२	मनुष्य	म३ज१	जलचर	जलचर
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल
योनि	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैर	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	शुक्र	शु३मं१	मंगल	मंगल	गुरु	गुरु	गु१श३	शनि	शनि	शनि	श३गु१	गुरु	गुरु
गण	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	स्तनयोः	सौभाग्यम्	स्कन्धयोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	वामकर्णे	लाभः	उदरे	भूषणाप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः	केशान्ते	कष्टम्
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	नेत्रयोः	धनलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	कटिभागे	पशुलाभः	गुल्फयोः	धनम्
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	द. भुजे	पराक्रमः	जानुद्वये	शुभः	द. मणिबंधे	हानिस्तापः	द. चरणे	भ्रमणम्
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	वामभुजे	राजभयम्	जंघयोः	शुभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	वा. चरणे	बन्धुनिग्रहः
नासाग्रे	रोगः	कण्ठे	शत्रुनाशः	हस्तद्वये	लाभः	हृदये	धनाप्तिः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः

पल्लीपतनफलम्– यदि पतति च पल्ली दक्षिणांगे नराणां स्वजनधनवियोगी लाभदा वामभागे। उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः करचरणहृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात् ।। एतानि फलानि पुरुषाणां, स्त्रीणान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि। अनिष्टपल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादिदानं कार्यम्। शिवालये दीपं दद्यादष्टोत्तरशतसंख्यक ''नमः शिवाय'' इति मन्त्रस्य जपश्च कार्यः।

जन्मराशेः सायुररिष्टवर्षाणि

राशिः	अरिष्टवर्षाणि	आयुः
मेष	१ ।१३ ।५० ।६२	७५
वृष	३ ।६ ।८ ।३३ ।४६ ।५२ ।६३	७५
मिथुन	६ ।१० ।११ ।१८ ।२४ ।५३ ।६३	७५
कर्क	१ ।१६ ।२२ ।२७ ।३५ ।४५ ।५५ ।६०	७०
सिंह	१ ।१० ।१५ ।२५ ।४५ ।५१ ।६१	६५
कन्या	१ ।३ ।१३ ।२६ ।३३ ।४३	६८
तुला	२ ।४ ।१६ ।२१ ।३३ ।४१ ।५१ ।६१	६५
वृश्चिक	३ ।७ ।८ ।१३ ।३२ ।३५ ।४५ ।६३	७५
धनु	३ ।१० ।३२ ।१६ ।२३ ।३६ ।४७ ।६७	६५
मकर	३ ।१० ।३२ ।३३ ।४२ ।५१ ।५६ ।६१	१००
कुम्भ	१८ ।३२	६१
मीन	१८ ।३३	६१

जन्मलग्नात् सायुररिष्टवर्षाणि

लग्नं	अरिष्टवर्षाणि	आयुः
मेष	४ ।११ ।१६ ।४४ ।५८	१००
वृष	१ ।२८ ।३३ ।४४	६०
मिथुन	१ ।१० ।१४ ।३८ ।५८	६४
कर्क	५ ।२५ ।४० ।४८ ।६२	१००
सिंह	५ ।१३ ।२८ ।३६ ।४८	६३
कन्या	४ ।१६ ।२३ ।३६ ।४५	१००
तुला	१५ ।३१ ।३५ ।५४ ।६२	७५
वृश्चिक	११ ।२८ ।३८ ।५२ ।६२	१००
धनु	२ ।८ ।१० ।१८ ।३१ ।३८ ।४२ ।६७	८१
मकर	५ ।१३ ।२७ ।३६ ।५७ ।६२	८५
कुम्भ	२ ।२८ ।३३ ।४८ ।६४	६०
मीन	१ ।८ ।१३ ।३६ ।४८	८३

माहेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि–मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र–मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व २२
मंगल–व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४ अ४
बुध–व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ अ६
गुरु–अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र–शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि–शू४ व४ शू६ अ४ शू२ अ४ शू२ अ४ शू४ व४ अ४ व४ अ६ व४ अ२ शू२

ज्येष्ठाषाढमासयोः

रवि–शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र–व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल–अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध–शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरु–अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शू४ व४
शुक्र–शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि–शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विनकार्त्तिकमार्गपौषमासेषु

रवि–मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र–अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल–मा२ व६ अ१० व६ शु२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध–शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरु–अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र–अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ व६ मा६
शनि–मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ१२ शू४ व६ मा२ शू६

फलम्–ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः। क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया। न वार-तिथि-नक्षत्रं न योगः करणन्तथा। शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत् ।। माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ।। अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।

१ वर्णगुणाः वरस्य (कन्यायाः)

वर्णा	विप्र	क्षत्रि	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रि	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१.	१

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्यः	चतु.	मा.	जल	वन	कीट
चतु	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
वृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

७ राशिकूटगुणाः वरस्य (कन्यायाः)

राशयः	१ मे	२ वृ.	३ मि.	४ क.	५ सिं.	६ कं.	७ तु.	८ वृ.	९ ध.	१० म.	११ कु.	१२ मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

४ योनिकूटगुणाः वरस्य (कन्यायाः)

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	२	२	२	४	३	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	१	२	२	२	४

६ गणगुणाः (कन्यायाः)

गण	दे.	मा.	रा.
दे	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

८ नाडीगुणाः

ना.	आ.	म.	अ.
आ.	०	८	०
म.	८	०	८
अ.	८	८	०

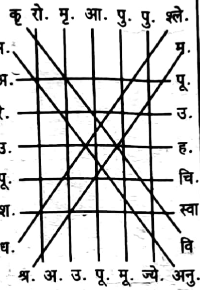
अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मृग	मेष

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	वृहः	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	च.मं.वृ.	सू.बु.	सू.चं.वृ.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
समाः	बुधः	मं.वृ.शु.श.	शुक्रः शनि	म.वृ. शनि	शनिः	मं. वृहः	गुरुः
शत्रवः	शु.श.	X	बुधः	चन्द्रः	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

विवाहे पञ्चशालाकाचक्रम्



विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभः	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्यः	१।२।५।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सूं.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्र.
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	सं

राहुकेत्वोः शनिवत् । सू. श. रा. के. ३।६।८।११ चं. २।३।११ मं. ३।६।११ बु.वृ. १।२।३।४।५।६।९ ।१०।११ ॥ उक्तस्थानस्थ-ग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं- कुशादिकं गृहीत्वा ओं सोपकरणवारिपूर्णघटाय नमः ३ । कुशोपरि ओ ब्राह्मणाय नमः ३ । घटं सिक्त्वा-ओमद्यामुके मासि अमुकेपक्षेऽमुकतिथौ मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथसिद्धिपूर्वकपितृस्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे । ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय-ओमद्य कृतैतत्सोपकरणवारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थ-मेतावद्द्रव्य-मूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे । ततः - एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णु-शिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः। इति प्रार्थयेत् ।

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
दण्ड	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गव	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	
दिन	४	२	१	६	५	४	२	१	६	
दण्ड	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२	
पल	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०	
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	

विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

पति	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्ता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः।

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्-सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः । शेषांके जन्मनि गताच्चन्द्रराशिरिह न्यसेत् । शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत् । त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ । शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ ॥

त्रिराशिपतिः

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	म.	श.	म.	वृ.	च.
रात्रौ	वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.

वर्षमुन्थानयम्- (गतवर्षसंख्या+जन्मलग्नसंख्या) ÷ १२ ।। एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः । **वर्षेशनिर्णयः-** वर्षलग्नेशजन्मलग्नेश-मुंथेश-त्रिराशिपति-दिवारविराशीश-रात्रौचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः।

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	प्रीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सुखम्
सुहृद्	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीड़ा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीड़ा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुर्वृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

७ ।। वर्षीय शनेः मासभेदेन फलम्- मस्तके ७ मासाः सर्वांशे हानिः। नेत्रे६ मासाः- सर्वांशेहानिः। मुखे ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः- भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः-यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः-कष्टमुदरे । गुह्ये ५ मासाः-सर्वांशेहानिः । जानुनि १४ मासाः-राजबलेन जयः। जंघयोः ११ मासाः स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः- व्यर्थभ्रमणम् ।

गुणयोगबोधक (मेलापक) चक्रम् ● पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि ● उपरि वरनक्षत्राणि

नक्षत्र	अ	भ.	कृ.१	कृ३.	रो.	मृ२.	मृ.२	आ.	पुन.३	पुन.१	पु.	श्ले.
अश्वि	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७
भरणी	३४	२८	२६	१९	२२॥	१४॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥
कृति१	२७॥	२७॥	२८	१६॥	६	१५॥	१९	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥
कृति३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०
रोहिणी	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३
मृग २	२३॥	१३॥	१८॥	२८॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	२२	२२
मृ. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१६॥	१३	१५॥
आर्द्रा	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥
पुन ३	१९	२६	२३	१६॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१६॥
पुन १	२१॥	२८	२५॥	२०	२४	२५	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०
आश्ले.	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	२८॥	२८
मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१६॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६
पूफ.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥
उफ१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥
उफ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१६॥	२८॥	२१॥
हस्त	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१६॥	२८॥	२२
चित्रा२	१३	६	१९	२५॥	२०	१२	१९	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥
चित्रा२	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६
स्वाती	२७॥	२६॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥
वि.३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१६॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१९
वि.१	१६॥	१६॥	१४॥	१६॥	१४॥	१२॥	१३	१४॥	१४॥	१९	१८	१५॥
अनु.	२४॥	१४॥	१६॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२६॥	२२॥	१२॥	१३	३	६	१०॥	२०	२६
मूल	१२	२०	२४॥	१९	१३	२३	२१	१५	१२	८॥	१७॥	२४
पूषा॥	२६	१९	८	१२॥	१९	११	१६	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥
पूश॥	२७	२०	१९	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥
उ.१	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	६॥
उ.३	२८	२६॥	१६॥	१४	१७	१८	२०॥	२२॥	१२॥	२७	२८	१३
श्र१॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२८	२४	२१॥	२१॥	२७	२५	१५
श्र२॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८॥	२६	१५
धनि.२	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	८॥	१७॥	१७॥	२२	१३	२८
धनि.२	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०
शत.	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	७॥	१५	२०
पू.३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	२३॥	२०॥	१४
पू.१	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६॥	२५॥	१८	१८	१८	२५	१८॥
उभा.	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५॥	१६॥	१६॥	२५॥	२७	२६	१९	२०
रे.	२५	२४॥	११॥	१४	१७	३६	२५॥	२४	२५॥	२४॥	२७	१३

नक्षत्र	म.	पूफ.	उफ.१	उफ.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.
अश्वि	२०॥	२६	१७॥	११	९	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१६॥	२६॥	१५
भरणी	२१	१९	२८	२१॥	१९	६	१४॥	२६॥	२२॥	१६॥	१७॥	२०
कृति१	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१६॥	१६॥	२०॥	२६॥
कृति३	१६॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥
रोहिणी	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥
मृग २	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१२	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥
मृ. २	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१९॥	१४	११	१३
आर्द्रा	२३॥	२६॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	४
पुन ३	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५
पुन १	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१९	२६	१०॥
पुष्य	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२
आश्ले.	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०	२६	२५	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६
मघा	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४
पूफ.	३०	२८	३४॥	२४	२२॥	८॥	११॥	२५॥	१६॥	२६॥	२४॥	२४॥
उफ१	२६॥	३४	२८	२८	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०	१६॥
उफ३	१७॥	२५	१९	२७	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३
हस्त	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१९	२६॥	१७॥	१६॥	२६	१२
चित्रा२	२३॥	६॥	१५॥	२४	२७	२८	२०	१९	२६॥	२८॥	१९	२५
चित्रा२	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२१	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥
स्वाती	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥
वि.३	१७॥	१६॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥
वि.१	२१	२३	२१॥	१८	१९	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥
अनु.	२४॥	२०॥	२६॥	२६	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१
ज्ये.	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥	१६॥	२०॥	३१॥	३०	२८
मूल	२५	१९	६॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६
पूषा॥	२१	१९	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥
पूश॥	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१९
उ.१	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१९	१२	११॥	२५॥	१९॥
उ.३	६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२
श्र१॥	५॥	१९	२०	२४	२५	१९॥	२६॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२३
श्र२॥	६॥	१८॥	२१॥	२३॥	२४	१८॥	२५॥	२३	१९	१४	२८	२२
धनि.२	१८॥	५॥	१२॥	१६	१७॥	१९॥	२४॥	२६	३०	२८	१४	२६
धनि.२	२५॥	११॥	१६॥	१७॥	२१	१८	१६	२२	२५॥	२८	१२	२६
शत.	२६॥	२०॥	१३॥	११	८॥	२६	२६	१९	२६॥	२६॥	२१	२०
पू.३	१९॥	२५॥	१६॥	१५॥	१७॥	१८॥	१६॥	२८	२१	२१॥	२७	१२
पू.१	२६	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥	१२॥	१९	१४	२१	२७	११॥
उभा.	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	६॥	५	१९॥	१२	१९	२०	२३
रे.	१२	२२	२२	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२

नक्षत्र	मू.	पू॥	पूश॥	उ१	उ३	श्र१॥	श्र२॥	ध२	ध२	श.	पू.३	पू.१	उभा.	रे.
अश्वि	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भरणी	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१९॥	२८
कृति१	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१९॥	१७॥	१९॥	११॥
कृति३	२०	१२॥	१३॥	६॥	१४	१२	१०	२२॥	२६॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	१४	१९	२०	१२॥	१७	१९	१८	२०	२६	२४	३०॥	२७	२६	१९
मृग २	१५	१२	१९	१८	२१	२४॥	२४	१३	१९	२७	२६॥	२६॥	१७	२७
मृ. २	२३	१९	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आर्द्रा	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१९	२७	२७
पुन ३	१३	२७	२६	२७	२२॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१९॥	२७	२८
पुन १	८	२१	२०॥	२१॥	२६	२५	२७	२१	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥
पुष्य	१७	१९	११॥	२१॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
आश्ले.	२२॥	१६	१७॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१८॥	१७॥	११
पूफ.	१९	१८	१९	२७	२१	१९॥	१८॥	४॥	११॥	१९॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उफ१	१०	२३	२७	२८	२२	२१	२१	११॥	१८॥	१२॥	१६॥	१५॥	२६॥	२४॥
उफ३	१५॥	२६॥	२८॥	२६॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२९	२७
हस्त	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१९	१९	८॥	१४॥	१९	२७	२७
चित्रा२	२८	१४	१३	२१	१७॥	१९	११	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चित्रा२	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२१	१५	४	१३
स्वाती	१३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२५	१६॥	२०	१३
वि.३	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७	१७॥	३२॥	२६॥	२६॥	२२	१६॥	१३॥	५
वि.१	२३॥	१७॥	१६॥	६॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	६॥
अनु.	१६॥	१४॥	१४॥	३२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२५	२५	१९	११	६॥	२१	२१
मूल	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२५	२१	१५॥	१६॥	२५॥	२७
पूषा॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२॥
पूश॥	२७	२७	२८	३५	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२२॥	२६॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ.१	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५॥	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ.३	१६॥	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्र१॥	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्र२॥	१६	२३	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०	१८॥	२३	२६॥	३१॥	२४॥
धनि.२	२१॥	६	६॥	१६॥	२५॥	२८	२८	२८	१८॥	२३॥	२१॥	२६॥	१५॥	२२॥
धनि.२	२६॥	१७॥	१६॥	२३॥	१८॥	२१॥	२१	२०॥	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१४॥
शत.	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१६	६	१७॥	१६॥
पू.३	१५॥	३१॥	३०॥	२६॥	२४	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१६	२८॥	१८	२३	२०॥
पू.१	१७	३१॥	३१॥	३०	२८	२६॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उभा.	२४	२२	२२॥	३१॥	२६॥	२८॥	२६॥	१५॥	६	१६॥	२१॥	३३	२८	३४॥
रे.	२७	३०	३०॥	२१	१९	२०	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२८	३३	२८

गुणविचारः-गुणैः षोडशभिर्निन्द्यो मध्यमा विंशतिस्तथा । श्रेष्ठस्त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ।। वर्णविपरिहारः-मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ- द्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः । खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ।। राशीशयोरमित्रत्वे मित्रत्वे चांशनाथयोः । गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रदः स्मृतः ।। राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव । नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ।।

वरकन्ययोर्मेलापकविचारः-लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजः । कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशकः ।। इदं लग्नचन्द्राभ्यां विचार्यम् । सप्तमेशे षष्ठाष्टव्ययगते न शोभनः । परं सप्तमेशे स्वोच्चमूलत्रिकोणमित्रगृहगते शोभनः ।। अस्य परिहारः-यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा । अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत् ।। शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् । तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।। लग्नादिभौमो यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च । पूर्णस्थितो ह्यन्यतरस्तदीयं वैधव्ययोगं च विनाशयेद्यम् । केन्द्रे कोणे शुभाः सर्वे त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः । तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा । उभयोर्वरकन्ययोर्नामनक्षत्रानुसारं जन्मनक्षत्रानुसारं वा मेलापकं गणनीयम् । यतो हि व्यत्ययोऽशुभप्रदः ।

नित्यपूजाविधिः

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करनी चाहिए। अक्षत लेकर- ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवता इहागच्छत इह तिष्ठत इस मन्त्र से आवाहन कर एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः इस मन्त्र से जल दें। इसके बाद इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः इस मन्त्र से चन्दन तथा इसी तरह अन्य वस्तु भी समर्पित करें। रात्रि में सूर्यादि के स्थान पर गणपत्यादि पढें। इसी तरह ॐ भूर्भुवः स्वर्विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर ॐ भूर्भुवः स्वर्विष्णवे नमः से पूजा करें (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन विसर्जन न करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें। इसके बाद ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ इस मन्त्र से पूर्ववत् पूजा करें। ततः ॐ हराय नमः इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नमः इस मन्त्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव इस मन्त्र से अक्षत लगाकर पात्र में शिव को सामने रखें उसके बाद निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करें :-

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्। तत-ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर एतानि पाद्यादीनि ॐ नमः शिवाय नमः। ततः इदमनुलेपनम्, इदमक्षतम्, एतानि पुष्पाणि, एतानि बिल्वपत्राणि, एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयथाभागनानाविधनैवेद्यानि ॐ पशुपतये नमः इस मन्त्र से क्रमशः चन्दनाक्षतपुष्पबिल्वपत्रगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्य आदि दें। इसके बाद फूल अक्षत चन्दन से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर और अन्त में महादेव के ऊपर निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमशः अष्टमूर्ति की पूजा करें :-

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः १। ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः २। ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः ३। ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः ४। ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः ५। ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः ६। ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः ७। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः ८। ॐ महादेवाय नमः। अन्त में जल पुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा एक बार में ही भूमि पर करें। उसके बाद पूजा क्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थ: क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ महादेव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ विष्वक्सेनाय नमः मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नमः इससे महादेव पर से निर्माल्यं हटावें।

निवेदनम्

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्य वै । योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्त्तितः ॥
गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम् । विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन ॥
मिथिला नाम नगरी तत्रास्ते लोकविश्रुता ॥ (बृहद्विष्णुपुराण, मिथिलामाहात्म्य, अ १४, श्लो. ४२–४४)

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्मती यत्र पुण्या, यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम् ।
मीमांसान्यायवेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या, भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती साऽस्ति मे तीरभुक्तिः ॥
(श्रीशंकरमिश्र (१४४० ई०–१५३० ई०) कृत, द्रष्टव्य विद्याकरसहस्रक, म.म. उमेशमिश्रसम्पादित, १९४२ ई. प्रयागविश्वविद्यालयप्रकाशित)

गंगा बहथि जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकीधारा । पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा ॥
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसारा । मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ॥ (कवीश्वर चन्दा झा)

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्य शालग्रामी या नारायणी) तक, पूरब से पश्चिम तक २४ योजन (९६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन तक (दक्षिण से उत्तर तक) १६ योजन (६४ कोश) चौड़ा तीरभुक्ति अथवा मिथिला क्षेत्र कहा गया है। इस आधार पर वर्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुंगेर तक तथा पश्चिम से पूरब तक क्रमशः चम्पारण्य–वैशाली से पूर्णियाँ–भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिला क्षेत्र है। १८१५–१७ ई० में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार–विचार एवं सभ्यता–संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है।

वेद, उपनिषद्, रामायाण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में तीरभुक्ति (तिरहुत) क्षेत्र का महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र विद्या, उपासना एवं आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रहा है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विमल, गार्गी, मैत्रेयी, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन–भारती, अयाची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास–विद्योत्तमा, श्रीधर, रामदत्त, वीरेश्वर, विद्यापति, महात्मा बुद्ध, महावीर, हलधर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन, भक्तशिरोमणि बाबासाहेब राम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ परमहंस, नव्यन्यायप्रवर्तक गंगेशोपाध्याय, म.म. गोकुलनाथ, महार्घ्य मधुसूदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, दैवज्ञरत्न मेनालाल चौधरी, डॉ. म. म. सर गंगानाथ झा, सर्वतंत्रस्वतंत्र बच्चा झा, म.म. जयदेवमिश्र, म.म.परमेश्वर झा, म.म. बालकृष्ण मिश्र, आचार्य जानकी वल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, वैद्यनाथमिश्र यात्री–नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके हैं जिनके कार्यकलापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है। सिमरियाधाम में क्षीरसागरमन्थन से अमृतप्राप्ति (स्कन्दपुराणोक्तामृतीकरण, श्लो० ११–४२, १२३–१२८, वा०रा०, बालकाण्ड सर्ग ४५, यामलसारोक्तमिथिलाखण्ड, पटल ४ श्लो २–३,) वैकुण्ठांशनिर्मित मिथिला (तत्रैव पटल ३, श्लो १५–१६) एवं मिथिलायात्रा महापुण्यप्रद तथा वास से मोक्ष (बृहद्विष्णुपुराण–मिथिलामाहात्म्य अ १३ श्लो १७, अ१६ श्लो १३८) सुप्रसिद्ध है। सीतामढ़ी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ सम्पन्नयज्ञ के उपरान्त सीरध्वजजनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहावसर पर पुण्यारण्य (पुनौरा) में भूगर्भ से आदिशक्ति–जगज्जननी जानकी का प्रादुर्भाव, (यामलसार, मिथिलाखण्ड, पटल १ श्लो ३६, वा.रा. बा.का. सर्ग ६६ श्लो १३–१४) याज्ञवल्क्य का ब्रह्मविद्योपदेश (श्रीमद्भागवत स्क १२ अ ६ श्लो. ६१–७३ एवं बृहदारण्यकोपनिषद्) बलराम एवं श्रीकृष्ण की मिथिलायात्रा (हरिवंशपर्व, अ ३९ श्लो. २३, २८, श्रीमद्भागवत स्क. १० अ. ८६, विष्णुपुराण ३, ५) कर्म की उत्कृष्टता निरूपणावसर पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा–कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः, (श्रीमद्भगवद्गीता, अ ३, श्लो. २०) जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से शुकदेव जी द्वारा विदेहाधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवत स्क १, अ १८–१९) गार्हस्थ्यधर्मोपदेश एवं आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वविदित ही है। अतः कहा गया है–"नमस्ते मिथिले पुण्ये सीतारामपदाङ्किते"।

हिमालय के सान्निध्य एवं गंगादि विविध नदियों के प्रवाह होने के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि उर्वराशक्ति सम्पन्न है। अतएव सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोपयोगी कन्द, मूल, वनस्पति, लता, गुल्म, फूल, फल, औषधि तथा शरद, हेमन्त एवं ग्रीष्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए मशहूर है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फरपुर की शाही लीची, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का धान, भागलपुर के कतरनी धान का चूड़ा, दरभंगा का मालदह आम एवं सकल मिथिलांचल का पान, माँछ तथा मखान प्रसिद्ध है।

यहाँ के लोग शालीनता, कर्मठता, सौम्यस्वरूप, आचार–विचार, मेधाविता एवं उच्चविचार के लिये प्रसिद्ध हैं; मनोरंजन–हास्य–गीत–संगीत–नृत्य क्षेत्रों में रामलीला, भजन–कीर्तन, लोरिक, दीनाभद्री, विहुला, राजा–सहलेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जटजटिन आदि सुप्रसिद्ध है।

यह संपूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठ के नाम से विख्यात है। आदि शक्ति सती के योगाग्निदग्ध शरीर के विभिन्नावयवक्रम से जब इस धराधाम पर ५१ सिद्धपीठ बन गये तो जहाँ उनका साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के संबंध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है? जहाँ सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, हरिहरनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर, सिद्धेश्वर, कुशेश्वर, त्रिपुरसुन्दरी, चण्डी, कात्यायनी, छिन्नमस्तिका, रमेश्वरीश्यामा, काली, कंकाली, दुर्गा, उग्रतारा, वृद्धेश्वर (बूढ़ानाथ), जयमंगला, बगला, भुवनेश्वरी, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, हलेश्वर, विदेश्वर, राजराजेश्वरी, अहल्या–गौतम स्थान, गिरिजास्थान, जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिव–शक्तिक्षेत्र सतत् प्रेरणास्रोत के रूप में इस क्षेत्र में विद्यमान है।

यह विश्व में एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक संबंध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिए पञ्जीप्रबन्ध की व्यवस्था है। यहाँ (मधुबनी) की चित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गांधी की एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाश नारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्वपूर्ण अवदान अति प्राचीन काल से ही रहा है। अस्तु।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में अन्य विद्याओं के साथ–साथ ज्योतिष के क्षेत्र में भी तीरभुक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ अनेक ग्रन्थकार, टीकाकार एवं संपादक हुए हैं जिनकी कृति ज्योतिष जगत में सदैव शिरोमणि की तरह समादृत है। इनमें सिद्धान्तशेखरकार श्रीपति एवं तट्टीकाकार बबुआजी (श्रीकृष्ण) मिश्र, कृत्यचिन्तामणिकार चण्डेश्वर, अद्भुतदर्पणकार महामहोपाध्याय माधव, सिद्धान्तसेतु रचयिता एवं सिद्धान्त शिरोमणि प्रभा टीकाकार मुरलीधर ठाकुर, सिद्धान्ततत्वविवेक टीकाकार गंगाधर मिश्र, गोलप्रकाशकार नीलाम्बर, भावकुतूहलादिग्रन्थकार जीवनाथदैवज्ञ, व्यवहाररत्नकार भानुनाथ, चापीयत्रिकोणमिति–गोलीय रेखागणितटीकाकार–चन्द्रशेखर झा, चापीयत्रिकोणमिति–टीकाकार महावीर पाण्डेय, ज्योतिषरत्नाकरकार देवकीनन्दन सिंह मोख्तार, सरलत्रिकोणमितिकार–आर्यभटीयटीकाकार बलदेव मिश्र, मकरन्दोपपत्तिकार गोकुलनाथ, शताधिकग्रन्थप्रणेता म.म. मधुसूदन ओझा, बृहज्जातक–सूर्यसिद्धान्तादिटीकाकार सीताराम झा, बृहत्संहितादिग्रन्थटीकाकार अच्युतानन्द झा, जातककोडकार–कृष्णदत्त झा, सिद्धान्त–सुधाकर परमानन्द, बीजगणितादिटीकाकार देवचन्द्र झा, ग्रहणमालाकार म.म. हेमाङ्गद ठाकुर, रत्नशतककार जीवेश्वरदैवज्ञ, टिप्पणीविवरणकार बुद्धिनाथ झा, ज्योतिषचन्द्रिकाग्रन्थप्रणेता रेवतीरमणझा, सूर्यसिद्धान्तजातकपारिजातादिटीकाकार कपिलेश्वर चौधरी एवं सिद्धान्ततत्वविवेकादिग्रन्थ संपादक म.म. मुरलीधर झा आदि प्रमुख हैं। वर्तमान समय में भी उच्चकोटि के ग्रन्थकार, टीकाकार, संपादक, अध्यापक एवं चिन्तक ज्योतिर्विद् यहाँ है।

सभी प्रकार के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक कार्यो के लिए शुभ मुहूर्त का ज्ञान उपेक्षित होता है। शुभमुहूर्त की जानकारी ज्योतिषशास्त्र की गणनानुसार निर्मित पञ्चाङ्ग से होती है। यहाँ के प्रसिद्ध पञ्चाङ्गकारों में गोवर्धन–टुमनी–बालकृष्ण–रूपनारायण–लोकनाथ–कन्हैर–महीधर–उमानाथ–उमाकान्त–झारिखण्डी–महेन्द्रनारायण–विद्यानाथ–जगदीश–अम्बिकानाथ–जगन्नाथ–मुनीन्द्र–जयनारायण–हरिनन्दन–वासुदेव–लक्ष्मीनारायण–लषणलाल–अभिराम–रमानन्द–पुलकित–यशस्पति–कपिलेश्वर–परमानन्दन–बलदेव–व्रजकिशोर–अयोध्यानाथ–लक्ष्मीकान्त–विलट आदि ज्योतिर्विदों के नाम प्रमुख है।

मिथिला की उक्त मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से महाराजाधिराज–सर–कामेश्वरसिंह ने १९६१ ई० में उत्तम पुस्तकालय से सुसज्जित अपना आवासभवन "लक्ष्मीश्वर–विलास–प्रासाद" दान देकर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसका उद्देश्य संस्कृत (पाली–प्राकृत सहित) विद्या का अध्ययन–अध्यापन एवं प्रचार–प्रसार है। इसी परिप्रेक्ष्य में पण्डित सभा के निर्णयानुसार १९७८–७९ ई० से **"विश्वविद्यालय पञ्चाङ्ग"** का निरन्तर प्रकाशन हो रहा है जिसका आधार मकरन्दसारिणी है। मकरन्दाचार्य ने समूलमकरन्दसारिणी या मकरन्दसारिणी नामक एक ग्रन्थ लगभग ५०० वर्ष पहले लिखा है। इन्होंने यह ग्रन्थ काशी में बनाया जिसके प्रथम श्लोक में यह स्पष्ट है –

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन सम्यग् विश्वोपकाराय गुरूपदेशात् ।
तिथ्यादिपत्रं वितनोति काश्या-मानन्दकन्दो मकरन्दनामा ।। इति ।।

यद्यपि स्थानादि का उल्लेख इन्होंनें स्वयं नहीं किया है । तथापित परंपरया लोग इन्हें तीरभुक्ति परंपरा (**मकरन्दा, दरभंगा**) के मानते हैं । इनका जन्म शकाब्द १४०० माना गया है । तत्पश्चात् उनके ग्रन्थ पर दिवाकर दैवज्ञ ने शकाब्द १५२८ में मकरन्द विवरण, विश्वनाथ ने श.काब्द १५४० में उदाहरण तथा शकाब्द १६८८ में गोकुलनाथ ने उपपत्ति लिखी है । अन्त में शकाब्द १८३१ में नारायण शर्मा (मिथिलावयव-नेपालराज्यान्तर्गत-रौतहटजिलान्तः पाति-लक्ष्मीपुरग्रामवासी) ने सारिणी के साथ-साथ फलादेश आदि विषय युक्त सरल एवं मनोरम मकरन्दप्रकाशनामक ग्रन्थ बनाया, जो उनके निम्नलिखित कथन से स्पष्ट है -

शशिशिखीगजभूमिशके समे सितदलेऽलकार्तिक-मासके ।
शशिसुतस्य दिने हरिवासरे विरतिरस्य बभूव तिथौ हरेः ।। (ग्रन्थकर्तृपरिचय, श्लो. ६)

इससे स्पष्ट होता है कि मकरन्दसारिणी ग्रन्थ को ही विद्वानों ने यथासमय गणित, उदाहरण, उपपत्ति एवं फलादेश आदि द्वारा परिष्कृत किया गया है । इनमें दिवाकर ने दो महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं - (१) कुजादि ग्रहों में बीज संस्कार (२) फलचतुष्टय के स्थान पर फलत्रय संस्कार । इनमें परवर्ती विद्वानों ने बीजसंस्कार को अंगीकार नहीं किया किन्तु फलत्रय संस्कार को माना। श्री लषण लाल झा के अनुसार विष्णुदैवज्ञ आदि आचार्यो ने भी इसी को स्वीकार किया है । (मकरन्द प्रकाश, आमुख, पृ४) । आजकल इसी आधार पर पञ्चाङ्ग बनाये जाते है । बीज संस्कार एवं ३ या ४ फलों के संस्कारादि के विषय में चिरकाल से विद्वानों के बीच मतैक्य का अभाव रहा है । इसी क्रम में गुरु-शुक्र की शीघ्रकेन्द्रांश के स्थान पर क्रमशः ११-६ उदयास्त कालांश स्वीकार किया गया है तथा गुरु-शुक्र के बाल्य वार्द्धक्य तीन-तीन दिन स्वीकार किये गये हैं ।

देशान्तर- अतिप्राचीनकाल से ही मिथिला देशान्तर तिथ्यादि में १।३५ दण्डादि धन का प्रचलन है, मकरन्दाचार्य के पहले से भी । मकरन्दाचार्य ने इसे लिपिबद्ध किया । नारायणदैवज्ञ का इस अंश में अपना कोई नया योगदान नहीं अपितु पूर्वतः व्यवहारविहित उक्त देशान्तर को यथावत् इन्होनें भी स्वीकार किया । इस संबंध में मैं नारायण दैवज्ञ से १४ वर्ष पूर्व १८१६-१७ शकाब्द, १८९४-९५ ई०, सन् १३०२ साल, विक्रमसंवत् १९५१-५२ के पञ्चाङ्ग के वैशाखकृष्णद्वितीया २६ । १७ दण्डादि, स्वाती १२।२६ दण्डादि, दि. ११।४।१८९५ ई० वृहस्पति दिन के तिथ्यादिमान का साधन मकरन्द की उक्तविधि से किया तो २६।१६ द्वितीया तथा १२।२६ स्वाती का मान आया । (एक पल का अंतर सारिणी की भिन्नता से तिथिमें संभव है) । इससे सिद्ध हुआ कि १।३५ देशान्तर के संस्थापक नारायण दैवज्ञ नहीं, अपितु उनके पूर्ववर्ती मकरन्दाचार्य अथवा उनसे भी पूर्ववर्ती आंचार्य माने जा सकते है ।

विभिन्न ग्रन्थों, पञ्चाङ्गों एवं मानचित्रों के देखने से स्पष्ट होता है कि देशान्तर (रेखांश) के मान में ५ से १० कला का अंतर प्राप्त होता है । यह अन्तर व्यवहार-योग्य है । तदनुसार मिथिला का उक्त देशान्तर जगज्जननी-जानकी की जन्मभूमि अर्थात् सीतामढी का है तथा इसका मान ८५।३० रेखांश पूरब है । पूर्ववर्ती विद्वानों ने काफी मनन-चिन्तन के पश्चात् यह मान/स्थान निर्धारित किया होगा । इसकी धार्मिक महत्ता, प्राचीनता एवं मान्यता पूर्वोक्त विवेचन से स्पष्ट है । अतः इसे यथावत् सवीकार करना सर्वथा शास्त्रसम्मत है ।

अक्षांश- देशान्तर की भाँति अक्षांश में भी ५-१० कला का अन्तर ग्रन्थभेद अथवा पञ्चाङ्गभेद से पाया जाता है किन्तु बहुसम्मत पक्षावलम्बन के पश्चात् यह कह सकते है कि २६।३५ अंशादि उत्तर अक्षांश (मिथिला) सीतामढी का है ।

पलभा- देशान्तर एवं अक्षांश की भाँति पूर्वतः मिथिला की षडङ्गुल पलभा भी सीतामढी का सिद्ध होता है । इसी के आधार पर राशियों के मिथिलोदयमान अधोलिखित मान्य है -

अष्टेन्दुपक्षाः शशिबाणपक्षा गुणाब्धरामा गुणवेदरामाः ।
शैलाब्धिरामा वसुरामरामाः क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ।। (जीवेश्वर- १३०० ई०- कृत रत्नशतक, श्लो. १४)

कोई भी पञ्चाङ्ग किसी खास रेखांश, अक्षांश एवं पलभा के आधार पर बनता है । तदनुसार **"विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्ग"** का रेखांश ८५।३० पूरब, अक्षांश २६।३५ उत्तर तथा पलभा ६ अंगुल है । मिथिला के सभी पञ्चाङ्ग इसी रेखांश एवं अक्षांश के आधार पर प्राचीनकाल से बनते आ रहे हैं ।

सूर्योदय- ज्ञातव्य है कि स्थानीय समय प्रत्येक स्थान में भिन्न-भिन्न होते हैं किन्तु प्रामाणिक समय आजकल प्रायः देशस्तर पर एक होता है । इससे सरकारी कार्यों (रेल-डाक परिचालनादि) में सुविधा होती है । किन्तु वास्तविक फलदान शक्ति स्थानीय समय में ही है । अतएव प्रामाणिक समय को स्थानीय समय में बदलकर निर्मित कुण्डली के आधार पर फलादेश किया जाता है । वैसे पञ्चाङ्ग प्रामाणिक समयानुसार भी बन सकता है किन्तु फलदायकता, परंपरा एवं मर्यादा की दृष्टि से स्थानीय समयानुसार पञ्चाङ्ग में तिथ्यादि का उल्लेख उचित है । अन्य स्थानों में शास्त्रविहित रीति से अपेक्षित संस्कार कर उनकी जानकारी प्राप्त की जाती है ।

विश्वविद्यालय पञ्चाङ्ग का सूर्योदय स्थानीय है । मकरन्दाचार्य की अथवा आर्षपरंपरा भी यही है । अतः जैसे प्रामाणिक (स्टैण्डर्ड) समय में देशान्तर-बेलान्तर संस्कार कर उसे स्थानीय समय (जन्मकुण्डली-फलादेश हेतु) बनाया जाता है, उसी तरह इसके विपरीत संस्कार द्वारा स्थानीय समय को भी प्रामाणिक समय में बदला जा सकता है । उदाहरण-प्रतिहारषष्ठी प्रातः कालिक अर्घ के दिन दि. ३०।१०।२०१४ को इस पञ्चाङ्ग में स्थानीय सूर्योदय मान ६।२७ (घण्टा-मिनट) है । इस दिन उक्त नियमानुसार ६।२७-०।१६ (बेलान्तर) = ६।११, ६।११-०।१२ (देशान्तर) = ५।५९ = प्रामाणिक समय होगा जानकी जन्मभूमि-सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, नालन्दा एवं राँची का । उक्त विधि से उक्ततिथि को किशनगंज में ५।४९, कटिहार में ५।५०, पूर्णिया-अररिया में ५।५१, विराटनगर में ५।५२, फारबिसगंज, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा में ५।५३, देवघर, सिन्दरी, भागलपुर में ५।५४, बोकारो, बेगूसराय, खगड़िया, मुंगेर में ५।५५, समस्तीपुर, जमुई, जयनगर, जमशेदपुर, झाझा में ५।५६, दरभंगा, मोकामा, मधुबनी में ५।५७, जनकपुर में ५।५८, हाजीपुर, सोनपुर, पटना, वैशाली, काठमाण्डू में ६।००, वीरगंज, दानापुर में ६।०१, छपरा, मोतिहारी, रक्सौल, आरा, नरकटियागंज में ६।०२, बगहा-बेतिया में ६।०३, बक्सर, सासाराम में ६।१५ भभुआ में ६।०७, काशी में ६।०९, प्रयाग में ६।११, कलकत्ता में ५।४८, दिल्ली में ६।३२, मुम्बई में ६।४९ तथा लखनऊ में ६।१७ बजे प्रामाणिक समयानुसार सूर्योदय होगा । इसी तरह अन्य दिनों में भी ज्ञातव्य है । उक्त तिथि को बेलान्तर परमाधिक (१६मि. धन) है । १५-१६ अप्रील एवं जून को बेलान्तर शून्य रहने के कारण अन्तर परमाल्प होगा । अतः प्रत्यक्ष प्रतीतित्वात् सूर्योदयादि मान सर्वथा सत्य है ।

भूकैन्द्रिक गणना के आधार पर धर्मकृत्य का संपादन तथा फलादेश उचित है । इस दृष्टि से सूर्यसिद्धान्त के अनुसार निर्मित मकरन्द सारिणी के आधार पर बना हुआ "विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्ग" सर्वथा उपयुक्त है । भूकैन्द्रिक गणना (आर्षमत) में अदृष्टफलदान की शक्ति है । पृष्ठाभिप्रायिक गणना ग्रहण-शृङ्गोन्नति दर्शन के लिए मान्य है । अतएव पञ्चाङ्ग में अदृश्य और दृश्य दोनों ही गणना अपेक्षित है । अतः ग्रहणादि के दर्शन के लिये दृश्यगणित तथा तिथ्यादिसाधन में अदृश्यगणना मान्य है । आचार्य गिरिजा प्रसाद द्विवेदी जी ने भी यह बात स्पष्टतया सिद्धान्तशिरोमणि की टीका में लिखी है । (स्पष्टाधिकार, श्लोक ७१-७५ की टिप्पणी) । सिद्धान्ततत्वविवेक में कमलाकर ने भी लिखा है -

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्कायुक्तितः कुरु । गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा ।। (म. अ. श्लो. ३२६)

पृथ्वी के संकोच एवं प्रसार, समुद्रजल स्तर में वृद्धि, हिमजल की न्यूनाधिकता, ग्रहों के बिम्ब-स्थानोदय में भेद, ग्रहों की ऊर्ध्वाधर, याम्योत्तर एवं पूर्वापर गति की प्रतिक्षण विलक्षणता एवं भूकम्पादि विविध प्राकृतिक ज्ञाताज्ञात कारणों से ज्योतिष शस्त्रीय गणना में भी आचार्य एवं कालभेद से अन्तर की संभावना रहती है । तात्कालिक सत्यता की जानकारी वेधादि द्वारा हो जाने पर भी दीर्घकालीन अथवा भविष्य की सत्यता का ज्ञान केवल अतीन्द्रियज्ञानियों को ही संभव हो पाता है । इन सभी परिस्थितियों को सही रूप में जानबुझकर ही हमारे पूर्वजों ने आर्षमूलक सिद्धान्त की स्थापना की । यह सिद्धान्त स्थायी है, क्योंकि यह दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषियों, तपस्वीगणों एवं ज्ञानियों द्वारा स्थापित है । अतः त्रिकाल सत्य है । मनुष्यकृत सिद्धान्त स्थायी नहीं होते है। ये सतत् परिवर्तित होते रहते है क्योंकि इन्हें दीर्घकालीनज्ञान अथवा अतीन्द्रियज्ञान नहीं होता है । उदाहरणस्वरूप १००-२०० वर्षो से मनुष्य द्वारा ग्रहकोटि में स्वीकृत प्लुटो ग्रह का अभी-अभी लगभग ८ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने ग्रहत्व समाप्त कर दिया है, किन्तु हमारे यहाँ बहुत से ऐसे पञ्चाङ्ग हैं जिनमें इनके समावेश (फलादेश के लिये) कर लिये गये है । कम्प्युटर-निर्मित कुण्डली की भी यही दशा है । यह स्थिति चिन्तनीय है । फलतः आर्षमत में किसी प्रकार का आक्षेप अनुचित है । अतएव यह पञ्चाङ्ग शास्त्रानुमोदित, व्यवहारविहित, परंपरासंपोषक एवं धर्मकृत्योपयोगी है ।

सिमरिया कुंभयोग- पुराणादिग्रन्थों में सागरमन्थन एवं अमृत (घट) प्राप्ति कथा तो मिलती है किन्तु स्थान का उल्लेख नहीं मिलता है । मात्र **वाल्मीकिरामायण** (बालकाण्ड, सर्ग ४५) एवं **"स्वयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग"** ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सागरमन्थन एवं अमृत प्राप्ति मिथिला (सिमरियाधाम-बेगूसरायजिला के दक्षिणपश्चिम भाग) में हुआ था । इस धाम के आसपास अवस्थित मन्दराचलपर्वत, वासुकीनागराज स्थापित वासुकीनाथ शिव, अहल्यास्थान समीप की क्षीरोदकी (खिरोई) नदी, बलिराजगढ़, नेपालके सागरमाथा एवं लगभग २५० कि.मी. उत्तर ठोसेमेगजेन" पर्वतपर अवस्थित नीलकण्ठ शिव इसके प्रमाणस्वरूप अद्यापि विद्यमान हैं । (वराहपुराणांक, गीताप्रेस, पृ. ४३७ एवं मधुस्राविणी मीमांसा पृ. ६२,२८६) । अमृत प्राप्ति के पश्चात् इसे पीने के क्रम में देवासुरसंग्रम प्रारंभ हो गया । इस घट को लेकर इन्द्र-जयन्त-गरुड-सूर्य-चन्द्र-गुरु ने मुख्य रूप से ११ वर्षों तक ११ स्थान (कामाख्या, गंगासागर, जगन्नाथ, रामेश्वर, कुंभकोणम्, द्वारिका, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक) पर रखते हुए इसकी रक्षा की तथा विष्णु के मोहिनी रूप को पंच मानते हुए पुनः १२में वर्ष में अमृतोत्पत्ति स्थल (सिमरिया धाम) में देवताओं ने अमृतपान किया । ये सारे विषय पुराणादि में स्पष्ट हैं। इस तरह सागरमन्थन, अमृतप्राप्ति एवं देवों द्वारा अमृतपान स्थान शाल्मलीवन (सिमरियाधाम) प्रमुख स्थान होने के कारण **कुंभ** के लिये सर्वोत्तम स्थान सिद्ध होते हैं । अतः २०१५ ई. के भादव में **नासिकमें**, २०१६ ई. के वैशाख में **उज्जैन** में तथा २०१७ के कार्तिक में **सिमरियाधाम** में महाकुंभ योग लगेगा ।

अन्त में धर्मानुरागी विद्वज्जनों एवं ज्यौतिषशास्त्र के मूर्धन्य विद्वानों से निवेदन है कि कृपा करके उक्त विषयों के आलोक में अपना बहुमूल्य सम्मति प्रदान कर हमें अनुगृहीत करेंगे । शमिति ।

दरभङ्गा
सौ. दि.-१९।१।१९३६

निवेदक
पं. श्रीरामचन्द्र झा

देशान्तरसारिणी

स्थान		मिनट	स्थान		मिनट
अहल्यास्थान	+	१३।३०	मधुबनी	+	१४।२८
अररिया	+	२०।००	मधेपुरा	+	१८।००
आरा	+	८।४०	मुंगेर	+	१६।००
औरंगाबाद	+	७।३२	मुजफ्फरपुर	+	११।५६
कटिहार	+	२०।४०	मोकामा	+	१३।४०
किशनगंज	+	२२।२०	मोतिहारी	+	९।२०
काठमाण्डु	+	११।८	रक्सौल	+	१०।८
खगड़िया	+	१६।१०	राजगीर	+	११।३६
गुमला	+	८।४०	राँची	+	११।३२
गया	+	१०।००	लखीसराय	+	१६।१५
गोड्डा	+	१८।३०	लोहरदग्गा	+	८।५०
गोपालगंज	+	७।१५	शिवहर	+	१२।००
गिरीडीह	+	१५।२०	सहरसा	+	१७।३०
चायवासा	+	१३।२४	सीतामढी	+	१२।००
चतरा	+	९।३०	समस्तीपुर	+	१४।५५
छपरा	+	९।६	साहेबगंज	+	२०।४५
जमशेदपुर	+	१४।४०	सिवान	+	६।२८
जमालपुर	+	१६।८	सासाराम	+	६।१२
जयनगर	+	१४।३६	सिन्दरी	+	१६।४०
जनकपुर	+	१३।२८	सुपौल	+	१७।४०
जमुई	+	१५।२०	सोनपुर	+	१०।४५
जहानाबाद	+	९।३०	हाजीपुर	+	१०।५५
झरिया	+	१६।१०	हजारीबाग	+	११।३५
झाझा	+	१५।३०	अयोध्या	-	१।४४
डाल्टेनगंज	+	६।४०	अमृतसर	-	३०।२०
दरभंगा	+	१३।४८	आसनसोल	+	१८।४
दानापुर	+	१०।२०	आगरा	-	१७।४०
दुमका	+	१८।२०	पुरी	+	१३।००
देवघर	+	१७।००	इलाहाबाद	-	२।४०
धनबाद	+	१६।००	कलकत्ता	+	२३।२४
धरान	+	१८।३६	कानपुर	-	८।२४
धनकुटा	+	१९।१५	काश्मीर	-	२४।००
नवादा	+	११।५०	कोटा	-	२६।३२
नालन्दा	+	१२।८	गोहाटी	+	३७।४४
पटना	+	१०।४०	गोरखपुर	+	४।००
पूर्णिया	+	२०।०४	जयपुर	-	२६।५२
पोखरा	+	५।५२	दिल्ली	-	२१।००
फारबिसगंज	+	१८।२०	वाराणसी	+	२।८
बाँका	+	१७।१०	मुम्बई	-	३८।२५
बक्सर	+	६।४	बद्रीनाथ	-	१२।२०
बेतिया	+	८।३२	वस्ती	+	१।५२
बगहा	+	७।४५	बलिया	+	६।४०
बेगूसराय	+	१६।००	विलासपुर	-	१।००
बीरगंज	+	१०।००	मथुरा	-	१८।४८
विराटनगर	+	१९।०४	मद्रास	-	१४।००
बोकारो	+	१६।३०	लखनऊ	-	६।४
वैशाली	+	१०।३५	रायपुर	-	३।२०
भागलपुर	+	१७।२८	बेंगलुरु	-	१६।३५
भभुआ	+	४।८	हैदराबाद	-	१६।०४
			उज्जैन	-	२६।४५
			अहमदाबाद	-	३६।३५

बेलान्तरसारिणी

मास दिनांक	जन. मि.	फर. मि.	मार्च मि.	अप्रील मि.	मई मि.	जून मि.	जुला. मि.	अग. मि.	सित. मि.	अक्टू. मि.	नव. मि.	दि. मि.
१	-३	-१४	-१२	-४	+३	+२	-३	-६	+०	+१०	+१६	+११
२	“४	“१४	“१२	“४	“३	“२	“४	“६	“०	“१०	“१६	“११
३	“४	“१४	“१२	“४	“३	“२	“४	“६	“०	“११	“१६	“११
४	“५	“१४	“१२	“३	“३	“२	“४	“६	“१	“११	“१६	“१०
५	“५	“१४	“१२	“३	“३	“२	“४	“६	“१	“११	“१६	“१०
६	“५	“१४	“१२	“३	“३	“२	“४	“६	“१	“१२	“१६	“९
७	“६	“१४	“११	“२	“३	“१	“५	“६	“२	“१२	“१६	“९
८	“६	“१४	“११	“२	“४	“१	“५	“६	“२	“१२	“१६	“९
९	“७	“१४	“११	“२	“४	“१	“५	“६	“२	“१२	“१६	“८
१०	“७	“१४	“११	“२	“४	“१	“५	“५	“३	“१३	“१६	“८
११	“८	“१४	“१०	“१	“४	“१	“५	“५	“३	“१३	“१६	“७
१२	“८	“१४	“१०	“१	“४	“१	“५	“५	“४	“१३	“१६	“७
१३	“८	“१४	“१०	“१	“४	“०	“६	“५	“४	“१३	“१६	“६
१४	“९	“१४	“१०	“१	“४	“०	“६	“५	“४	“१४	“१६	“६
१५	“९	“१४	“९	+०	“४	“०	“६	“५	“५	“१४	“१६	“५
१६	“१०	“१४	“९	“०	“४	“०	“६	“४	“५	“१४	“१६	“५
१७	“१०	“१४	“९	“०	“४	-१	“६	“४	“५	“१४	“१५	“४
१८	“१०	“१४	“८	“०	“४	“१	“६	“४	“५	“१५	“१५	“४
१९	“१०	“१४	“८	“१	“४	“१	“६	“४	“६	“१५	“१५	“३
२०	“११	“१४	“८	“१	“४	“१	“६	“४	“६	“१५	“१५	“३
२१	“११	“१४	“८	“१	“४	“१	“६	“३	“७	“१५	“१४	“२
२२	“११	“१४	“७	“१	“४	“२	“६	“३	“७	“१५	“१४	“२
२३	“१२	“१४	“७	“१	“३	“२	“६	“३	“७	“१५	“१४	“१
२४	“१२	“१३	“७	“२	“३	“२	“६	“३	“८	“१६	“१४	“१
२५	“१२	“१३	“६	“२	“३	“२	“६	“२	“८	“१६	“१३	+०
२६	“१२	“१३	“६	“२	“३	“२	“६	“२	“८	“१६	“१३	-०
२७	“१३	“१३	“६	“२	“३	“३	“६	“२	“९	“१६	“१३	“१
२८	“१३	“१३	“५	“२	“३	“३	“६	“२	“९	“१६	“१२	“१
२९	“१३	-१२	“५	“३	“३	“३	“६	“१	“९	“१६	“१२	“२
३०	“१३	X	“५	+३	“३	-३	“६	“१	+१०	“१६	+१२	“२
३१	-१३	X	-५	X	+३	X	-६	-१	X	+१६	X	-३

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कारप्रकार-सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही है। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ११ या १२ बजते है। परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते है। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे-१ जनवरी को **देवघर** के इष्टकाल में ३ मिनट वेलान्तर ऋण एवं १७ मिनट देशान्तर धन कर देंगे तो **देवघर** का स्थानीय समय हो जायेगा।

शरीरान्तकालिकवैतरणीदानम्

हरिं स्मृत्वा कुशत्रयपुष्पाक्षतजलान्यादाय-ओं कृष्णगव्यै नमः ३। कुशोपरि ओं ब्राह्मणाय नमः ३। तत ओं उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्। दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता ।। ओं यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तुर्तं ददाम्येतां कृष्णां वैतरणीं च गाम् ।। इति पठेत्। ततः कुशत्रयतिलजला-न्यादाय-ओमद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः यमद्वारस्थित-वैतरणीनदीसुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततो ग्रहीता स्वस्तीति वदेत्। ततः कुशत्रयति-लजलान्यादाय-ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदान - प्रतिष्ठार्थमेतावद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः स्वस्तीत्युक्त्वा ग्रहीता दक्षिणां स्वीकुर्यात्। शूद्र ओमित्यस्य स्थाने नमः, इति पठेत्। गोरभावे एतावद् द्रव्यमूल्यककृष्णगव्यै नमः इति पठेत्। शेषं यथावत्। मातृपक्षे अमुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याः इति पठेत्।

दाहसंस्कारविधिः

स्नातः शुचिवस्त्रादिधरः पूर्वाभिमुख उपविष्टः कुशहस्तः कर्त्ता नूतनमृद्भाण्डे जलं कृत्वा शवञ्च दक्षिणशिरसं कृत्वा ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गंगां च यमुनां च सरिद्वराम् ।। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा ।। धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा। इत्यनेन तीर्थानि ध्यायन् जले आवाह्य तेन जलेन शवं संस्नाप्य नूतनवस्त्रयज्ञोपवीतपुष्पमाल्यचन्दना-दिभिरलंकृत्य दारुविरचितचितायां कुशोपरि पुरुषमधोमुखं स्त्रियञ्चोत्तानमुखीमुत्तरशिरसं शाययेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखो वामपाणिनोल्मुकं गृहीत्वा ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु। इति मन्त्रद्वयं पठित्वा शवं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य शिरोदेशे ज्वलदुल्मुकं दद्यात्। ततस्तृणकाष्ठघृतादिकं चितायां निःक्षिप्य कपोतावशेषं दहेत्। ततः प्रादेशमात्रक-सप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणसप्तकं विधाय कुठारेण उल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं विधाय 'ॐ' क्रव्यादय: नमस्तुभ्यम्, इति पठित्वा एकैकां काष्ठिकां चितायां क्षिपेत्। ततः ओं अहरहर्न्यमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवस्वतो न तृप्यति सुराररिव दुर्मतिः ।। इति यमगाथां गायन्तो बालपुरस्सराः शवानुगमकर्त्तारः पादेन पादस्पर्शमकुर्वाणाः जलाशयं गत्वा स्नात्वा च ओमद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यनेन तिलांजलिं दद्युः। स्त्रियाःपक्षे ओमद्यामुकगोत्रे अमुकप्रेते इति पठेयुः। ततः आर्द्रवस्त्रमेव धारयन्तः कर्त्तुः प्राङ्गणद्वारं गत्वा तत्र ओं लौहवद् दृढकायोस्तु इति लौहं, ओमश्मेव स्थिरो भूयास्म् इत्यश्मानं, ओमग्निर्नः शर्म यच्छतु इत्यग्निं स्पृशेयुस्त्र प्रत्येकं जलस्पर्शः। ततस्तिक्तं प्राश्य समाचारात् स्वगृहं गच्छेयुरिति।

अशौचव्यवस्था

ब्राह्मणों को जन्म से षण्मासाभ्यन्तर शरीरान्त होने पर सद्यः शौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपन। सात महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर एकाहोरात्र अशौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। तीसरे वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त तीन अहोरात्र अशौच, अग्निसंस्कार पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन। उसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सबों को दशाहाशौच एवं श्राद्ध। क्षत्रियों को षण्मासाभ्यान्तर ब्राह्मणवत्। सात मास से लेकर दो वर्ष तक दो रात्रि अशौच एवं भूमिनिक्षेपणमात्र। तीन वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त षड्होरात्र अशौच, अग्निसंस्कार, पिण्डोदकक्रिया। सातमे वर्ष से ऊपर अग्निसंस्कार, द्वादशाहाशौच एवं श्राद्ध। वैश्यों को जन्म से षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्। उसके बाद दो वर्षो तक भूमि निक्षेपण एवं तीन दिन अशौच, उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त नौ दिन तक अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया। उसके बाद सम्पूर्ण पञ्चदशाहाशौच, अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध। शूद्रों को षण्मासपुर्यन्त ब्राह्मणवत्, उसके बाद दो वर्षो तक पाँच दिन अशौच एवं भूमिनिक्षेपण। उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त अविवाहित मृत्यु से ५ दिन तथा विवाहित मृत्यु से द्वादशाहाशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया उसके बाद सम्पूर्ण तीस दिन अशौच, अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध।

कन्यामरणाशौचः

सभी वर्णो को जन्म से दो वर्ष तक सद्यः शौच। उसके बाद विवाहावधि त्र्यहाशौच। विवाह के बाद पितृगृह अथवा स्वामी के घर में कन्या मृत्यु से माता-पिता को तीन अहोरात्र अशौच एवं स्वामी के घर में विहित स्वस्ववर्णानुसार अशौच एवं श्राद्ध।

अशौचसङ्करविचारः

ब्राह्मणों को सम्पूर्णाशौच के बीच में ५ दिन तक, क्षत्रियों को ६ दिन तक, वैश्यों को ७ दिन तक एवं शूद्रों को १५ दिन तक यदि सजातीय द्वितीयसम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच की शुद्धि के साथ-साथ दोनों की शुद्धि तथा साथ साथ श्राद्ध होता है। यदि सम्पूर्णाशौच के मध्य ब्राह्मणादि को क्रमशः ६, ७, ८, १६ दिनों से लेकर क्रमशः ९, ११, १४, २९ वें अहोरात्र के बीच में सजातीय द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीयाशौचान्त होने पर दोनों की शुद्धि तथा श्राद्ध साथ-साथ होता है।

यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड रात्रि के अन्दर सजातीयाशौचान्तर प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के तीसरे दिन दोनों का क्षौर तथा चौथे दिन श्राद्ध होता है। यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड के बाद द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के चौथे दिन दोनों का क्षौर तथा पाँचवें दिन श्राद्ध होता है।

आद्यश्राद्धसंकल्पानन्तर द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त हो तो आद्य श्राद्ध हो जाता है परञ्च सपण्डिन, द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन होता है। सपिण्डनदिन, संकल्प से पूर्व द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त होने पर द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन सपिण्डन होना चाहिए। सम्पूर्णाशौच के मध्य त्रिरात्राशौच तथा मरणाशौच के मध्य जननाशौच की मान्यता नहीं होती है। त्रिरात्राशौच के मध्य द्वितीय त्रिरात्राशौच हो जाय तो द्वितीय त्रिरात्राशौचानुसार दोनों की शुद्धि होती है।